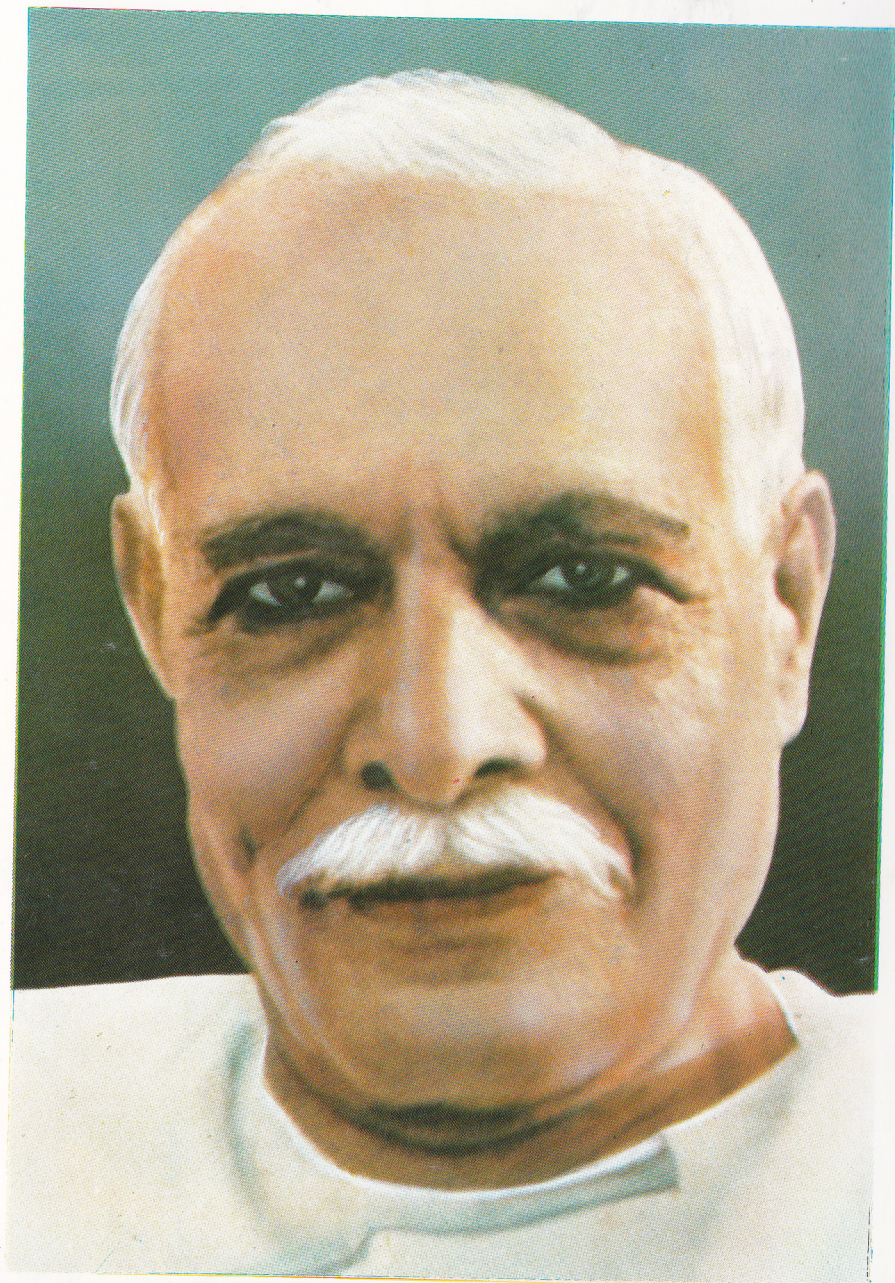


ऐसे थे ब्रह्मा बाबा



निश्चयबुद्धि और बेफ़िक्र बादशाह

१. जैसे ब्रह्मा बाप सदा निश्चयबुद्धि होने के कारण बेफ़िक्र बादशाह की स्थिति में रहे, किसी भी बात का फ़िक्र नहीं रहा। फ़िक्र होता है अप्राप्ति वा कमी के कारण। जहाँ सर्व प्राप्तियाँ हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान् है वहाँ फ़िक्र की कोई बात नहीं। तो ऐसे ब्रह्मा बाप समान निश्चयबुद्धि बन बेफ़िक्र बादशाह बनना है।

२. निश्चयबुद्धि अर्थात् किसी भी बात में क्वेश्चन-मार्क का टेढ़ा रास्ता लेने के बजाय कल्याण की बिन्दी लगाना और सदा निश्चिन्त रहना। 'एक बल एक भरोसा' — इसी आधार से नम्बरवन विजयी बनना है। तब बेफ़िक्र रह सकेंगे।

३. हर जवाबदारी सम्भालते हुए निश्चय के आधार पर सदा ऐसे समझें कि यह बाप की ज़िम्मेवारी है, मेरी नहीं, मैं निमित्त हूँ। इससे बुद्धि पर कोई भी प्रकार का बोझ नहीं रहेगा और सदा अचल, अडोल, हर्षित रहेंगे।

४. किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहना है। सदा निश्चय रहे कि बाप हमारा रक्षक है, कल्याणकारी है। किसी भी बात में हमारा अकल्याण हो नहीं सकता। ऐसे निश्चयबुद्धि बनने से कभी भी व्यर्थ संकल्प व संशय नहीं आयेगा।

५. कल्याणकारी बाप में, स्वयं में और ड्रामा में पूरा-पूरा निश्चय रखना है। किसी भी बात में संकल्प मात्र भी यह संशय न आये कि यह होगा या नहीं होगा। निश्चयबुद्धि को सदा यही उमंग रहता कि हमारी विजय हुई पड़ी है। सदा यही नशा रखो कि 'विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। तो बेफ़िक्र बादशाह रहेंगे।

६. निश्चय का अर्थ सिर्फ यह नहीं कि मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। लेकिन मैं कौनसी आत्मा हूँ — यह स्वमान समय पर अनुभव हो। सदा इसी स्वमान में रहो कि मैं विजयी आत्मा, 'पास विद् ऑनर' होने वाली आत्मा हूँ। हर प्रकार के पेपर में पास होकर दिखाओ। मन-पसन्द के साथ-साथ लोक-पसन्द और बाप-पसन्द भी बनना — यही है निश्चयबुद्धि विजयी बनना।

७. निश्चय के आधार पर जीवन के हर कर्म में निमित्त और निर्माण बन सदा निर्माण का कार्य करो। सदा यह याद रहे कि निमित्त समझ निर्माण बनना ही स्वमान है, ऐसा समझने से स्वतः ही सर्व द्वारा मान मिलता है।

८. निश्चय के आधार पर सदा पहले आप, मैं नहीं। दूसरे को आगे रखना अर्थात् सदा स्वमान में रह सम्मान देना और सर्व द्वारा सम्मान लेना। इससे स्वयं भी सन्तुष्ट रहेंगे और दूसरे भी सन्तुष्ट रहेंगे। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना ही प्रसन्नता वा सफलता का स्वरूप है।

९. सदा त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनकर तीनों कालों को देखते और जानते हुए हर कर्म करना है। निश्चय हो कि हर कर्म की सिद्धि अर्थात् सफलता हुई पड़ी है। त्रिनेत्री-त्रिकालदर्शी बनकर कर्म करने से कभी धोखा नहीं खा सकते।

१०. निश्चय की परख तूफान अथवा विघ्नों के समय होती है। तो निश्चयबुद्धि बन विघ्नों को पार करो। कभी घबराना वा मूँझना नहीं है। चाहे लौकिक सम्बन्धियों द्वारा विघ्न आयें, चाहे समाज द्वारा आयें लेकिन हिलना नहीं है। निश्चय हो कि जिसका साथी स्वयं भगवान् है उसे कोई हिला नहीं सकता। बेफ़िक्र बादशाह बन अचल-अडोल स्थिति में रहो।

११. निश्चय के फाउन्डेशन के ४ स्तम्भ हैं। बाप में निश्चय के साथ-साथ अपने श्रेष्ठ स्वमान को, ब्राह्मण परिवार को और इस पुरुषोत्तम युग के समय के महत्व को यथार्थ जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना ही सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनना है। निश्चयबुद्धि अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर बात सुनो और बोलो। नॉलेजफुल होकर हर कर्म के परिणाम को जानकर कर्म करो तो निश्चय और विजय की समानता बेफ़िक्र बादशाह बना देगी।

१२. हम मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं—इस निश्चय से स्वयं को मालिक समझकर कर्मेन्द्रियों को अपने ऑर्डर से चलाना है, कभी उनके वश नहीं होना है। इस निश्चय से सदा स्मृति स्वरूप बनना है। स्मृति से ही समर्थी आती है। ऐसे स्मृति से समर्थी स्वरूप तथा स्वराज्य अधिकारी बनना है।

१३. कैसा भी वायुमण्डल हो उसे देखकर या किसी के कहने से कभी अपने में, अपने कर्म प्रति में दुविधा न हो कि पता नहीं, मैं राइट हूँ वा रांग हूँ?

मन में सदा निश्चय रहे कि मैं सफलतामूर्त हूँ । सरकमस्टांसेस आग के समान होते भी सदा खुशी वा मौज का अनुभव हो । ऐसे निश्चय के आधार पर बेफ़िक्र बादशाह बनो ।

१४. सदा यह निश्चय हो कि स्वयं भगवान् बाप मेरे साथ है, इसलिए बाप के आगे अक्षौहिणी सेना भी कुछ नहीं है । जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है । कभी ज़रा भी बे-सहारे वा अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव न हो । कभी उदासी वा अल्पकाल के हृद के वैराग्य की लहर न आये । हर कार्य करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति रहे ।

१५. मैं कर्मयोगी हूँ । करावनहार बाप है । मैं निमित्त करनहार हूँ — इस निश्चय से डबल-लाइट अर्थात् लाइट के ताजधारी बन बेफ़िक्र बादशाह बनो । जब ऐसे बेफ़िक्र बादशाह अर्थात् राजा बनेंगे तब मायाजीत, कर्मन्द्रिय जीत, प्रकृतिजीत बन सकेंगे ।

सदा एकान्तप्रिय के साथ-साथ मिलनसार

१. ब्रह्मा बाबा सदा एकान्त में ज्ञान-मनन वा एक बाप की याद में मग्न रहने के कारण रूहानियत की स्थिति में सम्पन्न रहे, जिस कारण सदा रूहानियत की आकर्षण रही । बाबा के सामने जाते ही अनुभव होता था कि बाबा एक के अन्त में खोये हुए हैं । फिर भी बच्चों को सर्व सम्बन्धों से मिलने का अनुभव भी कराते रहे । ऐसे ही हमें भी प्रतिदिन एकान्त में रमण अवश्य करना है । लेकिन साथ ही साथ मिलनसार भी बनना है ।

२. जितना बाह्यमुखता में आना सहज है उतना ही अन्तर्मुखी वा एकान्तवासी बनने का अभ्यास करना है । इसके लिए लौकिक प्रवृत्ति तथा अलौकिक सेवा की प्रवृत्ति में रहते भी बीच-बीच में एकान्त अर्थात् एक के अन्त में जाकर एकान्तवासी बनने का अभ्यास करना है । एकान्तवासी अर्थात् एक बाप के किसी भी शक्तिशाली गुण वा कर्तव्य के अन्त में मग्न रहना अथवा एक शक्तिशाली स्थिति में स्थित होना ।

३. जैसे साकार ब्रह्मा बाप सेवा में रहते, समाचार सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते । एक घण्टे के समाचार को भी ५ मिनट में सार समझ बच्चों को खुश भी करते और अन्तर्मुखी वा एकान्तवासी स्थिति का अनुभव भी करा देते । इसको ही कहा जाता है एकान्तप्रिय और मिलनसार । ऐसे फ़ालो फ़ादर । विस्तार को सार में समेटने का अभ्यास करो ।

४. जैसे और नियम आवश्यक समझकर पालन करते हो, ऐसे स्व-उन्नति और सेवा की सफलता के लिए, सेवाकेन्द्र के वातावरण के लिए एकान्तप्रिय बनने का लक्ष्य रख अपने दिल की लगन से बीच-बीच में एकान्तवासी बनने का समय निकालो । एक पावरफुल स्थिति में अपने मन को, बुद्धि को स्थित कर एकान्तवासी बन जाओ ।

५. एकान्त में रमणिकता ग़ायब न हो । दोनों समान और साथ-साथ रहें । मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव को ज्ञान से मिलाकर चलने वाले । एकान्तप्रिय बनना माना यह नहीं कि मिलने से दूर रहना । कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती । एक गुण तूफ़ान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो

का अनुभव करेंगे । एकान्तप्रिय बनना माना किनारा करना नहीं लेकिन एक की याद में रहना और अपने आत्मिक-स्वरूप द्वारा साइलेन्स की शक्ति का विकास करना ।

१२. जैसे ब्रह्मा बाप एकान्तप्रिय होने के कारण सदा अन्तर्मुखी रहे । जिस कारण स्वयं भी सदा शान्ति और सुख के सागर में समाये रहे और अन्य आत्माओं को भी अपने शुद्ध संकल्प और वायब्रेशन द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, सम्पर्क द्वारा शान्ति की वा सुख की अनुभूति कराते रहे । ऐसे फालो फादर ।

१३. बाह्यमुखता के वायुमण्डल को समाप्त करने के लिए एकान्तप्रिय बनने का लक्ष्य रखो । जितना एकान्तप्रिय बन अन्तर्मुखी रहेंगे उतना बाह्यमुखता के खाते समाप्त हो जायेंगे, सर्व बन्धनों से मुक्त योगयुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे ।

१४. एकान्तप्रिय बनना अर्थात् अन्डरग्राउण्ड वा अन्तर्मुखी बनना । जितना एकान्तप्रिय बनेंगे उतना मनन-शक्ति बढ़ेगी, माया के विघ्नों से सेफ्टी रहेगी, दूषित वायुमण्डल से बचाव रहेगा । जैसे स्थूल कारोबार का प्रोग्राम बनाते हो, ऐसे एकान्तप्रिय बनने का प्रोग्राम बनाओ । अमृतवेले विशेष एकान्त में अन्तर्मुखी रहने का अभ्यास करो ।

१५. एकान्तवासी बन एक सेकण्ड में जिस स्थिति में स्थित होना चाहें उसमें स्थित हो जायें, इसका अभ्यास करो । फ्रिश्तेपन की स्थिति द्वारा औरों को अव्यक्त स्थिति का अनुभव कराओ । यह एक मिनट की स्थिति स्वयं को वा औरों को बहुत लाभ दे सकती है ।

१६. जैसे ब्रह्मा बाप ने एकान्तप्रिय बन एकाग्रता के अभ्यास द्वारा साइलेन्स की शक्ति प्राप्त कर अनेक तड़पती हुई आत्माओं को जीयदान दिया । 'लाइट-हाउस, माइट-हाउस' की स्थिति में स्थित होकर विश्व को लाइट और माइट दी । साक्षात्कारमूर्त बन अनेक भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति कराई । ऐसे फालो फादर करो ।

— तो अच्छा नहीं । इसलिए दोनों का बैलेन्स रहे ।

६. दूर-देश वा अपने स्वीट होम में जाने के लिए विस्तार को बिन्दी में समाकर एकान्तप्रिय बनने का अभ्यास करो । इसके लिए समाने की और समेटने की शक्ति आवश्यक है । डबल लाइट के उड़न आसन पर स्थित हो एकान्त में चले जाओ । मिलनसार बन सेवा के साधन भी अपनाओ, नये-नये प्लैन्स भी बनाओ, लेकिन किन्ही किनारों में रस्सी बांधकर नहीं रखो ।

७. एकान्तप्रिय बन मन और बुद्धि को दृढ़ता से एकाग्र करना ही सच्ची तपस्या है । तपस्या अर्थात् व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति । इस समाप्ति से ही सम्पूर्णता आयेगी । एकान्तप्रिय बन तपस्या की योग-अग्नि में अपनी कमज़ोरियों को भस्म करो ।

८. एकान्तप्रिय बन अपनी स्थिति एकरस और एकाग्र बनाओ । अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो । एकान्तप्रिय बनने के लिए सर्व सम्बन्धों की सर्व रसनायें एक से लो । 'एक के सिवाए दूसरा न कोई' — ऐसी स्थिति वाला ही एकरस वा एकाग्र हो सकता है । एकाग्र होना अर्थात् एक ही संकल्प में टिक जाना, एक ही लग्न में मग्न हो जाना ।

९. चारों ओर हंगामा होते हुए भी आप एक के अन्त में खोये रहो अर्थात् एक का अनुभव करो । इसके लिए स्व-अभ्यास वा स्व-साधना करो । चलते-फिरते जितना भी समय मिले अभ्यास में सफल करते जाओ । स्व-अभ्यास में अलबेले मत बनो । चारों ओर हलचल हो, लेकिन आप एक के अन्त में खो जाओ अर्थात् एकान्तवासी बन जाओ । यही है महान् पुरुषार्थ ।

१०. एकान्तवासी बनने से एकाग्रता का अभ्यास होता है । बहुत समय के एकाग्रता के अभ्यास से दो मुख्य शक्तियां प्राप्त हो जायेंगी — एक परखने की शक्ति और दूसरी निर्णय करने की शक्ति । यह विशेष दो शक्तियां 'व्यवहार' वा 'परमार्थ' दोनों की सर्व समस्याओं को समाप्त करने का सहज साधन हैं ।

११. अपने संकल्पों की शक्ति को श्रेष्ठ वा स्वच्छ बनाने के लिए एकान्तप्रिय बनो । जितना एकान्तप्रिय बनेंगे उतना संकल्प-शक्ति शुद्ध और श्रेष्ठ बनेगी और शुद्ध संकल्प की शक्ति द्वारा हर कार्य सहज ही सफल होने

आत्मिक दृष्टि और वृत्ति बनाने का अभ्यास

१. बाबा को प्रथम दिन से ही आत्मिक दृष्टि व वृत्ति की धुन लग गई थी । यह सुन्दर तपस्या बाबा ने लिखकर प्रारम्भ की । कोई भी जब उनके सामने आता था तो वे उसे आत्मिक-भाव से ही दृष्टि देते थे । इस अभ्यास से छोटे-बड़े, गरीब-अमीर, जाति-पाँति का भेद मिट गया और सभी को यही आभास होने लगा कि बाबा मेरा है । तो हम ब्रह्मा-वत्सों को भी आत्मिक दृष्टि-वृत्ति के अभ्यास द्वारा लौकिक व व्यक्त भाव से ऊपर उठकर सम-भाव धारण करना है ।

२. गायन है — दृष्टि से सृष्टि बनती है । पहला पाठ है भाई-भाई की दृष्टि से देखो । दृष्टि बदलने से सब बातें स्वतः बदल जाती हैं । जब आत्मा को देखेंगे तो यह सृष्टि स्वतः पुरानी देखने में आयेगी । दृष्टि बदलने से स्थिति और परिस्थिति बदल जायेगी, गुण और कर्म भी बदल जायेंगे । इसलिए आत्मिक दृष्टि-वृत्ति नेचुरल बनाने का अभ्यास करो ।

३. आपस में बातचीत करते समय शरीर में होते हुए आत्मा को देखो — यही पहला पाठ जीवन में लाने से बाकी सब धारणायें स्वतः हो जायेंगी । आत्मिक-स्थिति में रहना अर्थात् ज़ीरो स्थिति में स्थित होना, जिसमें पिछले कोई भी संस्कार नहीं रहते । इस आत्मिक-स्थिति के अभ्यास से सब कमियाँ खत्म हो जायेंगी । फिर सेवा में कमाल कर सकेंगे ।

४. आत्मिक दृष्टि-वृत्ति बनाने के लिए चित्र के अन्दर जो चैतन्य है उसे देखो और उस चित्र के जो चरित्र हैं उन चरित्रों को देखो । चेतन और चरित्र को देखेंगे तो चित्र अर्थात् देह के भान से दूर हो जायेंगे । इसी मुख्य पुरुषार्थ से पुराने संस्कार, पुरानी बातें समाप्त हो जायेंगी ।

५. इस स्थूल जिस्म को देखते हुए दृष्टि रूह की तरफ़ जाये, जिस्म देखते भी दिखाई न दे — यही है आत्मिक अर्थात् रूहानी दृष्टि और वृत्ति का अभ्यास । इस अभ्यास से दृष्टि पवित्र अर्थात् शुद्ध हो जाती है । क्योंकि पहले दृष्टि देखती है, फिर वृत्ति जाती है । रूहानी दृष्टि अर्थात् अपने को और दूसरों को रूह देखना । इसी अभ्यास से ब्रह्मा बाप ने जिस्मानी लौकिक चीज़ों को

अलौकिक रूप में परिवर्तन किया । तो फ़ालो फ़ादर करो ।

६. जैसे पावर-हाउस के साथ कनेक्शन जोड़ने के लिए तार को तार के साथ जोड़ते हैं, तार के ऊपर की रबड़ उतार देते हैं । ऐसे परमात्मा पिता के साथ कनेक्शन जोड़ने के लिए यह देह रूपी रबड़ उतारना है, अर्थात् अपने को आत्मा समझ इस शरीर के भान से अलग रहना है और औरों को भी शरीर के भान से अलग बनाने की सर्विस करनी है । जब मरजीवा बन गये तो पिछले जीवन की दृष्टि और वृत्ति समाप्त कर 'मैं आत्मा अशरीरी हूँ' — यह अभ्यास करो ।

७. जहाँ भी देखो, जिसे भी देखो वह आत्मिक-स्वरूप ही दिखाई दे । क्योंकि जो आपकी वृत्ति में होगा वही दृष्टि से दिखाई देगा । यदि वृत्ति देह-अभिमान की है, चंचल है तो दूसरों की दृष्टि-वृत्ति भी चंचल होगी, यथार्थ साक्षात्कार नहीं कर सकेंगे । इसलिए अभ्यास करो कि मैं देह नहीं, देही हूँ । तो दृष्टि बदल जायेगी । आत्मिक दृष्टि, दिव्य दृष्टि और अलौकिक दृष्टि बनाओ तो दृष्टि और वृत्ति बदलने से यह नैन जादू की डब्बी बन साक्षात्कार कराने के साधन बन जायेंगे ।

८. जब आत्मिक दृष्टि और वृत्ति बनाने के अभ्यास द्वारा अपना आत्मिक स्वरूप स्पष्ट और बहुत समय स्मृति में रहेगा, तब अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे । जैसे साकार रूप में इसी अभ्यास के कारण सतयुगी संस्कार स्पष्ट स्मृति में रहते थे । ऐसे भविष्य के संस्कार स्पष्ट स्मृति में रहने चाहिए । परन्तु यह तब होगा जब अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये ।

९. निरन्तर तपस्वी बनने के लिए मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाय आत्मिक-स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये । चाहे रजोगुणी वा तमोगुणी संस्कार-स्वभाव वाली आत्मा हो, आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो । यही है आत्मिक दृष्टि और वृत्ति बनाने का अभ्यास ।

१०. आप सबका पहला-पहला व्रत है आत्म-अभिमान बनने का । तो

अमृतवेले से चेक करो कि जो पहला-पहला व्रत लिया है उसी प्रमाण चलते हैं? देह को देखते भी आत्मा को देखो तो वृत्ति चंचल हो नहीं सकती । वृत्ति से वायुमण्डल बनता है । यदि आपकी वृत्ति श्रेष्ठ है तो वृत्ति के आधार से वायुमण्डल को शुद्ध बना सकते हो ।

११. आत्मिक दृष्टि और वृत्ति बनाने से दिव्य गुणों का आकर्षण अर्थात् इसेन्स और आत्मिक-स्वरूप स्वतः दिखाई देगा । तो रूहानी राहत में रहने के लिए रूप की विस्मृति और रूह की स्मृति रहे । यही है महीन पुरुषार्थ । इसलिए ऐसा अनुभव करो जैसे शरीर एक बाक्स है, इसके अन्दर आत्मा रूपी जो हीरा है उससे ही मेरा सम्बन्ध और स्नेह है ।

१२. जैसे ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी कहने से ब्रह्मा बाप वा ब्रह्माकुमारपने का स्वरूप स्मृति में रहता है, ऐसे शिव-वंशी होने के नाते अपना आत्मिक-स्वरूप अर्थात् निराकारी स्वरूप स्मृति में रहे । स्वयं को निराकार आत्मा समझकर आत्माओं से बात करो । मस्तक के बीच चमकता हुआ सितारा (आत्मा) ही दिखाई दे । जब यह पहला पाठ कम्पलीट हो तब बाप समान सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बन सकेंगे ।

१३. एकरस स्थिति के तख्त पर स्थित रहने के लिए अकालतख्त-नशीन बनो । अपने इस भृकुटि के तख्त पर अकालमूर्त बन स्थित हो जाओ तो एकरस स्थिति के तख्त पर और बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान हो सकेंगे । यह अकालतख्त ही अचल-अडोल और एकरस स्थिति का तख्त है । इस पर विराजमान रहेंगे तो बाप समान निराकारी और निर्विकारी स्टेज स्वतः बन जायेगी ।

१४. किसी के साथ भी सम्पर्क में आते, बातचीत करते मस्तक के बीच मणि को देखो । मस्तक की मणि के बजाय शरीर रूपी सांप को नहीं देखो । सदा यह सलोगन याद रखो वा स्मृति में रखो कि देह को देखना अर्थात् बुरा देखना है । देहधारी के प्रति सोचना व संकल्प करना — यह बुरा है । बुरा न देखो, बुरा न सोचो तो आत्मिक दृष्टि-वृत्ति स्वतः बन जायेगी ।

१५. सदा शरीर को देखते रूह अर्थात् आत्मा को देखने का पाठ पक्का करो । रूह को देखो और रूहों के मालिक के साथ रूहरिहान करो तो रूहानी

गुलाब बन जायेंगे । कभी अपने को बाप के नूर-ए-रत्न आत्मा अर्थात् नयनों में समाया हुआ श्रेष्ठ बिन्दु महसूस करो, कभी अपने को मस्तक पर चमकने वाली मस्तक-मणि चमकता हुआ सितारा महसूस करो । यह महसूसता ही बाप समान बना देगी । इससे दैहिक दृष्टि और वृत्ति समाप्त हो जायेगी ।

वर्तन का भान छोड़ फरिश्ता स्वरूप बनो, डबल लाइट बनो ।

५. देह के सम्बन्ध लौकिक और अलौकिक व्यक्तियों से होते हैं । दोनों सम्बन्ध में बाप समान महात्यागी अर्थात् नष्टोमोहा बनना है । नष्टोमोहा की निशानी है—न किसी से घृणा हो, न किसी में लगाव वा झुकाव हो । क्योंकि दोनों बातों में समय, शक्तियां वा बुद्धि जायेगी । इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से, परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो । तो कर्मबन्धन से न्यारे अर्थात् नष्टोमोहा बन जायेंगे ।

६. लौकिक सम्बन्धों के बीच रहते मन में कभी यह संकल्प न आये कि इनसे हमारा लौकिक सम्बन्ध है । निमित्त लौकिक सम्बन्ध लेकिन स्मृति में अलौकिक और पारलौकिक सम्बन्ध रहे । सदा कमल-आसन पर विराजमान रहो । कभी भी विकारों रूपी पानी वा कीचड़ की बूंद स्पर्श न करे । यह मेरी देह का सम्बन्ध नहीं लेकिन सेवा का सम्बन्ध है । प्रवृत्ति में सम्बन्ध के कारण नहीं लेकिन सेवा के लिए रहे हुए हैं । इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो ।

७. 'एक बाप दूसरा न कोई' — सदा इस स्मृति से नष्टोमोहा और उपराम बनो । बाप ही संसार है । संसार में व्यक्ति और वस्तु दो चीजें ही मुख्य होती हैं । तो जब संसार ही बाप है, तो सर्व सम्बन्ध भी बाप से हैं और सर्व प्राप्तियां भी बाप से हो गई । जब सब-कुछ मिल गया तो बुद्धि और किसी में भी जा नहीं सकती ।

८. प्रवृत्ति में रहते सदा देह के सम्बन्ध से निवृत्त रहना है । मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है — यह भान स्वप्न में भी न आये । आत्मा भाई-भाई है, न कि स्त्री-पुरुष । यह निमित्त मात्र सिर्फ सेवा अर्थ सम्बन्ध है, बाकी कम्बाइन्ड रूप आप और बाप हो । परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाते ट्रस्टी होकर रहो तो नष्टोमोहा और उपराम बन जायेंगे ।

९. जैसे कोई शरीर के वस्त्र उतारते हो तो सहज उतार देते हो, ऐसे इस शरीर रूपी वस्त्र को सहज उतारने अथवा पुराने संस्कारों को छोड़ने का अभ्यास करो । लेकिन यदि यह वस्त्र कोई न कोई संस्कारों में चिपका हुआ

देह और देह के सम्बन्धों से सदा उपराम और नष्टोमोहा

१. जिस दिन से शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन को अपना माध्यम बनाया, ब्रह्मा बाबा उसी दिन से अपनी देह और देह के सब सम्बन्धों से उपराम और नष्टोमोहा बन गये। ब्रह्मा बाबा कहते — “बच्चे ! यह तन मेरा नहीं, मैंने तो बाबा को लोन पर दिया है। बाबा स्वयं इसकी सम्भाल करेंगे। यह हुसेन का घोड़ा है। यह सम्बन्धी भी मेरे नहीं, मैं तो स्वयं उनका बच्चा हूँ। यह सब शिव बाबा के हैं।” इसी स्मृति से बाबा डबल लाइट बन गये। बाबा से अनुभव होता था कि बाबा चलते-फिरते प्रकाश की काया के बीच हैं। ऐसे ही हम बच्चों को भी फालो फादर कर देह और देह के सब सम्बन्धों से उपराम वा नष्टोमोहा रहना है।

२. इस पुराने शरीर में ऐसे निवास करो जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फँस नहीं जाते। कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते-स्वरूप में स्थित हो जाओ, अपने निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। न्यारेपन की ऊपर की ऊंची स्थिति से नीचे साकार कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करने के लिए आओ। इसको कहा जाता है मेहमान अर्थात् महान्। यही है त्याग का पहला कदम।

३. इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई अमानत समझकर सेवा अर्थ कार्य में लगाओ। यह देह मेरी नहीं लेकिन सेवा अर्थ अमानत है। जैसे मेहमान बन देह में रह रहे हैं। बापदादा ने थोड़े समय के लिए यह तन कार्य के लिए दिया है। ऐसा समझकर इस पुरानी देह के भान से न्यारा बनो अर्थात् इस देहभान से किनारा कर लो तो बाप समान उपराम वा नष्टोमोहा बन जायेंगे।

४. जैसे ब्रह्मा बाप के संकल्प में, मुख में सदैव यही रहा कि यह रथ बाप का है। तो बच्चों का भी वायदा है कि यह तन-मन-धन सब तेरा, न कि मेरा। मेरा-मेरा देहभान में लाता और तेरा कहो तो उपराम बन जायेंगे। उपराम रहने से बाप की याद स्वतः रहेगी। इसलिए बाबा कहते — बच्चे ! पुराने मिट्टी के

होगा अर्थात् तंग वा टाइट होगा तो उतारना मुश्किल होगा । इसलिए चेक करना है — सभी संस्कारों से न्यारा अर्थात् उपराम बने हैं ?

१०. देह के सम्बन्धियों के साथ रहते लौकिक में अलौकिक की स्मृति रखो । सदैव समझो कि यह सब भी ब्रह्मा बाप के बच्चे हमारी पिछली बिरादरी हैं । क्योंकि ब्रह्मा 'दी क्रियेटर' है । तो भक्त, ज्ञानी व अज्ञानी सब उनकी बिरादरी हैं । हर सम्बन्ध को लौकिक से अलौकिक में परिवर्तन कर दो तो नष्टोमोहा वा उपराम बन जायेंगे ।

११. पहले देह के सम्बन्धों से न्यारा नहीं, लेकिन देह-भान से न्यारे बनो तो लोकप्रिय बन जायेंगे । दुनिया को प्यारे भी तब लगेंगे जब पहले शरीर से न्यारी आत्मा रूप में स्थित रह हर कार्य करेंगे । जो पहले शरीर से न्यारे अर्थात् उपराम बनते हैं वही स्वयं प्रिय, प्रभु-प्रिय और लोक-प्रिय बनते हैं ।

१२. देह के सम्बन्ध देखते हुए स्वतः आत्मिक सम्बन्ध स्मृति में रहे । आत्मा के नाते भाई-भाई का सम्बन्ध और ब्रह्मा-वंशी ब्राह्मण बनने के नाते से भाई-बहन का श्रेष्ठ शुद्ध सम्बन्ध ही स्मृति में रहे । इसके लिए कमल-आसनधारी बनो । ब्रह्मा बाप भी जब कमल-आसनधारी बने तब बाप के प्यारे और ब्राह्मण परिवार के प्यारे बने । तो फालो फादर करो ।

१३. जैसे उपराम और द्रष्टा बन ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया । सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में नहीं आता था । ऐसे फालो फादर करो । पहले देह से उपराम अर्थात् न्यारा बनो, फिर देह के सम्बन्धों के साथ-साथ अपनी बुद्धि और संस्कारों से उपराम बनो । 'मैं यह समझती हूँ', 'मेरे यह संस्कार हैं' — इस मेरे-पन से भी उपराम । जहाँ मैं आता है वहाँ बापदादा याद आये, जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये ।

१४. जैसे कोई स्थूल स्थान में प्रवेश करते हैं, वैसे ही इस स्थूल देह में प्रवेश होकर कार्य करो । जब चाहो तब प्रवेश करो और जब चाहो तब न्यारे हो जाओ । ऐसा अनुभव बढ़ाओ । एक सेकण्ड में देह को धारण करो और एक सेकण्ड में इसे छोड़ देही-अभिमानि बन जाओ । देह अपने बंधन में बांध न ले । देह के भान को छोड़ने अथवा न्यारा होने का अभ्यास ही बाप समान बना देगा ।

'नथिंग-न्यु' की स्मृति से सदा विघ्नजीत

१. बाबा निरन्तर साक्षीपन की सीट पर स्थित होने के कारण सदा अपनी शान में रहे । भले नया ज्ञान होने के कारण स्थापना के कार्य में अनेक विघ्न आये लेकिन 'नथिंग-न्यु' की स्मृति से बाबा सदा अचल रहे । कभी भी "क्यों, क्या, कैसे" का संकल्प नहीं उठा । सदा यही स्मृति रही कि जब कल्याणकारी बाप का साथ और हाथ है, ड्रामा कल्याणकारी है तो अकल्याण हो नहीं सकता । यह विघ्न भी आगे बढ़ाने के लिए आये हैं । बातें आती हैं, बदल जाती हैं लेकिन हमें नहीं बदलना है । तो ऐसे फालो फादर ।

२. हर दृश्य देखते हुए अनुभव हो कि यह अनेक बार का रिपीट किया हुआ दृश्य फिर से रिपीट हो रहा है । कोई नई बात नहीं कर रहे हैं लेकिन रिपीट कर रहे हैं । कल्प पहले जो हुआ था वही अब हो रहा है । जैसे एक सेकण्ड की बीती हुई बात बहुत स्पष्ट रूप से स्मृति में रहती है, वैसे वह कल्प पहले की बीती हुई सीन ऐसे ही स्मृति में रहे । साक्षीपन की वा त्रिकालदर्शीपन की स्टेज पर रहने से कल्प पहले की स्मृति बिल्कुल फ्रेश वा ताज़ी अनुभव होगी और हर सीन 'नथिंग-न्यु' लगेगी ।

३. पुरुषार्थ में सबसे बड़ा विघ्न है — अपनी वा दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में लाना, चित्त में रखना और वर्णन करना । इसलिए विघ्नजीत बनने की विधि है — बीती हुई बातें ऐसे महसूस हों जैसे बहुत पुरानी कोई जग की बात है । बीती बातों के न तो चिन्तन में जाओ, न चित्त में रखो और न वर्णन करो । बीती को 'बीती सो बीती' कर आगे बढ़ो, तब विघ्नजीत बनोगे ।

४. आये हुए किसी भी विघ्न को सेकण्ड में हाई जम्प देने के लिए डबल लाइट स्थिति में स्थित रहो । ड्रामा के हर दृश्य को त्रिकालदर्शी बनकर देखो । विलशिकरत के बजाय सदा दिलखुश रहो । 'क्या होगा, कैसे होगा.....' — इन जार्ज संकल्पों में समय गँवाने के बजाय समर्थवान बनो । कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी ड्रामा की स्मृति से विघ्नजीत बन जायेंगे ।

५. कोई भी विघ्न गिराने के लिए नहीं लेकिन मजबूत बनाने के लिए

आता है। इसलिए विघ्नों में कनपयूज नहीं होना है। जैसे इम्तहान के हाल में जब पेपर आता है तो अच्छे स्टूडेंट देखकर खुश होते हैं, क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देने से क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता। ऐसे ही स्मृति रहे कि कोई भी विघ्न आते हैं 'विघ्न-विनाशक' बनाने, न कि हार खिलाने के लिए।

६. माया के विघ्न शेर के रूप में भी आयें तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो। अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योग-अग्नि जलती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती, सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे। नॉलेजफुल हो विघ्न और परिस्थितियों को अंगद के समान अपनी अचल स्थिति से पार कर विघ्नजीत बनो।

७. जैसे हंस मोती चुगता है, दूध और पानी अलग कर देता है, ऐसे आपके सामने कोई भी निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि — यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए। जो-कुछ हुआ अच्छा हुआ। अच्छी बात उठा लो। कोई भी बात सामने आये तो उसे पानी समझ छोड़ दो। किसने मिक्स किया, क्यों किया — इसमें टाइम वेस्ट मत करो। 'क्यों-क्या' में श्वास निकल जाए तो फेल हो जायेंगे। कोई भी बात फील करना माना फेल होना। इसलिए नर्थिंग-न्यु।

८. 'कल्प-कल्प के हम विजयी हैं' — इस स्मृति से विघ्नजीत बनो। माया से लेसन सीखो। जैसे वह कभी हलचल में नहीं आती है, सदा अचल रहती है। ऐसे आप अंगद के समान अचल-अडोल रहो। सिर्फ एक बात का ध्यान रखो—जैसे ड्रामा में जो बात जिस रूप से बीत जाती वह फिर से रिपीट नहीं होती, फिर ५००० वर्ष के बाद ही होगी। वैसे ही कमज़ोरियों को बार-बार रिपीट नहीं करो, तब विघ्नजीत बनेंगे।

९. नॉलेजफुल बन 'नर्थिंग-न्यु' का पाठ पक्का करो तो किसी भी प्रकार के विघ्न में हलचल हो नहीं सकती। साइड-सीन को देख रुकेंगे नहीं, आगे बढ़ते जायेंगे। जो भी कुछ होता है — साइड-सीन है। साइड-सीन के कारण मंज़िल को नहीं छोड़ा जाता। चलते चलो, पार करते चलो तो मंज़िल सदा समीप अनुभव करेंगे। वातावरण को पावरफुल बनाने वाले बनो, हिलने वाले

नहीं।

१०. विघ्नजीत बनने के लिए वाचा सर्विस से भी ज्यादा याद के प्रोग्राम रखने चाहिए। वाणी में आने से भी कहीं-कहीं नीचे आ जाते हो। इसलिए कुछ समय याद का किला मजबूत बनाकर फिर सेवा के मैदान पर आओ। जो बात आती है वह चली भी जाती है। जैसे बात आती और चली जाती, तो आप भी समझो — यह साइड-सीन आई और चली गई। वर्णन भी नहीं करो, सोचो भी नहीं — इसको कहा जाता है फुल-स्टाप।

११. अगर कभी किसी द्वारा विघ्न आता है, तो उससे भी लाभ उठाकर, शिक्षा लेकर आगे बढ़ो, रुको नहीं। सदा हर कार्य करते हुए कल्याण की वृत्ति में रहो। जो-कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है। सिर्फ 'नर्थिंग-न्यु' की स्मृति से साक्षीपन की सीट पर बैठ ड्रामा की हर सीन देखो तो बहुत मज़ा आयेगा। सदा साक्षीपन की सीट पर सेट रहने से 'वाह ड्रामा वाह' के गीत गाते विघ्नजीत बन जायेंगे।

१२. कोई न कोई पुराना संस्कार सहज रास्ते के बीच में विघ्न रूप बन रुकावट डालता है और शक्ति न होने के कारण 'क्या-क्यों' के विस्तार में जाकर जैसे कि पत्थर को तोड़ने लग जाते हो और तोड़ते-तोड़ते दिलशिकस्त हो जाते हो। लेकिन सहज तरीका है पत्थर को तोड़ने के बजाय जम्प लगाकर पार हो जाओ। यह क्यों हुआ, यह नहीं होना चाहिए, आखिर यह कहाँ तक होगा, यह तो बड़ा मुश्किल है — ये व्यर्थ संकल्प पत्थर तोड़ना है, लेकिन एक शब्द 'नर्थिंग-न्यु' याद आ जाय तो सेकण्ड में हाई जम्प दे विघ्नजीत बन जायेंगे।

१३. स्थापना के कार्य में कभी छोटे, कभी बड़े तूफान तो आयेंगे ही। लेकिन जैसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि हनुमान इतने बड़े पहाड़ को भी गेंद के समान हथेली पर ले आया। ऐसे कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान वा विघ्न हो लेकिन बड़ी बात को भी छोटा-सा खिलौना बनाय खेल की रीति से सदा पार करना है। विघ्नों को वा समस्या को अपने मन में वा दूसरों के आगे विस्तार नहीं करना है। 'नर्थिंग-न्यु' के फुल-स्टाप की बिन्दी लगाकर आगे बढ़ना है।

सदा एक्यूरेट और अलर्ट

१. भविष्य पद स्पष्ट होते हुए भी बाबा पुरुषार्थ में सदा अलर्ट रहे। अपने तीव्र पुरुषार्थ वा अथकपन की विशेषता से ही नम्बरवन बने। बाबा बच्चों को हमेशा कहते — “बच्चे ! पुरुषार्थ में कभी भी अलबेले नहीं बनो। पढ़ाई में कभी सुस्ती नहीं आनी चाहिए। हर कार्य एक्यूरेट करो।” बाबा स्वयं इसका इज्जैम्पल थे। कोई भी कार्य के लिए बाबा कहते — “बच्चे ! ‘डिले इज डेंजर’। जो करना है अभी करो। अभी नहीं तो कभी नहीं।” ऐसे हम बच्चों को भी सदा बाप समान हर कार्य करने में एक्यूरेट और अलर्ट रहना है, गफलत नहीं करनी है। तब सम्पन्न स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे।

२. जैसे शारीरिक कार्य का टाइम-टेबल बना हुआ है, वैसे आत्मा की उन्नति का भी टाइम-टेबल बनाओ — आज के दिन अव्यक्त स्थिति के लिए इतना परसेन्ट और इतना समय निकालना ही है। फिर टाइम-टेबल प्रमाण कर्तव्य करो। अटेन्शन और चेकिंग के आधार से समय को सफल करो। किसी भी बात के विस्तार को समेटने वा समा लेने का अभ्यास एक्यूरेट बना देगा। क्योंकि अब अलबेलेपन का समय नहीं है, इसलिए पुरुषार्थ में जो मुकसानकारक बातें हैं उनका फास्ट (व्रत) रखो। फास्ट रखने से फास्ट (तीव्र) जा सकेंगे।

३. अब समय समीपता की घण्टियां बजा रहा है। इसलिए अपने आपको सफ़ रखने के लिए जो भिन्न-भिन्न प्रकार के बहाने लगाते हो, उस बहानेबाज़ी को छोड़ स्वयं को बदलने का लक्ष्य रखो। दूसरा बदले तब हम बदलें, ऐसे नहीं। ‘हम बदलकर औरों को बदलें’ — सदा इसमें अपने को आगे करो। सम्पूर्ण बन समय को समीप लाओ, ऐसे नहीं — समय आपेही सम्पूर्ण बना देगा। अलर्ट बन समय के पहले स्वयं को परिवर्तन कर लिया तो उसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी।

४. जैसे समय समीप आ रहा है, ऐसे अब समय से भी तेज दौड़ लगानी है। ऐसे नहीं कहना है कि इतना समय पड़ा है, कमी दूर हो जायेगी। या यह सोचना कि ‘हमारे से यह आगे हैं, यह करेंगे तो हम करेंगे’ — यह है अलबेलेपन

१४. जैसे ब्रह्मा बाप ने ज्ञान-योग के सार में स्थित हो विस्तार को सार में लाया, विघ्नों का विस्तार करके अपने समय और शक्तियों को वेस्ट नहीं किया, ऐसे फालो फादर । जो समय और शक्तियों की बचत करते हैं, वे कभी निराश वा दिलशिकस्त नहीं होते । सदा मैज में मुस्कराते हुए पार करते हैं । वह विघ्नों को देखकर घबराते नहीं हैं लेकिन ज्ञान-योग की गहराई में जाकर 'नथिंग-न्यु' की स्मृति से विघ्नजीत बनते हैं ।

१५. जैसे स्थापना के समय साकार बाप पर लोगों द्वारा अपशब्दों की वर्षा हुई, अनेक अत्याचार हुए । ब्राह्मण बच्चे भी छोटी-मोटी बातों से असन्तुष्ट हो अनेक प्रकार के विघ्न डालने के निमित्त बने, उन्हें भी बाप ने सन्तुष्ट करने की भावना से, परवश समझ सदा कल्याण की भावना से आगे बढ़ाया । सामना करने वालों को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कॉमना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया । नथिंग-न्यु की स्मृति से विघ्नों को पार किया । ऐसे फालो फादर करो ।

१६. ब्राह्मण जीवन में सदा निर्विघ्न रहने का साधन सेवा है, लेकिन सेवा में ही विघ्नों का पेपर भी ज्यादा आता है । निर्विघ्न सेवाधारी को सच्चा सेवाधारी कहा जाता है । विघ्न आना — यह भी ड्रामा की नूंध है । आने ही हैं, आते ही रहेंगे । क्योंकि यह विघ्न या पेपर अनुभवी बनाते हैं । इनको विघ्न न समझ, अनुभव की उन्नति हो रही है — इस भाव से देखो । विघ्न अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा को अनुभवी बनाने वाला शिक्षक समझो तो विघ्न का रूप समाप्त हो जायेगा, विघ्नजीत बन जायेंगे ।

रंगे तो व्यर्थ कर्म के बजाय हर कर्म यथार्थ अर्थात् एक्क्यूरेट होगा । सोच-विचारार्थी संकल्प ही बीज है । संकल्प ही जीवन का श्रेष्ठ खज़ाना है । इसलिए संकल्प को समर्थ बनाओ । व्यर्थ को समाप्त करो ।

९. जैसे हृदय का रिकॉर्ड भरने के समय वायुमण्डल, वृत्ति और वाणी पर नियंत्रण अटेन्शन रखते हैं । ऐसे यह बेहद का रिकॉर्ड भरने का समय है, सारे कल्याण के लिए अभी रिकॉर्ड भर रहे हैं । इसलिए वातावरण को अपनी अन्तर्मुखता से शक्ति से श्रेष्ठ बनाओ, वृत्ति और वाणी को राज़युक्त और युक्तियुक्त बनाओ । कभी भी आलस्य में आकर अपने बेहद के रिकॉर्ड को खराब नहीं करना । सदा अलर्ट और एक्क्यूरेट रहना ।

१०. जैसे-जैसे समय समीप आता जा रहा है, वैसे-वैसे संकल्प में भी अर्थ न गंवाने की ज़िम्मेवारी भी हर एक आत्मा के ऊपर बढ़ती जा रही है । अभी अपना बचपन नहीं समझना । बचपन में जो किया वह अच्छा लगता है । बच्चे का अलबेलापन अच्छा लगता है, बड़प्पन नहीं । और बड़ों का अलबेलापन अच्छा नहीं लगता । इसलिए समय के प्रमाण अपने स्वमान का कायम रखते हुए एक्क्यूरेट बन अपनी ज़िम्मेवारी को सम्भालो । सदा अलर्ट रहो ।

११. पढ़ाई वा याद की यात्रा में स्थूल वा सूक्ष्म आलस्य नाम मात्र भी न आने दो । सदा एक्क्यूरेट और अलर्ट रहो । ऐसे नहीं सोचो कि — क्या करें, इतना ही हो सकता है, ज्यादा नहीं हो सकता, चल तो रहे हैं, कर तो रहे हैं । यह स्वार्थ की थकावट भी आलस्य की निशानी है । आलस्य वाले जल्दी थकते हैं, अलग-अलग वाले अथक होते हैं । तो न पुरुषार्थ में स्वयं थकना है, न औरों को थकाने देना है । तब कहेंगे आलराउन्डर, एक्क्यूरेट और अलर्ट ।

१२. सदा समझना चाहिए कि — “मैं अकेला नहीं हूँ । मेरे आगे-पीछे मेरी राजधानी है । मेरी प्रजा, मेरे भक्त मुझे देख रहे हैं ।” अभी अपने को अपनी प्रजा और भक्तों के बीच में समझो तब सदा एक्क्यूरेट और अलर्ट रहेंगे और सभी आपको फालो करेंगे । क्योंकि जो भी सेकण्ड-सेकण्ड कदम चलता है वो आपका संस्कार आपकी प्रजा वा भक्तों में भरता है । इसलिए सदा ध्यान रखना है कि जो कर्म हम करेंगे हमको देख और करेंगे ।

के संस्कार । जो सदा अलर्ट होते हैं वह कभी अलबेले नहीं बनते, वे इंतज़ार करने के बजाय स्वयं को सम्पन्न बनाने के इन्तज़ाम में लग जाते हैं । इसलिए वे कभी माया से धोखा नहीं खा सकते, सदा विजयी रहते हैं ।

५. साक्षीपन की स्टेज पर स्थित होकर फिर हर पार्ट बजाओ तो एक्यूरेट बजा सकेंगे, पार्ट के वश नहीं होंगे । जो हर कार्य अलर्ट होकर एक्यूरेट करता है उसे बेहद सेवा का चांस भी स्वतः मिलता है । ऐसे कभी नहीं समझो कि मुझे चांस मिलेगा तो करूंगा/करूंगी, मुझे आगे बढ़ाया जाए तो बढ़ूंगा/बढ़ूंगी । यह भी आधार हुआ । स्वयं, 'स्वयं' को ऑफ़र करो और बेहद के अनुभवी बनो । बेहद के बुद्धिवान बन हर कार्य एक्यूरेट करो तो बाप समान बन जायेंगे ।

६. जैसे साकार के लिए गायन है कि "जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे ।" यह निराकार के बोल नहीं हैं । साकार बाप ही कर्म के निमित्त बने और हर कर्म एक्यूरेट करके दिखाया । ऐसे श्रेष्ठ कर्म के सिम्बल बनो । साकार के कर्मों की कॉपी करो । इसके लिए अपने संकल्प, मन, बुद्धि, संस्कार और कर्म — सबकी दिनचर्या फिक्स करो । यदि 'सोचते एक, करते दूसरा या हो जाता दूसरा' तो इसे अलबेलापन कहेंगे । अलर्ट रहने वालों का सोचना, बोलना और करना सब समान होगा ।

७. हर कर्म में एक्यूरेट और अलर्ट रहने के लिए अपने आपको ज़िम्मेवार आत्मा समझकर चलो । कहा जाता है — ज़िम्मेवारी बड़े ते बड़ा टीचर है । जैसे टीचर 'लाइफ' बनाते हैं, ऐसे ज़िम्मेवारी लाइफ़ बनाने की शिक्षा देती है । ज़िम्मेवारी बड़ापन लाती है । ज़िम्मेवारी होने से अलबेलापन समाप्त हो जाता है । ज़िम्मेवारी उठाने से अनेकों की आशीर्वाद मिलती है । लेकिन जैसे ब्रह्मा बाप ज़िम्मेवारी निभाते हुए भी सदा हल्के रहे, ज़िम्मेवारी और हल्कापन — इन दोनों का बैलेन्स रहा । ऐसे फालो फादर ।

८. हर कर्म में एक्यूरेट रहने के लिए सदा एक सलोगन स्मृति में रखो कि सोच-समझकर करना और बोलना है । जैसे जज का कार्य होता है सोच-समझकर निर्णय देना । ऐसे हर संकल्प में अपना जस्टिस बनो तो सदाकाल के लिए श्रेष्ठ जीवन बन जायेगी । क्योंकि सोच-समझकर कर्म

१३. जैसे साकार में बाप का मुख्य गुण देखा — वह कोई भी बात को पीछे के लिए नहीं छोड़ते थे, अभी ही करना है । जैसे वो 'अभी करते थे' वैसे ही अभी करना है, तब कहेंगे अलर्ट । ऐसे नहीं — कल कर लेंगे, १० व १५ दिन के बाद कर लेंगे । नहीं, अभी तो एक-एक सेकण्ड, एक-एक श्वास सफल करना है । अगर अभी अलबेले रहे तो यह पुरुषार्थ के सौभाग्य का समय हाथ से चला जायेगा । इसलिए पुरुषार्थ में जो कमी देखने में आती है उसे शीघ्र निकालना ही पुरुषार्थ से सच्चा प्यार है ।

१४. जैसे ड्रामा की स्टेज पर पार्ट बजाते हैं तो अपने ऊपर फुल अटेन्शन रख हर पार्ट एक्यूरेट बजाते हैं और सदा अलर्ट रहते हैं । एक-एक ऐक्ट पर हर समय अटेन्शन रहता है । अगर कोई भी बात नीचे-ऊपर होती है तो ऐक्टर की ऐक्ट शोभा नहीं देती । ऐसे सदा स्मृति रहे कि — "हम बेहद की स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं, हमारे हर कर्म पर सभी की आंख है । भले हम अकेलेपन में भी कुछ करते हैं, तो भी सृष्टि के सामने हैं । सारी सृष्टि की आत्मायें चारों ओर से हमें देख रही हैं ।" यह स्मृति अलर्ट बना देगी ।

१५. जो ऐक्टिव और अलर्ट होते हैं वह कोई भी कार्य को शीघ्र ही समझकर सफलता को प्राप्त कर लेते हैं । जो ऐक्टिव नहीं होते वह सोचते सोचते ही समय गँवा देते हैं । ऐक्टिव अर्थात् एवरेडी, अलर्ट । जिस में भारीपन अथवा आलस्य होता है उन्हें ऐक्टिव नहीं कहा जाता । पुरुषार्थ में वा अपने संस्कारों में भारी हैं तो कार्य एक्यूरेट नहीं कर सकते । ऐक्टिव सदा एवरेडी और इज़ी होंगे । खुद इज़ी बनने से सब कार्य भी इज़ी, पुरुषार्थ भी इज़ी हो जाता है । इज़ी रहकर हर कार्य करने से स्वतः एक्यूरेट होता है ।

रॉयल और सिम्पल (बेगर टू प्रिन्स)

१. जैसे ब्रह्मा बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते भी सभी के आगे सैम्पल बने । साधारणता में महानता अर्थात् रॉयल्टी का अनुभव कराया । बेगरी जीवन में भी बेफ़िक्र बादशाह की स्थिति अनुभव की । ब्रह्मा बाप के बोल-चाल, चेहरे और चलन से सदा रॉयल्टी दिखाई देती थी । ऐसे फालो ब्रह्मा बाप । जो जितना सिम्पल अर्थात् सादगी पसन्द है वही सैम्पल बन अपनी तरफ़ आकर्षित करता है । तो मन्सा संकल्पों में, सम्बन्ध में, व्यवहार और रहन-सहन में सिम्पल बनो । सिम्पल अर्थात् साधारणता में भी महानता वा रॉयल्टी हो । इस समय की रॉयल्टी भविष्य रॉयल फैमली में आने का अधिकारी बना देगी ।

२. सर्व का स्नेह वा सहयोग प्राप्त करने के लिए सिम्पल बनो । सिम्पल होने से कभी भी लौकिक परिवार वा दैवी परिवार में प्राब्लम का रूप नहीं बनेगा । जो सिम्पल नहीं रहते वह औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं । यदि कोई मन्सा में उलझन अर्थात् प्राब्लम है, तो उसको सिम्पल नहीं कहेंगे । बेहद की स्टेज पर बेहद की ऐक्ट करते हुए सिम्पल रहो । यह सिम्पल ऐक्टिविटी ही महानता की निशानी है । सिम्पल सिर्फ़ ड्रेस में नहीं लेकिन सभी बातों में सिम्पल बन सैम्पल बनना ही रूहानी रॉयल्टी है ।

३. सिम्पल शब्द की बहुत गुह्य परिभाषा है । सिम्पल अर्थात् सम्पूर्ण शिथिल । निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना । निरक्रोधी, निर्लोभी बनना अर्थात् सिम्पल बनना । यह सिम्पलिसिटी प्योरिटी का साधन है । जो जितना सिम्पल है वही ब्युटीफुल अर्थात् रॉयल है । ऐसा सिम्पल बनने के लिए माया को गॉलेज से इनोसेंट और ज्ञान में सेंट बनो । जैसे इस जीवन के बचपन के संस्कार स्पष्ट स्मृति में रहते हैं, ऐसे सतयुगी संस्कार अर्थात् भविष्य वर्सा स्पष्ट स्मृति में रहे ।

४. अनादि, आदि और पूज्य स्वरूप — तीनों में सबसे रॉयल ब्राह्मण आत्माएँ हैं । ब्राह्मणों की रूहानी रॉयल्टी की मुख्य निशानी है रीयलटी अर्थात् सत्यता । वृत्ति, दृष्टि, बोल और चलन सब सत्य हों, तब कहेंगे रॉयल

आत्मा । ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो, अन्दर एक हो, बाहर दूसरा । तो यह रॉयल्टी नहीं । बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में आते जरा भी बनावट वा मिलावट न हो ।

५. जो रॉयल आत्मायें हैं वह चित वा नैन-चैन से सदा हर्षित होंगी । सिर्फ बाहर से हर्षितमुख नहीं लेकिन चित भी हर्षित होगा । ऐसी रॉयल आत्माएं बापदादा और सर्व ब्राह्मण परिवार को अति प्यारी होती हैं । संगमयुगी रॉयल आत्मायें सर्व की प्यारी होने के कारण हर एक को अपनी ओर आकर्षित करेंगी । परन्तु रॉयल प्यार की निशानी है — वो जितना प्यारा, उतना ही न्यारा होगा । इसलिए न वह एक्स्ट्रा अटैचमेंट में आयेगा, न दूसरा उसकी अटैचमेंट में आयेगा ।

६. ब्राह्मण जीवन में रॉयल उसे कहा जाता, जो मन से सदा सम्पन्न वा भरपूर हो । उसके पास स्थूल वस्तुयें वा साधन नहीं भी हों, फिर भी मन भरपूर होने के कारण वो कभी अपने में कमी महसूस नहीं करेगा । ऐसी रॉयल आत्माओं में, स्थूल चाहे सूक्ष्म, किसी भी प्रकार के मांगने के संस्कार नहीं होंगे । मन से भरपूर रॉयल आत्मा सदा यही गीत गाती रहेगी — ‘सब पा लिया, प्राप्त हो गया ।’ ‘यह होना चाहिए, यह करना चाहिए’ — यह ‘चाहिए-चाहिए’ भी रॉयल मांगने के संस्कार हैं, जो आप ब्राह्मणों की रॉयल्टी नहीं ।

७. ऐसी रॉयल आत्मा बनो जो आपका यह चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता का अनुभव करायें । वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है । तो आपका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना हर कर्म में सभ्यता, सत्यता स्वतः ही दिखाई दे । क्योंकि सत्यता की शक्ति सबसे महान् है । सत्यता की रॉयल्टी को कोई भी कारण वा व्यक्ति छिपा नहीं सकता । सत्य सदा ही सत्य है । उसे स्वयं ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त है ।

८. जितना अपने असली आत्मिक-स्वरूप की सदा स्मृति रहेगी, तो स्थूल सूरत में भी अलौकिक रॉयल्टी नज़र आयेगी । उन्हें जो भी देखेंगे, उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया

का कोई फरिश्ता है अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है । ऐसी अनुभूति आपकी रूहानी रॉयल्टी करायेगी । और जितना बाप की रीयल स्मृति में रहेंगे तो हर कर्म वा बोल में रॉयल्टी दिखाई देगी । हर कर्म सत्य और श्रेष्ठ होने के कारण चरित्र अनुभव होगा ।

९. संगमयुगी रॉयल आत्मायें वह हैं जिनकी वृत्ति, दृष्टि और कृति रॉयल है । वृत्ति की रॉयल्टी अर्थात् सदा ‘शुभ भावना, शुभ कामना’ की वृत्ति से हर एक आत्मा से व्यवहार में आये । रॉयल दृष्टि अर्थात् फरिश्ता-रूप से औरों को भी फरिश्ता रूप देखे । कृति अर्थात् कर्म से ‘सदा सुख दे, सुख ले ।’ ब्राह्मण जीवन में अपनी रूहानी रॉयल्टी द्वारा हर बोल से बाप समान अथार्टी और प्राप्ति की अनुभूति करायें । हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला सत वचन हो । सम्पर्क अर्थात् संग पारस का काम करे अर्थात् असमर्थ आत्मा को समर्थ, नकली को असली बना दें ।

१०. ऐसा बाप समान रीयल वा रॉयल बनना है, जो यह नैन अर्थात् दिव्य दृष्टि ज्ञादू की वस्तु के समान काम करे । इन दिव्य नयनों से अभी-अभी सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव हो, अभी अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव हो और अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव हो । एक सेकण्ड में चारों ही धामों का अनुभव करा दो—यही है बाप समान रॉयल आत्माओं का कर्तव्य । ऐसी रॉयल्टी वाली आत्मा सदा सर्व कर्मेन्द्रियों द्वारा कोई न कोई प्राप्ति कराने वाली दाता होगी ।

११. जैसे आजकल की रॉयल्टी वाली आत्मायें सदा भरपूर रहने के कारण सदा-वहाँ किसी के अधीन नहीं होती हैं । कहा जाता है — इनका पेट भरा हुआ है । ऐसे आपकी बुद्धि हर खज़ाने से ऐसी भरपूर हो जो कोई भी व्यक्ति वा वैभव के तरफ़, जो अल्पज्ञ और अल्पकाल के हैं, वहाँ बुद्धि न जाये अर्थात् समाप्त कोई वस्तु न हो, जिसे लेने के लिए कहाँ नज़र जाये । नयनों में सदा चिन्मय रूप बाप ही समाया हुआ हो ।

१२. जैसे आपके जड़ चित्रों से महानता वा रॉयल्टी का अनुभव होता है । अब तक भी कैसी भी आत्मा को लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम या देवियां बनाते हैं तो साधारण व्यक्ति में भी महानता का अनुभव कर सभी सिर झुकाते

हैं। भले जानते हैं यह वास्तव में देवी नहीं है, बनावटी है, फिर भी नमन-पूजन करते हैं। लेकिन आप तो स्वयं चैतन्य देव-देवियों की आत्मायें हो ! तो कितनी महानता वा रॉयल्टी की अनुभूति सबको होनी चाहिए ! हर एक मन से आपके श्रेष्ठ भाग्य को नमस्कार करे। आपकी ऐसी चाल हो जो श्रेष्ठ भाग्य का हाल दिखाई दे।

१३. जैसे हीरा कितना भी मिट्टी में छिपा हुआ हो, फिर भी अपनी चमक दिखाता है। ऐसे आप कितने भी साधारण वायुमण्डल में हों, कितने भी बड़े व्यक्तियों के बीच हों लेकिन सबके बीच में अलौकिक विशेष रॉयल आत्मा दिखाई दो, साधारण नहीं। इसके लिए सदा अपनी सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान जीवन का अनुभव करो और इसी श्रेष्ठ स्मृति में रहकर हर कर्म करो कि हम संगमयुगी राजयोगी रॉयल आत्मायें हैं, साधारण नहीं। अपने रॉयल्टी के संस्कार, बोल और संकल्प नेचुरल बनाओ।

१४. संगमयुग पर रूहानी रॉयल्टी है — फरिश्ता-स्वरूप बनना। आप आत्मायें संगमयुग पर इतनी रॉयल बनी हो जो आज तक आपके जड़ चित्रों की पूजा कितनी रॉयल्टी से होती है ! तीनों ही काल में नम्बरवन रॉयल हो। लेकिन इस रूहानी रॉयल्टी का फाउन्डेशन सम्पूर्ण प्योरिटी है। तो अपनी इस रॉयल्टी की झलक और फलक हर चरित्र से अनुभव कराओ। साधारण चलन न हो। इस सिम्पल ब्राह्मण जीवन में अपने बोल, चाल, सम्बन्ध-सम्पर्क वा रूहानी व्यवहार से प्योरिटी की रॉयल्टी को प्रत्यक्ष करो।

१५. जैसे स्थूल रॉयल आत्मायें कभी भी छोटी-छोटी बातों में, छोटी-छोटी चीजों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती हैं, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनतीं। ऐसे रूहानी रॉयल आत्मा किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में जो रॉयल नहीं हैं, उसमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं देंगीं। रूहानी रॉयल्टी अर्थात् किसी भी हल्की बात में बुद्धि रूपी आंख नहीं डूब सकती। मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल नहीं निकल सकते। उनका हर बोल युक्तियुक्त अर्थात् व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त भाव और भावना वाला होगा।

सम्पूर्ण समर्पण बुद्धि

१. ब्रह्मा बाप ने हिम्मत का पहला क्रदम समर्पणता का उठाया। तन को भी समर्पण किया, मन को भी सदा मन्मनाभव की विधि से सिद्धि-स्वरूप बनाया, धन को बिना कोई भविष्य की चिंता के निश्चिन्त बन समर्पित किया, सम्बन्ध को भी समर्पित कर लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन किया; छोड़ा नहीं, कल्याण किया। मैं-पन वा अभिमान की बुद्धि भी समर्पित की। इसलिए तन, मन, बुद्धि से निर्मल, शीतल, सुखदाई बन गये। समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, मन निश्चित रहा, चेहरे पर सदा बेफिक्र बादशाह के चिह्न देखे। तो ऐसे फालो फादर करो।

२. साकार ब्रह्मा बाप ने सिर्फ एक 'सम्पूर्ण' शब्द को विशालता से धारण कर अपनी कर्मातीत स्थिति के लक्ष्य को प्राप्त किया। सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना सम्पूर्ण। 'समर्पण' शब्द की बहुत विशालता है — (१) हर संकल्प समर्पण हो अर्थात् व्यर्थ संकल्प न आये, (२) हर सेकण्ड अर्थात् समय समर्पण हो, (३) कर्म, (४) सम्बन्ध और (५) सम्पत्ति भी समर्पण हो। तो ब्रह्मा बाप ने बुद्धि से यह सब-कुछ समर्पण कर सम्पन्न स्थिति को प्राप्त किया। ऐसे फालो फादर करो।

३. जैसे समर्पण समारोह मनाते हो ऐसे स्वभाव-संस्कार समर्पण, देह-अभिमान का समर्पण अर्थात् देह की कर्मेन्द्रियों के लगाव का समर्पण और सम्बन्धों का समर्पण समारोह मनाओ। जब ऐसा समारोह मनायेंगे तब सम्पूर्ण-मूर्त वा साक्षात्कार-मूर्त बनेंगे। फिर सम्पूर्ण सुहाग वा श्रेष्ठ भाग्य का दहेज स्वतः मिलेगा। ऐसा सुन्दर समर्पण समारोह मनाने के लिए सदैव एक स्लोगन याद रखना कि 'जो कर्म मैं करूंगा/करूंगी मुझे देख सभी करेंगे'। अपने को अकेला नहीं समझना, आप एक-एक के पीछे आपकी राजधानी है, जो आपको देख रही है।

४. विनाशी सम्पत्ति को समर्पण करना कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन जो अविनाशी सम्पत्ति सुख, शान्ति, पवित्रता, प्रेम, आनंद की प्राप्ति जन्म-सिद्ध अधिकार के नाते होती है, उसे भी अन्य आत्माओं की सेवा में समर्पण कर

देना; जैसे ब्रह्मा बाप ने बच्चों की खुशी वा शान्ति में स्वयं की शान्ति अनुभव की, ऐसे अन्य आत्माओं को खुशी वा शान्ति देने में शान्ति का अनुभव हो । लौकिक सम्पत्ति और ईश्वरीय सम्पत्ति को भी समर्पण करके साक्षी स्थिति में स्थित रहना — यही है सम्पूर्ण समर्पण-बुद्धि बन सफलतामूर्त बनना ।

५. सम्पूर्ण समर्पण उसे कहा जाता है जिसमें अपनापन बिल्कुल समा जाये । जब कोई चीज़ किसमें समा जाती है तो समान हो जाती है । तो अपनापन जितना समायेंगे उतना ही समानतामूर्त बनेंगे । जैसे कोई मगन अवस्था में होता है तो उनके नयन एकटक हो जाते हैं । ऐसे दिव्यबुद्धि का यह नेत्र भी सदैव एकटक, एकरस रहे । वह तब होगा जब दिव्य-बुद्धि यथार्थ रीति से स्वच्छ होगी । ऐसी स्वच्छ बुद्धि बनाने के लिए बुद्धि को सम्पूर्ण समर्पित कर दो अर्थात् बुद्धि में एक बाप के सिवाय दूसरा कुछ भी याद न आये ।

६. सम्पूर्ण समर्पण बुद्धि अर्थात् संकल्प सहित सब-कुछ विल करने वाले । शरीर का भान छोड़ना और संकल्प तक बिल्कुल विल कर देना — यही है सम्पूर्ण समर्पणता, जिससे ही माइट आती है । जैसे एक शरीर छोड़ दूसरा लिया जाता है, ऐसे यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जाए । एक आंख में सम्पूर्ण स्वरूप और दूसरी आंख में भविष्य स्वरूप प्रत्यक्ष देखने में आये, ५ तत्वों का शरीर होते भी लाइट स्वरूप अनुभव हो । समर्पण होना अर्थात् मेरापन खत्म, ज़िम्मेवारी उतर गई ।

७. अपने शरीर से वा सम्बन्ध से सहज नष्टोमोहा बनने के लिए अपने आपको समर्पण कर दो । समर्पण करना अर्थात् बाप को जो चाहिए वो कराये, हम निमित्त हैं । चलाने वाला जैसे चलाये, हमको चलना है । ऐसा समझने से मुश्किलात नहीं फील होगी । जो जितना स्वयं को समर्पण करते हैं, उतना ही बाप भी उन बच्चों के आगे समर्पण होते हैं अर्थात् जो बाप का खज़ाना है वह स्वतः ही उनका बन जाता है । समर्पण होना और दूसरों को समर्पण कराना, यही ब्राह्मणों का धन्धा है ।

८. सम्पूर्ण समर्पण होना अर्थात् माया का जो भी बल है उसे त्यागना । माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना है ।

सम्पूर्ण समर्पण होने के लिए तीन शिक्षायें याद रखो — (१) मन्सा के लिए मुख्य शिक्षा मिली है कि देह सहित देह के सब सम्बन्धों का त्याग कर मामेकम् याद करो, (२) वाचा के लिए शिक्षा मिली है कि मुख से सदैव रत्न निकालो एवं ज्ञान-रत्नों का दान दो और (३) कर्मणा के लिए याद रखो कि 'जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सभी करेंगे' और 'जो करेंगे सो पायेंगे' । यह तीन शिक्षायें याद रखने से अविनाशी सम्पूर्ण समर्पण की लिस्ट में आ जायेंगे ।

९. बाप समान सम्पूर्ण समर्पण बनने के लिए अपने तन-मन-धन और समय का पोतामेल निकालो । इन चारों को कहाँ और कैसे लगाया—यह स्पष्ट और शॉर्ट में नोट करो । जब सम्पूर्ण समर्पण हो गये तो जैसे कि नया जन्म ले लिया, फिर पिछले संस्कार इमर्ज हो नहीं सकते । सम्पूर्ण समर्पण होने वालों को सर्विस भी सम्पूर्ण करनी है । चेक करना है कि मन्सा-वाचा-कर्मणा कितनी आत्माओं के अन्दर बापदादा का स्नेह और सम्बन्ध प्रत्यक्ष किया है । जैसे बापदादा ने बच्चों को सृष्टि के सामने प्रत्यक्ष किया है, ऐसे बच्चों को अपने हर कर्तव्य वा हर बात से बापदादा को अनेक आत्माओं के आगे प्रत्यक्ष करना है ।

१०. सम्पूर्ण समर्पण होने वालों का ही गायन है कि पहाड़ों पर गल कर खत्म हो गये अर्थात् अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए । तो सम्पूर्ण समर्पण होना अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध और समय — सब में अर्पण होना । जब मन भी समर्पण हो गया तो मन को बिना श्रीमत के यूज नहीं कर सकते । मन समर्पण है तो बाकी सब उस तरफ स्वतः लग जाता है । व्यर्थ संकल्प, विकल्प समर्पण हो ही जाते हैं । सम्पूर्ण समर्पण वालों के मन में सिवाय बापदादा के गुण, कर्तव्य और सम्बन्ध के कुछ भी सूझता नहीं ।

११. आईवेल के लिए पुराने संस्कारों की प्रापटीं जो किनारे कर रख लेते हो, समझते हो — रोब के संस्कार नहीं होंगे तो प्रवृत्ति कैसे चलेगी, लोभ के संस्कार नहीं होंगे तो कमाई कैसे कर सकेंगे वा अहंकार का रूप नहीं होगा तो लोगों के सामने पर्सनैलिटी कैसे देखने में आयेगी यह जो पुराने संस्कारों का खज़ाना समय पर यूज करने के लिए रख लिया है इसकी सूक्ष्म चेकिंग कर इसे समर्पण कर दो । नहीं तो यह अंश वृद्धि को पाते-पाते विघ्न रूप बन

विजयी बनने में हार खिला देगा । जरा भी किसी कोने में पुराने संस्कारों की निशानी न हो, तब कहेंगे ब्रह्मा बाप समान सर्वस्व त्यागी, सर्व समर्पण वा ट्रस्टी ।

१२. सम्पूर्ण समर्पण उसे कहा जाता है जो श्वाँसों-श्वॉस स्मृति में रहे । एक श्वाँस भी विस्मृति का न हो । ऐसे श्वाँसों-श्वॉस स्मृति में रहने वाला अर्थात् देह के अभिमान को भी समर्पण करने वाला ही सम्पूर्ण समर्पण है । उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है । उनमें सहनशीलता का गुण ज़रूर होगा और सहनशील होने के कारण सदा हर्षित और शक्तिशाली दिखाई देंगे । चेहरे पर निर्बलता के चिह्न नहीं होंगे । सम्पूर्ण समर्पण होना अर्थात् मन्मनाभव की स्थिति में स्थित हो जाना । मन की स्थिति ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं ।

१३. जब कोई भी चीज़ समर्पण कर दी जाती है तो अपना वा अन्य का अधिकार समाप्त हो जाता है । जब तक अपना वा अन्य का अधिकार रहता है तो सिद्ध है कि सर्व समर्पण में कमी है । इसलिए समानता नहीं आती । जो सोच-सोचकर समर्पण होते हैं उनके पुरुषार्थ में भी वही सोच अर्थात् व्यर्थ संकल्प विघ्न रूप बनते हैं । जैसे बाप और दादा समान तब बने जब सब-कुछ समर्पण कर दिया, समर्पणता से सेकण्ड में समानता आई । ऐसे समर्पण करने की शक्ति धारण करो ।

१४. बुद्धि सहित सम्पूर्ण समर्पण होने वाले ही सदा योगयुक्त और बन्धनमुक्त होंगे । योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बंधन से भी मुक्त । जब देह के बंधन से मुक्त हो गये तो सर्वबन्धन-मुक्त बन ही जाते हैं । जो योगयुक्त होगा उनका हर संकल्प, हर कर्म युक्तियुक्त होगा । इसलिए उनके हर कर्म से बापदादा की प्रत्यक्षता होगी । सभी के मुख से यही बोल निकलेंगे कि यह तो जैसे साक्षात् बाप समान हैं । ऐसे हर कर्म दर्पण तब बनता है जब संकल्पों सहित देह-अभिमान को भी अर्पण करते हो । अर्पण करने से अपनापन वा लगाव मिट जाता है ।

१५. जैसे भोग लगाते हो, बाप के आगे अर्पण करते हो तो उसमें शक्ति भर जाती है । ऐसे हर संकल्प, हर क़दम बाप को अर्पण करो । बाप की याद

अर्थात् बाप के कर्तव्य की याद हो । जितना अर्पणमय के संस्कार होंगे उतना पावरफुल दर्पण बनेंगे, हर संकल्प निमित्त बनकर करेंगे । निमित्त बनना अर्थात् नम्रचित बनना । जो नम्रचित होते हैं वह झुकते हैं । जितना संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी । झुकना अर्थात् झुकाना ।

इकॉनामी के साथ-साथ फ्राखदिल

१. साकार बाबा जितना ही फ्राखदिल थे, उतना ही सदा हर कर्म से इकॉनामी का भी पाठ पढ़ाते रहे। उनके जीवन में दोनों बातों का बैलेन्स था। बाबा कहते — “बच्चे ! सदैव कोई भी कार्य होता है तो उसमें जरा भी अपनापन न हो। हर बात में एक का ही नाम लो और इकॉनामी वाले बनो। संकल्पों की भी इकॉनामी करो तो साथ-साथ समय और ज्ञान-खज़ाने की भी इकॉनामी करो। कभी कोई खज़ाना व्यर्थ न जाये। साथ-साथ फ्राखदिल अर्थात् दाता बन दूसरों की सेवा में सर्व खज़ाने लगाओ अर्थात् सफल करो तो बढ़ता जायेगा।”

२. फ्राखदिल बन अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प-शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करते रहो। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होकर जाये। ऐसे अखण्ड दानी बनो। किसी भी आत्मा से कुछ लेकर के देने की इच्छा न हो। संकल्प में भी यह न आये कि यह करे तो मैं करूँ। आप अपनी शक्तियों के खज़ाने से शक्तिहीन भिखारी आत्माओं को शक्तिशाली बनाओ। इसमें इकॉनामी नहीं करो।

३. अपने प्राप्त किये हुए गुण, शक्तियां, विशेषतायें सबमें महादानी बनने में फ्राखदिल बनो। वाणी द्वारा ज्ञान-धन दान करना यह — कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन गुण-दान वा गुण देने में सहयोगी बनो। अपने गुणों से दूसरों को गुणवान बनाना, विशेषता भरने में सहयोगी बनना — इसको कहा जाता है महादानी, फ्राखदिल। ऐसे फ्राखदिल बच्चे अपनी शुभ भावना द्वारा सर्व को आगे बढ़ाते रहेंगे। यह उदारचित्त, फ्राखदिल बनना अर्थात् ब्रह्मा बाप को फालो करना।

४. सिर्फ स्थूल धन की बचत को इकॉनामी नहीं कहते हैं। वह भी जरूरी है लेकिन समय भी धन है, संकल्प भी धन है, शक्तियां भी धन है — इन सबकी भी इकॉनामी हो, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। एकनामी और इकॉनामी के संस्कार वाले विशेष दो शक्तियों का अनुभव करते हैं — एक टचिंग, दूसरा

विदेही बनने का अभ्यास करो तो सर्व कमजोरियां प्रायः लोप हो जायेंगी।

३७

कैचिंग। जितना बुद्धि स्पष्ट होगी उतना बाप के डायरेक्शन को स्पष्ट कैच कर सकेंगे। अगर एकनामी वा इकॉनामी के संस्कार नहीं होंगे तो बाप के डायरेक्शन में मनमत मिक्स हो जायेगी।

५. अपनी भविष्य तस्वीर अच्छी बनानी है तो फ्राखदिल बन अपने संकल्प, कर्म, वाणी, समय, श्वास — सभी खज़ानों को यूज करो। कइयों के पास यह खज़ाने होते हुए भी वे यूज नहीं करते हैं, इकॉनामी करते हैं। इसमें जितना फ्राखदिल बनेंगे उतना फर्स्टक्लास बनेंगे। सिर्फ व्यर्थ कार्य में लगाने में इकॉनामी करो। श्रेष्ठ कार्य में इकॉनामी नहीं करनी है। यथार्थ इकॉनामी है — एकनामी बनना। एक का नाम सदा स्मृति में रहे। ऐसा ‘एकनामी’ इकॉनामी कर सकता है।

६. ब्राह्मण परिवार में फ्राखदिल उसे कहा जाता है जो सदा चलते-फिरते, देखते सबको स्नेह देने का कार्य करे। ज्ञान देना और लेना — अभी यह स्टेज पास हो गई, अभी स्नेह की लेन-देन करो। जो भी सामने आये, सम्बन्ध में आये — स्नेह दो और लो। इस दान में महादानी अर्थात् फ्राखदिल बनो। इसमें इकॉनामी नहीं करो। किसी के प्रति संकल्प में भी स्नेह के सिवाय और कोई उत्पत्ति न हो। जब सर्व के प्रति स्नेह होगा तो सहयोग स्वतः प्राप्त रहेगा।

७. फ्राखदिल बनने के लिए अपने सर्व खज़ानों को चेक कर जमा करो। खर्च को फुलस्टॉप दो। दूसरों को देना — यह खर्चा नहीं है, यह देना तो लाख पाना है, वह जमा के खाते में हुआ। लेकिन जब अपने विघ्नों के प्रति शक्तियों का प्रयोग करते हो तो शक्तियां खर्च होती हैं। विघ्न को समाप्त करने में जो समय खर्च करते हो या ज्ञान-धन खर्च करते हो, यह खर्चा अभी से बचाना अर्थात् इसकी इकॉनामी करना है। इसके लिए बचत की स्कीम बनाओ। अखुट खज़ाने के मालिक के बालक सो मालिक बन फ्राखदिली से दूसरों की सेवा में सर्व खज़ाने सफल करो।

८. हर खज़ाने को इकॉनामी से यूज करने के लिए अमृतवेले मन, वाणी और कर्म का बजट बनाओ। प्लैन फिक्स करो कि बुद्धि द्वारा क्या सोचना है, वाणी और कर्म द्वारा क्या-क्या करना है। फिर बीच-बीच में चेक करो कि हर बात बजट प्रमाण की? इकॉनामी से चलने के लिए प्लैनिंग बुद्धि

बनो । व्यर्थ को बचाओ । मास्टर रचयिता बन फ्राखदिली से रचना की पालना करनी है । व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय और व्यर्थ शक्ति जो खर्च कर देते हो उन सबकी इकॉनामी करो । इसके लिए सिर्फ अटेन्शन और चेकिंग के आधार से अपना नियम मजबूत बनाओ ।

९. सदैव ऐसे समझो कि हम दाता के बच्चे दाता हैं, एक सेकण्ड भी देने के सिवाय रह नहीं सकते । इसी को कहा जाता है महादानी, फ्राखदिल । जैसे मन्दिर का दरवाज़ा सदैव खुला रहता है, ऐसे दाता के बच्चों का देने का द्वार सदा खुला रहे । जितना-जितना देने में बिजी होंगे उतना और सब बातें सहज ही क्रॉस कर लेंगे, जो बातें मुश्किल लगती हैं वह सहज हो जायेंगी । क्योंकि महादानी फ्राखदिल बनने से और सब प्राप्तियां स्वतः होती हैं । सिर्फ दाता बनने के लिए सर्व भण्डारे भरपूर चाहिएं ।

१०. जैसे साकार में बापदादा का मुख्य स्लोगन रहा — “कम खर्च बालानशीन” । ऐसे कोई भी कार्य करते यह स्मृति रहे कि खर्चा कम हो और कार्य अच्छे ते अच्छा हो । इसको ही कहा जाता है इकॉनामी से चलना । संकल्प, श्रॉस, समय और सम्पत्ति की इकॉनामी करते हुए हर कार्य श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ करो । सदैव अपने को बेहद का सेवाधारी समझकर चलो । सिर्फ सुहेज मनाने में ही समय न चला जाए । सुहेज मनाने में फ्राखदिली करेंगे तो सेवा भूल जायेगी ।

११. कई बार अपनी सर्विस छोड़ सिर्फ दूसरों की सर्विस में लग जाने से समय और संकल्प ज्यादा खर्च कर लेते हो, इस कारण जो जमा होना चाहिए वह नहीं कर पाते और जमा न होने कारण वह नशा वा खुशी नहीं रहती । अभी-अभी कमाया, अभी-अभी खाया तो वह अल्पकाल का हो जाता है । तो अब जमा करना सीखो, २१ जन्मों के लिए जमा करना है तो सर्व खजानों की इकॉनामी करो । यदि कमाया और बांट दिया, तो दान करने की खुशी होगी लेकिन शक्ति नहीं होगी । इसलिए पहले समाने की शक्ति धारण करो, फिर फ्राखदिल बन बांटो ।

१२. जैसे बाप के लिए कहा जाता है — सब भण्डारे भरपूर हैं । ऐसे आप बच्चों का भी सदा भण्डारा भरपूर रहे, कभी खाली न हो । जितना किसी को

देंगे उतना और ही बढ़ता जायेगा । इसलिए जो प्राप्तियां हुई हैं उनका दान करो । इसमें इकॉनामी नहीं करो । सिर्फ तीन बातों को ध्यान में रखकर चलो तो सफलता मिलती रहेगी — (१) जो भी क्रदम उठाते हो अथवा संकल्प वा वाणी में आते हो उसमें एक का नाम हो अर्थात् एकनामी रहो, (२) एक की मत पर चलने वाले एकमत बनो और (३) हर कर्म वा चलन में सर्व प्रकार की इकॉनामी करो ।

१३. फ्राखदिल बन हर संकल्प, बोल और कर्म को सेवा में लगाना अर्थात् पदमों की कमाई जमा करना । किसी भी खज़ाने को विधि से कार्य में लगाना अर्थात् वृद्धि करना । विनाशी धन खर्च करने से खुटता है । अविनाशी धन खर्च करने से पदमगुणा बढ़ता है । इसलिए कहावत है — खर्च करो और खाओ । जितना खर्च करेंगे, खायेंगे, उतना शाहों का शाह बाप और भी ज्यादा मालामाल बना देंगे । इसलिए इसमें इकॉनामी के बजाय जो फ्राखदिल बन प्राप्त हुए खज़ाने के भाग्य को सेवा में लगाते हैं वह आगे बढ़ते हैं ।

१४. कोई भी आत्मा आपके सम्बन्ध वा सम्पर्क में आये, वह आप विशेष आत्मा से दातापन की अनुभूति करे । जैसे साकार में अनुभव किया — कोई भी बाप के पास आते थे तो खाली हाथ नहीं भेजते थे, स्थूल रीति में भी यादगार के रूप में सौगात जरूर देते । यह निशानी है फ्राखदिली की । तो ऐसे फालो फादर करो । किसी के भी संकल्प में यह न आये कि ये तो लेने वाले हैं । हर आत्मा को सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद, खुशी, सहयोग, हिम्मत, उमंग किसी न किसी विशेषता के दातापन की अनुभूति हो । तब कहेंगे विशालबुद्धि, फ्राखदिल ।

१५. ऐसे एकनामी और इकॉनामी वाले बनो जो बाप भी आपकी माला सिमरण करे । समय, शक्तियां और स्थूल धन लौकिक में इकॉनामी कर अलौकिक कार्य में फ्राखदिली से लगाते चलो । अपने आराम का समय भी अपने आराम के लिए नहीं, विश्व-सेवा के लिए है । जैसे साकार बाप को देखा — बाप ने अपने आराम का समय भी सेवा में दिया । ऐसे फालो फादर । निमित्त मात्र लौकिक कार्यों को निभाते हुए स्थूल धन वा समय को अलौकिक सेवा में सफल कर त्यागवान सो अविनाशी भाग्यवान बनो ।

निमित्त और निर्माण

१. जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं, आधार समझने के कारण अधीन नहीं होते हैं। टेम्पेरेरी देह में आते हैं। ऐसे आप समझो कि हमने भी निमित्त मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त मात्र समझना है। दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त समझना है, तब निर्माणता आयेगी। फिर सफलता आपके आगे-आगे चलेगी। सर्विस की सफलता का मुख्य आधार है ही नम्रता। जितनी नम्रता, उतनी सफलता। नम्रता के गुण से सब आपके आगे नमन करेंगे।

२. कोई भी निर्माण का कार्य करने के लिए निर्माण बनना है। यदि निर्माणता नहीं तो निर्माण नहीं कर सकते। इसके लिए एक सलोगन सदा याद रखो — कोई भी कार्य हो, कैसा भी सरकमस्टांश सामने हो, 'पहले आप' का महामन्त्र स्मृति में रख स्वयं को झुकना है। स्वयं को झुकाना ही विश्व को अपने आगे झुकाना है। इसलिए सदैव एक-दो में यही वृत्ति, दृष्टि और वाणी में रहे कि 'पहले आप'। जैसे बापदादा ने कभी भी संकल्प, बोल व कर्म में यह नहीं दिखलाया कि 'पहले मैं', ऐसे फालो फादर।

३. यदि किसी आत्मा को बाप द्वारा मिला हुआ खज़ाना देने के निमित्त बनते हो तो यही स्मृति रहे कि बाप से लिया हुआ खज़ाना दे रहे हैं। इस स्मृति से श्रेष्ठ स्वमान का नशा भी रहेगा तो कर्म वा नयनों में सदैव नम्रता भी रहेगी। विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों का सेवाधारी बने। तो ऐसे फालो फादर। जितना ऊंच उतने ही निर्माण, यह बैलेन्स रखने से कभी भी नुकसान नहीं होगा।

४. जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के रूप में करके दिखाया। ऐसे प्रैक्टिकल में आप बच्चों को फालो करना है। यदि हर कर्म संयम के प्रमाण है तो विजय हुई पड़ी है, यह स्वमान ही निर्माण बना देगा। जैसे बाप निर्माण बन बच्चों को रिगार्ड देकर राय-सलाह देते रहे। ऐसे संयम के प्रमाण एक-दो को रिगार्ड देना — यह भी निर्माण बनना है। निमित्त बनने

वालों को अभी सिर्फ कर्म पर ध्यान नहीं देना है लेकिन श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाने के निमित्त बनना है। इसके लिए सदा यह सलोगन स्मृति में रहे कि जैसी मुझ निमित्त बनी हुई आत्मा की वृत्ति होगी ऐसा वायुमण्डल बनेगा।

५. किसी भी सेवा के निमित्त बनने का चांस मिलना — यह भी एक विशेषता की निशानी है। यह निमित्त बनने का पार्ट स्वयं को भी लिफ्ट देता है। औरों के निमित्त बनना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न बनाना। तो निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि करो। लेकिन निमित्त बनने के साथ-साथ स्नेही भी बनना है। क्योंकि स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे न नम्रचित। लेकिन कहीं-कहीं अति स्नेह के कारण निर्माणता का गुण भी नुकसान करता है। इसलिए निर्माणता के साथ-साथ मालिकपन का नशा भी चाहिए।

६. चरित्र में सदा निर्माणता हो तो विश्व-नवनिर्माण का कर्तव्य ऑटोमेटिकली चलेगा। निर्माणता अर्थात् निरहंकारी। निर्माणता से देह-अहंकार स्वतः खत्म हो जाता है। ऐसे निर्माण स्थिति में रहने से निर्वाण स्थिति में सहज स्थित हो सकते हो और जब वाणी में भी आयेंगे तो भले शब्द कम होंगे लेकिन यथार्थ वा शक्तिशाली ज्यादा होंगे। एक शब्द में भी हजारों शब्दों का रहस्य समाया हुआ होगा, जिससे व्यर्थ वाणी स्वतः समाप्त हो जायेगी। जैसे ज्ञान का सार छोटे से बैज में समाया हुआ है, ऐसे निमित्त और निर्माण स्थिति में स्थित रहने से एक शब्द में सर्व ज्ञान के राज समाये हुए होंगे।

७. ऐसे निमित्त बनो जो आपको देखकर अनेकों का उमंग-उत्साह स्वतः बढ़ता रहे। सिर्फ यही स्मृति रहे कि 'मैं मास्टर विश्व-निर्माता हूँ।' इसी स्मृति से हर संकल्प वा कर्म करने से निर्माणता वा सरलता का गुण स्वतः आ जायेगा। विश्व-सेवा के लिए कोई भी डॉयरेक्शन मिले तो एवररेडी रहो। क्या होगा, कैसे होगा... — जो ट्रस्टी वा निमित्त होते हैं वह यह कभी नहीं सोचते। निमित्त समझने से मन की स्थिति स्वतः उपराम हो जायेगी। उनका लगाव-झुकाव से सहज किनारा हो जाता है।

८. सारे विश्व में कितनी थोड़ी-सी कोटों में कोई आत्मायें हैं जिन्हें स्वयं

भगवान् ने विश्व-सेवा के निमित्त बनाया है। यह रूहानी नशा जितना ही ऊंच है, उतना ही नम्र बनाता है। देह-अभिमान वाले घमण्ड से, अभिमान से ऊंचा समझते और सच्चे नशे वाले नम्रचित बन जाते हैं। अभिमान नम्रचित, निर्माण बनने नहीं देता। सेवाधारी की विशेषता ही है वह स्वयं सदा झुका हुआ होगा और नम्रता के आधार से सबको अपने आगे झुकायेगा। उनके कर्म में चलते-फिरते, बोलते रूहानियत दिखाई देगी। ऐसी नम्रचित आत्मा ही सुखदाता बन सकती है।

९. जितना निमित्त और निर्माण होकर चलेंगे उतना सेवा में सहज वृद्धि होगी। कभी भी 'मैंने किया, मैं ही कर सकता हूँ' — यह मैं-पन का भाव नहीं रखना। यह मैं-पन ही सर्विस में रुकती कला आने का आधार है। जब निमित्त के बजाय मैं-पन आ जाता है तो सर्विस ढीली हो जाती है, फिर अपनी खुशी वा नशा ही गुम हो जाता है। तो कभी भी न स्वयं इस स्मृति से दूर होना और न दूसरों को बाप से वर्सा लेने से वंचित करना। जो दूसरे के आगे निमित्त बनते हैं उन्हें स्वतः ही सब बातों का अटेन्शन रहता है। निमित्त सेवाधारी बनना अर्थात् फालो फादर करना।

१०. स्वयं को निमित्त समझने से दो विशेषतायें साकार रूप में दिखाई देंगी — (१) सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे, (२) सदा सन्तुष्टता का फल खाते और खिलाते रहेंगे। 'मैं निमित्त हूँ' — इस स्मृति से न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करेंगे। 'मैंने किया' — यह कभी वर्णन नहीं करेंगे। 'मैं' शब्द समाप्त हो जायेगा। निमित्त समझकर चलना ही सेवाधारी की विशेषता है। जैसे बड़े से बड़ा सेवाधारी बाप है, लेकिन उनकी विशेषता ही है जो मालिक होते हुए भी सदा अपने को निमित्त समझा। इसीलिए सबका प्रिय हो गया। तो 'निमित्त हूँ, न्यारा और प्यारा हूँ' — यही स्मृति में रखकर चलो।

११. निमित्त आत्माओं को लोकसंग्रह अर्थ यदि किसी भी बात का डायरेक्शन मिलता है तो सदैव 'जी हाँ, जी हाजिर' करना चाहिए। यह झुकना वा नीचे होना नहीं है लेकिन ऊंचा जाना है। मानना अर्थात् माननीय बनना, बड़ों को मान देना अर्थात् स्वमान लेना। इसके लिए अपने मान, शान वा पर्सनैलिटी का त्याग कर दो। जैसे ब्रह्मा बाप इतना निर्माण बन सेवाधारी

बने, जो बच्चों के पांव दबाने के लिए भी तैयार रहे। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से अच्छा भाषण कर सकते हैं। "पहले मैं" कभी नहीं कहा। "आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे" कहा। तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊंचा जाना है।

१२. महानता की निशानी है निर्मानता। जितना निर्माण उतना सबके दिल में महान् स्वतः ही बनेंगे। बिना निर्मानता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्मानता, निरहंकारी सहज बनाती है। निर्मानता का बीज महानता के फल प्राप्त कराता है। निर्मानता सच्चे दिल की दुआयें प्राप्त करने का सहज साधन है। तो वृत्ति, दृष्टि, वाणी, सम्बन्ध सम्पर्क सब में निर्मानता का गुण धारण करो। साथ-साथ जहाँ 'मैं' शब्द यूज़ करते हो वहाँ फौरन अपना ओरीजिनल निराकारी-स्वरूप सामने लाओ। इस स्मृति से स्वतः देह भान खत्म हो जायेगा। देह के बंधन से भी मुक्त हो आकारी फरिश्ता बन जायेंगे।

१३. जो बच्चे सदा स्वयं को निर्मानचित की विशेषता से चलाते हैं वह सहज सफलता प्राप्त करते हैं। यह निर्मानता ही आगे बढ़ने का सहज साधन है। निर्माण बनना ही स्वमान है और सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्माण बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है। निमित्त बनने वालों पर बहुत बड़ी जवाबदारी होती है। जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त बने, तो उन्हें देखकर कितने ब्राह्मण तैयार हुए! ऐसे आप कोई भी कार्य करते हो तो सदा यह स्मृति रहे कि मैं अनेक आत्माओं के प्रति निमित्त हूँ, जो और जैसे मैं कर्म करूंगा, मुझ निमित्त आत्मा को देख और सब करेंगे। कर्म कैसा भी हो लेकिन स्थिति सदा योगयुक्त और युक्तियुक्त हो—इसको कहा जाता है फालो फादर।

१४. जो किसी भी सेवा के निमित्त बनता है उसे सेवा का प्रत्यक्षफल वा भविष्य फल प्राप्त होता ही है। जहाँ निमित्त भाव है, मैं-पन का भाव नहीं है वहाँ सदा उन्नति है। यह निमित्त भाव 'शुभ भावना, शुभ कामना' स्वतः ही जाग्रत करता है। निमित्त समझने से करावनहार बाप की याद रहती है और वह करावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ कार्य कराते हैं। इसलिए 'ट्रस्टी हैं', निमित्त

हैं — यह भावना फलदायक है । जो निमित्त अर्थात् ट्रस्टी समझकर चलते हैं वह सदा हल्के रहते हैं और हल्के होने के कारण उनमें निर्णय-शक्ति भी श्रेष्ठ रहती है । जिस कारण सदा सफलता का फल मिलता है ।

१५. सेवा का जो भी चांस मिलता है, उसमें स्वयं को निमित्त समझ आगे बढ़ते रहो । सदा स्मृति रहे कि हम निमित्त बन आगे बढ़ने और बढ़ाने वाले हैं । निमित्त और निर्माण की विशेषता को सदा साथ रखो, यही विशेषता सदा विशेष बनायेगी । निमित्त बनने का पार्ट स्वयं को भी लिफ्ट देता है । औरों के निमित्त बनना अर्थात् स्वयं सम्पन्न बनना । तो निमित्त बनो और साथ-साथ भावना वा श्रद्धा के आधार पर दृढ़ता से निर्माणता की विशेषता को धारण करो । दृढ़ता से सफलता प्राप्त होगी और निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि होती रहेगी ।

१६. जितना सेवाओं में स्वमान हो उतना ही निर्माण भाव हो । 'करावनहार बाप ने निमित्त बन सेवा कराई' — यह है निमित्त और निर्माण भाव । निमित्त बने, सेवा अच्छी हुई, वृद्धि हुई, सफलता-स्वरूप बने, — यह स्वमान तो अच्छा है । लेकिन सिर्फ स्वमान नहीं, निर्माण-भाव का भी बैलेन्स हो । यह बैलेन्स ही सदा सहज सफलता-स्वरूप बना देता है । स्वमान भी जरूरी है, लेकिन स्वमान और निर्माण दोनों का बैलेन्स नहीं तो स्वमान देह-अभिमान में बदल जाता है । याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले स्वमान और निर्माण का भी बैलेन्स रखते हैं । इसी बैलेन्स से सर्व की ब्लैसिंग प्राप्त होती है ।

सदा सर्व के प्रति शुभचिंतक, शुभ कामना और शुभ भावना

१. जैसे ब्रह्मा बाप ने विशेष अपनी शुभचिंतक वृत्ति से सारे विश्व की सेवा की, सर्व के प्रति शुभ कामना और शुभ भावना रखी, ऐसे फालो फादर करो । आप शुभचिंतक आत्माओं की शुभ संकल्प रूपी किरणें सूर्य की किरणों मिसल विश्व के चारों ओर फैलती रहें । आजकल कई आत्मायें समझती हैं कि कोई स्प्रिरिचुअल लाइट गुप्त रूप में अपना कार्य कर रही है । लेकिन यह लाइट कहाँ से ये कार्य कर रही है, वो जान नहीं सकते । 'कोई है' — यहाँ तक टचिंग होनी शुरू हो गई है । आखिर ढूँढ़ते-ढूँढ़ते स्थान पर पहुँच ही जायेंगे । इसलिए अपनी शुभचिंतक वृत्ति द्वारा और तीव्र गति से सेवा करो ।

२. शुभचिंतक बनना यही सहज रूप की मन्सा सेवा है, जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो । आप सबके शुभचिंतक बनने के वायब्रेशन्स वायुमण्डल को वा चिन्तित आत्माओं की वृत्ति को बहुत सहज परिवर्तन कर देंगे । शुभचिंतक आत्माओं के थोड़े समय का सम्पर्क भी अनेक आत्माओं की चिन्ताओं को मिटाने का आधार बन जाता है । आज विश्व को शुभचिंतक आत्माओं की आवश्यकता है । इसलिए आप शुभचिंतक आत्मायें विश्व को अति प्रिय हो । तो जो भी सम्पर्क में आये वह अनुभव करे कि इन जैसे शुभचिंतक दुनिया में कोई नहीं हैं ।

३. 'शुभ कामना और शुभ भावना' — यही सेवा का फाउन्डेशन है । आपकी शुभ भावना बाप में भी शुभ भावना बिठाती है । शुभ भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प । सब शक्तियों की गति से संकल्प की गति तीव्र है । आप किसी आत्मा के प्रति वा बेहद विश्व की आत्माओं प्रति शुभ भावना रखते हो अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करते हो कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए । तो आपका संकल्प उत्पन्न होना और उस आत्मा को अनुभूति होगी कि मुझ आत्मा को किसी विशेष सहयोगी से शान्ति वा शक्ति मिल रही है । लेकिन इस सूक्ष्म सेवा के लिए दो बातों का अटेन्शन चाहिए

— (१) एकान्त और (२) एकाग्रता ।

४. बेहद विश्व-सेवा के प्लैन को सहज सफल बनाने का आधार आपकी शुभचिंतक स्थिति है । वैराइटी प्रकार की आत्मायें सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगी, ऐसी आत्माओं के प्रति शुभचिंतक बनना अर्थात् उन आत्माओं को हिम्मत के पंख देना है । क्योंकि सर्व आत्मायें चिंता की चिंता पर रहने के कारण अपनी हिम्मत, उमंग-उत्साह के पंख कमजोर कर चुकी हैं । आप शुभचिंतक आत्माओं की शुभ भावना उनके पंखों में शक्ति भरेगी और आपकी शुभ भावनाओं के आधार से उड़ने लगेंगे अर्थात् सहयोगी बनेंगे ।

५. सर्व का सहयोग प्राप्त करने का आधार शुभ चिंतक स्थिति है । जो सर्व के प्रति शुभ चिंतक है उनको सर्व से सहयोग स्वतः प्राप्त होता है । शुभचिंतक भावना औरों के मन में सहयोग की भावना सहज और स्वतः उत्पन्न करती है । शुभ चिंतक आत्माओं के प्रति हर एक के दिल में स्नेह उत्पन्न होता है और वह स्नेह ही सहयोगी बना देता है । जहाँ स्नेह होता है वहाँ समय, सम्पत्ति, सहयोग सदा न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं । इसलिए सदा शुभ चिंतन से सम्पन्न बनो । सर्व की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट प्राप्त करो ।

६. शुभचिंतक बन विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाले बनो । इस विशेषता से गायन-योग्य और पूजन-योग्य बनो । शुभचिंतक बन सर्व को खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की प्राप्ति कराओ । तो प्राप्ति की दुआयें, आशीर्वादिं किसको अधिकारी बच्चे बना देंगी, किसको भक्त आत्मा बना देंगी और आप पूज्य आत्मा बन जायेंगे । अपनी शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह से दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाने की सेवा करो ।

७. समय प्रमाण सेवा के सब साधन होते हुए भी साइलेन्स की शक्ति की सेवा आवश्यक है । सुनने-सुनाने से सब थके हुए हैं । तो साइलेन्स के साधनों द्वारा नज़र से निहाल करो । साइलेन्स का साधन है ही शुभ संकल्प, शुभ कामना, शुभ भावना । इस शुभ भावना से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर सकते हो । उन्हें शान्ति की शक्ति से सन्तुष्ट कर सकते हो ।

जैसे साइन्स के साधन गर्मी को सर्दी के वातावरण में बदल देते हैं, ऐसे यह रूहानी शक्ति रूहों को बदल सकती है । आपकी ऐसी शुभ वृत्ति हो जो लोगों को वायब्रेशन आये कि कोई शान्ति का पुंज, शान्ति की किरणें दे रहा है । सिर्फ अपने मन की एकाग्र वृत्ति द्वारा शुभ कामना, परोपकारी भावना चाहिए ।

८. अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो । इसकी विधि है — 'लाइट हाउस, माइट-हाउस' बनना । लाइट-हाउस एक ही स्थान पर स्थित होते दूर-दूर की सेवा करता है । ऐसे आप सभी एक स्थान पर होते भी अनेकों की सेवा अर्थ निमित्त बन सकते हो । इसमें स्थूल साधन वा चांस वा समय की प्राबलम नहीं है । सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है । मन-बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए । मन्मनाभव के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए ।

९. जैसे बहुत तेज बिजली होती है तो स्विच ऑन करने से जहाँ भी बिजली लगती है उस स्थान के कीटाणु सेकण्ड में भस्म हो जाते हैं । इसी प्रकार जब आप आत्मायें अपनी सम्पूर्ण पावरफुल स्टेज पर स्थित हो एक सेकण्ड में स्विच आन करेंगे — किसी आत्मा के प्रति शुभ संकल्प वा शुभ भावना रखेंगे कि इनका कल्याण हो; तो यह संकल्प आन करते ही उनकी भावना पूरी हो जायेगी । 'शुभ भावना, शुभ कामना' की विधि से जिसे जो आवश्यकता होगी उसे वह दे सकेंगे । विश्व-महाराजन बनने वाली आत्माओं के पास सर्व शक्तियों का वा शुभ भावनाओं का स्टॉक भरपूर होता है ।

१०. जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार भरा हुआ होता है अर्थात् बीज फल से भरपूर होता है । ऐसे आपके संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, सर्व को बाप समान बनाने की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दुःखी या अशान्त को स्वयं की प्राप्ति हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी, शान्त बनाने की भावना अर्थात् यह रस वा सार भरा हुआ हो । कोई भी संकल्प रूपी बीज इस सार से खाली अर्थात् व्यर्थ न हो, सदा कल्याण

की भावना से समर्थ हो, तब कहेंगे बाप समान विश्व-कल्याणकारी वा शुभचिंतक आत्मा ।

११. 'शुभ भावना, शुभ कामना' पुण्य का खाता बढ़ाती है । व्यर्थ भावना, घृणा की भावना वा ईर्ष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है । इसलिए बाप के बच्चे बने हो तो वर्से के अधिकारी अर्थात् पुण्य आत्मा बनो । पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान बुद्धि में रख चेक करो कि मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई पाप तो नहीं करते हैं ? अपने आपको चलाओ मत । ऐसे नहीं — यह तो होता ही है, सब में है । भले सब में हो लेकिन आप सेफ़ रहो, यही है शुभ कामना । अब व्यर्थ सुनना, सुनाना और सोचना बंद करो । शुभचिंतक बन बुरी बात को भी अच्छाई में परिवर्तन कर दो । सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो ।

१२. अनेक भावों से अनेक आत्मायें आपके सामने आती हैं । लेकिन आपकी तरफ़ से शुभ भावना की बातें ही ले जायें । सर्व के प्रति आपकी भावना शुभ हो । इसके लिए व्यर्थ बातों का स्टॉक खत्म कर खुशी की बातों का स्टॉक जमा करो । आपके हर बोल में रूहानियत हो । अपने आपको सदा व्यर्थ बातों से खाली और हल्का रखो । अगर दिल में किसी भी प्रकार की बात होगी तो जहाँ बातें हैं वहाँ बाप नहीं । किसी के भी अवगुण एक-दूसरे के सामने वर्णन करना अर्थात् बीमारी के कीटाणु फैलाना । कोई पूछे — 'फलाना कैसे है'; तो दिल से निकले — 'बहुत अच्छा है' । तब कहेंगे बाप समान शुभचिंतक ।

१३. ड्रामा अनुसार हर एक को जो विशेषता मिली हुई है, उसे कार्य में लगाओ । एक-दो में फेथफुल रहो । किसी की ग्लानि कोई करता है तो आप उसके भाव को बदल दो । जैसे आपको ब्रह्मा बाप के लिए कोई कहे कि — 'यह क्या' यह तो गाली देते हैं; तो आप कहेंगे — 'नहीं, यह गाली नहीं, स्पष्टीकरण है' । ऐसे कोई किसके ग्लानी की बात सुनाये तो उसे टेका देने के बजाय सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो, अर्थ में भावना परिवर्तन कर दो । सदैव सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना रखो । एक-दो के ग्लानि की बातें सुनना अर्थात् टाइम वेस्ट करना है, कमाई से वंचित होना है ।

१४. वर्तमान समय विश्व में मैजारिटी आत्माओं में भय और चिंता प्रवेश

है । लेकिन जितने ही वे फ़िक्र वा चिंता में हैं, उतने ही आप शुभचिंतक हो, भयभीत के बजाय सुख के गीत गा रहे हो । तो ऐसे समय पर जबकि दुःखमय दुनिया में दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने वाले हैं, तो आप सदा शुभचिंतक बन अपनी 'शुभ भावना और शुभ कामना' की मानसिक सेवा से सभी को सुख-शान्ति की अंचली दो । अकाले मृत्यु वाली आत्माओं को अकालमूर्त बन शान्ति और शक्ति का सहयोग दो । साथ-साथ तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा अपने रहे हुए सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू करो ।

१५. जो सदा स्वचितन और शुभचितन में रहता है, वही सर्व के प्रति शुभ चिंतक बन सकता है । स्वचितन अर्थात् जैसा बाप वैसी मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ । शुभचितन अर्थात् ज्ञान-रत्नों का मनन । ऐसा शुभचितन करने वाला व्यर्थ चिंतन वा परचितन से दूर रहता है । वह सर्व के सम्पर्क में आते शुभचितक बन जाता है, परचितन को तलाक दे देता है । उसका निजी संस्कार वा स्वभाव शुभ होने के कारण वृत्ति, दृष्टि सब में शुभ सोचने वा देखने की आदत बन जाती है । ऐसी शुभचितक आत्मा अपनी शुभ भावना, शुभकामना द्वारा ना-उम्मीदवार को भी उम्मीदवार बना देती है ।

विश्व सेवाधारी, सर्व के परोपकारी

१. जैसे ब्रह्मा बाप ने सर्व के सामने स्वयं को सर्व शक्तियों सहित सेवा में समर्पित किया। अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति दान किया। यही है पर-उपकार करना। तो ऐसे फालो फादर। स्वयं के प्रति नाम, मान, शान, सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान करने वाले ही परोपकारी बन सकते हैं। लेने की इच्छा छोड़, देने वाले महादानी ही परोपकारी बन विश्व-सेवा के निमित्त बनते हैं। तो विश्व-सेवाधारी का टाइटिल लेने के पहले सन्तुष्ट योगी वा 'इच्छा मात्रम् अविद्या' बनो। कभी भी सेवा में मूढ़ ऑफ़ न हो।

२. विश्व-सेवा की ज़िम्मेवारी का ताज़ डबल लाइट बनाने वाला है। यह बोझ वाला ताज़ नहीं है, सर्व प्रकार के बोझ मिटाने वाला है। जब तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा सब रूप से सेवाधारी बन सेवा में बिजी रहते हैं तो सहज ही मायाजीत जगतजीत बन जाते हैं, देह का भान स्वतः सहज भूला हुआ रहता है। सेवा के समय बाप और सेवा के सिवाय कुछ भी नहीं सूझता, खुशी में नाचते रहते हो। तो यह ज़िम्मेवारी का ताज़ हल्का बनाने वाला है, इसलिए बापदादा सभी बच्चों को रूहानी सेवाधारी का टाइटिल देते हैं। जैसे बापदादा रूहानी सेवाधारी बन कर आते हैं। तो जो बाप का स्वरूप वह बच्चों का स्वरूप।

३. वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी का पहला स्वरूप वर्ल्ड-सर्वेन्ट है। तो जैसे बाप का गायन है वैसे बच्चों का भी गायन है। सेवा करना अर्थात् मेवा खाना। हर क्रदम में डबल कमाई करो। लेकिन निर्विघ्न सेवाधारी बनो। सेवा के बीच में वायुमण्डल का, संग का, आलस्य का विघ्न आयेगा तो सेवा खण्डित हो जायेगी। किसी भी प्रकार के विघ्न में कभी नहीं आना। निर्विघ्न सेवा का ही महत्व है। जरा भी संकल्प मात्र भी विघ्न न हो। ऐसे अखण्ड सेवाधारी कभी किसी के चक्र में नहीं आते। कभी किसी व्यर्थ चक्र में नहीं आना, तब सेवा सफल होगी।

४. विश्व-सेवाधारी बनने के लिए बाप समान परोपकारी बनो। किसी

भी आत्मा से कुछ लेकर के देने के इच्छुक नहीं। संकल्प में भी यह न आये कि — यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ — कुछ वह बदले कुछ मैं बदलूँ। ऐसी भावना परोपकारी आत्मायें नहीं रख सकती। परोपकारी आत्मा अपने संकल्प-शक्ति से, वाणी की शक्ति से, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करती रहती है। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हो जाये। ऐसे अखण्ड दानी बन विश्व-सेवाधारी बनो।

५. संकल्प, वाणी और कर्म से दिन-रात सच्चे सेवाधारी बन संगठित रूप से विश्व-सेवा में तत्पर हो जाओ तो स्वयं की चढ़ती कला स्वतः होती रहेगी। विश्व-सेवाधारी बनने के लिए सदैव दो बातें याद रखो — (१) सदा अपने को विशेष आत्मा समझ कर हर संकल्प वा कर्म करना है, (२) हर एक में विशेषता देखनी है। साथ-साथ विशेष आत्मा बनाने की शुभ कल्याण की कामना रखनी है। सदा यह अटेंशन रहे कि जिस अवगुण वा कमजोरी को हर आत्मा छोड़ने का पुरुषार्थ कर रही है, ऐसी दूसरे द्वारा छोड़ने वाली चीज़ को स्वयं कभी धारण नहीं करना है। किसी की कमजोरी वा अवगुण देखने का नेत्र सदा बंद रखो, तब कहेंगे 'परोपकारी सो विश्व-सेवाधारी।'

६. विश्व-सेवाधारी बनने के लिए अपने संकल्पों में इतनी समर्थी धारण करो जो विश्व की आत्माओं तक अपने शक्तिशाली संकल्पों द्वारा सेवा कर सको। अपनी वृत्ति की शुद्धि अनुसार वायुमण्डल को शुद्ध कर सको, आज के विश्व की आत्मायें देखकर सौदा करने वाली हैं, सिर्फ सुनकर मानने वाली नहीं हैं। सुना बहुत है। अब देखना चाहती हैं, प्रमाण द्वारा परिवर्तन चाहती हैं। तो विश्व-परिवर्तन के लिए वा विश्व-कल्याण के लिए स्व-कल्याण का सैम्पल दिखाओ। जो बोलते हो, वह प्रैक्टिकल स्वरूप में दिखाओ। स्वयं को सैम्पल बनाकर विश्व-कल्याणकारी वा विश्व-सेवाधारी बनो।

७. विश्व-सेवाधारी बनने के लिए अपनी मन्सा द्वारा विश्व प्रति अपनी शक्तियों के खज़ाने, ज्ञान, गुणों के खज़ाने को महादानी बन दान करते रहो। बीजरूप स्थिति द्वारा सहज ही विश्व-सेवा के निमित्त बन सकते हो। जैसे बीज द्वारा स्वतः ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है, ऐसे जब बीजरूप स्टेज

पर स्थित होंगे तो विश्व को लाइट का पानी मिलता रहेगा । तो अब ऐसे लाइट-हाउस बनो जो विश्व की आत्माओं को स्वयं की वा बाप के परिचय की रोशनी मिले । वर्तमान समय बेहद सेवा की ही आवश्यकता है, क्योंकि बेहद विश्व का परिवर्तन करना है ।

८. जैसे बाप वर्ल्ड-सर्वेन्ट है वैसे वर्ल्ड-सर्वेन्ट बनना है । सर्वेन्ट को सदा सेवा और मास्टर याद रहता है । ऐसे सेवाधारी बच्चों को भी बाप और सेवा के सिवाय कुछ भी याद नहीं रहता । तो वर्ल्ड-सर्वेन्ट समझने से एकरस स्थिति भी स्वतः बन जायेगी । कोई भी कार्य करो तो सदा यही सोचो कि विश्व-सेवा के अर्थ निमित्त मात्र यह कार्य कर रहे हैं । इसी को ही कमल-पुष्प के समान कहा जाता है । यह लौकिक कार्य भी अनेक आत्माओं को सम्पर्क में लाने का साधन है । क्योंकि ईश्वरीय सेवा के लिए सम्पर्क तो बनाना ही पड़ता है । तो लौकिक कार्य भी सेवा का चांस समझकर करो ।

९. जैसे बाप का स्वरूप ही है विश्व-सेवक । बाप विश्व-सेवाधारी बनकर आते हैं । वैसे आप भी बाप समान विश्व-सेवाधारी हो । शरीर द्वारा भले स्थूल सेवा करते हो लेकिन मन्सा द्वारा विश्व-परिवर्तन की सेवा में तत्पर रहो । तन, मन दोनों सेवा में रहें । एक ही समय पर दोनों सेवा साथ-साथ करते रहो । कर्म करते चेक करो — डबल सेवा के बदले सिंगल तो नहीं हो गई ? अटेन्शन रखते-रखते संस्कार बन जायेंगे । जो मन्सा और कर्मणा दोनों सेवा साथ-साथ करते, उन्हें देखने वाले को अनुभव होगा कि यह कोई अलौकिक शक्ति है । तो ऐसा अभ्यास बढ़ाओ जो नैचुरल और निलला सेवाधारी बन जाओ ।

१०. विश्व-सेवाधारी आत्माओं का धर्म और कर्म है ही सेवा । जैसे शरीर 'श्वास' के बिना चल नहीं सकता, ऐसे आत्मा 'सेवा' के बिना रह नहीं सकती । जैसे श्वास आटोमेटिक चलता ही रहता है, ऐसे सेवा भी स्वतः चलती रहेगी । सेवा ही जैसे आत्मा का श्वास है । कितने घण्टे सेवा की — यह हिसाब नहीं निकाल सकते । विश्व-सेवाधारी वह, जिनके चलने में भी सेवा, बोलने में भी सेवा, कर्म करने में भी सेवा । जो भी संकल्प उठता है उसमें भी सेवा समाई हुई हो । हर बोल में भी सेवा समाई हुई हो । ऐसे सेवाधारी बन जाओ ।

के आगे इजैम्पल बनो ।

११. विश्व-सेवाधारी अर्थात् श्रेष्ठ स्टेज पर हर कर्म करने वाले । जैसे स्थूल स्टेज पर श्रेष्ठ और युक्तियुक्त कदम उठाना होता है । तो सदैव ऐसे समझो कि मैं विश्व की स्टेज पर हूँ । मैं फलाने देश में फलाने सेन्टर पर हूँ । नहीं, विश्व की स्टेज पर हूँ — इस स्मृति से हर कर्म स्वतः ही श्रेष्ठ होगा । आपको फालो करने वाले भी बहुत हैं । इसलिए आप सदा बाप को फालो करो । तो आपको फालो करने वाले भी बाप को फालो करेंगे । इन्डायरेक्ट फालो फादर हो जायेगा । क्योंकि आपका हर कर्म फालो फादर है ।

१२. ब्राह्मण जीवन में एक पवित्रता का और दूसरा विश्व-सेवाधारी बनने का ताज धारण करने से ही विश्व-महाराजन का ताज प्राप्त होता है । विश्व-सेवाधारी आत्मायें तन, मन, धन, जन से सदा सेवा पर तत्पर रहने के उत्साह और उमंग में रहती हैं । अभी का उत्साह ही भविष्य का उत्सव बन जाता है । तो चेक करो — “आदि से अब तक वा अब से अन्त तक अपने तन को कितना समय सेवा में समर्पण किया ? मन को कितना समय याद और मन्सा सेवा में लगाया ? धन को सर्व प्रति सेवा में निःस्वार्थ भाव से लगाते हैं वा स्वार्थ से लगाते हैं ?” जो हृद के बजाय सदा बेहद में लगाते हैं, वही विश्व-सेवाधारी सो राज्य-अधिकारी बनते हैं ।

१३. विश्व-सेवाधारी बनने के लिए अपने प्रति समय का, सम्पत्ति का, साधनों का त्याग करो । क्योंकि सेवा अर्थ अर्पण की हुई सम्पत्ति स्वयं प्रति लगाते से सफलता नहीं मिल सकती । जैसे सेवा के आरम्भ में अपने पेट की पीली भी कम करके हर वस्तु को सेवा में लगाने से उसका प्रत्यक्षफल निकला । फिर मध्य में बाप ने वा ड्रामा ने सहज साधनों को स्वयं के प्रति न लगाने का अनुभव भी कराया । लेकिन अब अन्त में प्रकृति दासी होते हुए भी, सर्व साधन प्राप्त होते भी स्वयं के प्रति नहीं लेकिन सेवा के प्रति लगाओ । साधनों बन सेवा का प्रत्यक्ष फल निकालो ।

१४. निमित्त मात्र किसी भी स्थान पर रहते हो लेकिन स्मृति में विश्व-सेवा करते । क्योंकि जैसा लक्ष्य होगा वैसे लक्षण स्वतः आ जायेंगे । लक्ष्य बेहद होना तो लक्षण भी बेहद के आयेंगे । नहीं तो हृद में ही फँसे रहेंगे । सदा

‘बाप की हूँ, बेहद की हूँ’ — इसी स्मृति से सर्व आत्माओं की सेवा करते चलो । मुख द्वारा किसको भले समझाओ लेकिन वाचा के साथ-साथ मन्सा सेवा भी करो । वर्तमान समय सेवाधारियों की विशेष सेवा है — स्वयं भी हल्के रहना और सर्व को हल्के बनाना । तो हर सेकण्ड श्वासों-श्वास सेवा चलती रहे । जिन आत्माओं की सेवा के निमित्त बने हो उन्हें को मंजिल पर पहुंचाना है ।

१५. विश्व राज्य अधिकारी बनने के लिए विश्व-सेवाधारी और परोपकारी बनो, हद के सेवाधारी नहीं । बेहद के सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बन्धन स्वतः टूट जायेंगे । जैसे बाप सदा विश्व-कल्याणकारी परोपकारी, रहमदिल है ऐसे अपने संस्कार बनाओ । संस्कार आत्मा को अपने प्रमाण चलाते रहते हैं । संस्कार बनाना अर्थात् संकल्प, बोल और कर्म स्वतः उसी प्रमाण सहज चलना । तो बाप के संस्कारों को अपना निजी संस्कार बना लो अर्थात् नेचर ही बाप समान हो जाए । ऐसी नेचर वा संस्कार वाले ही विश्व-सेवाधारी वा परोपकारी, रहमदिल होते हैं ।

सदा न्यारे और सर्व के प्यारे

१. ब्रह्मा बाप अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल हैं । हर ब्राह्मण दिल से कहता है — ‘मेरा ब्रह्मा बाबा’ । यह प्यारेपन की निशानी है । चारों ओर के न्यारेपन ने ही विश्व का प्यारा बना दिया । तो फालो फादर कर अति प्यारे और अति न्यारे अर्थात् कमल-आसनधारी बनो । सर्व का प्यारा बनने के लिए चार बातों से न्यारा बनना है — (१) अपने देहभान से न्यारा, (२) देह के जो सर्व सम्बन्ध हैं, दृष्टि-वृत्ति कृति से न्यारा, (३) देह के विनाशी पदार्थों से न्यारा और (४) पुराने स्वभाव-संस्कार से न्यारा । जो इन चारों बातों में न्यारे हैं उनको कहेंगे ‘बाप का प्यारा, परिवार का प्यारा’ ।

२. जो सदा न्यारे अर्थात् साक्षी होकर हर कर्म करते हैं उन्हें स्वतः ही बाप के साथीपन का अनुभव होता है । इसलिए देह से भी साक्षी बनो । जब देह के सम्बन्ध और देह से साक्षी बन जाते हो, तो स्वतः ही इस पुरानी दुनिया से भी साक्षी हो जाते । देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारे और प्यारे । यही स्टेज सहज योगीपन का अनुभव कराती है । इसको ही कहते हैं साथ में रहते हुए भी निर्लेप अर्थात् माया की लेप व आकर्षण से परे, न्यारे ।

३. जो न्यारे होते हैं वही अति प्यारे होते हैं । ऐसे जो न्यारे और प्यारे हैं उन्हें ही बापदादा का सहारा मिलता है । न्यारे बनते जाना अर्थात् प्यारे बनते जाना । प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं लेकिन न्यारे बनने का पुरुषार्थ करो । न्यारे बनने की प्रालम्ब्य है प्यारा बनना । जैसे बाप सभी को प्यारा है, ऐसे बच्चों को सारे जगत की आत्माओं का प्यारा बनना है । उसका पुरुषार्थ है — हर चलन में न्यारापन हो ।

४. माया के वार से बचने का सहज साधन है — विश्व से न्यारा और बाप का प्यारा बनना । जो बाप के प्यारे बनते हैं वह विश्व से न्यारे स्वतः बन जाते हैं । जितना न्यारापन होगा उतना प्यारापन होगा । जो बाप के प्यार में सदा लवलीन रहते हैं उन्हें माया आकर्षित नहीं कर सकती । जैसे वाटरप्रूफ कपड़ा होता है तो एक बूंद भी टिकती नहीं । ऐसे जो लगन में रहते, लवलीन रहते वो मायाप्रूफ बन जाते हैं । बाप का प्यार अविनाशी और निःस्वार्थ है, इसलिए

बाप के प्यार में लवलीन रहो ।

५. जो बाप का प्यारा होगा वह न्यारा जरूर होगा । क्योंकि जिससे प्यार है वह जैसा होगा वैसा ही बनायेगा । बाप प्यारा तब लगता है जब आप अपनी देह से न्यारे देही रूप में स्थित होते हो । तो सदा इसी अभ्यास में रहो । जैसे गुफा में रहने से बाहर के वातावरण से परे रहते हैं, ऐसे अन्तर्मुखता की गुफा में रहो तो सदा न्यारे और प्यारे रहो । यही अभ्यास सदा चलता रहे । इसके सिवाय नीचे नहीं आओ । तो दुनिया के वातावरण से परे हो जायेंगे । वातावरण अपना प्रभाव नहीं डालेगा ।

६. जैसे साकार बाप ने कर्म करते भी साक्षी द्रष्टा बन पाट बजाया, इसलिए द्रष्टान्त रूप बने । ऐसे फालो फादर करो । साक्षी-द्रष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्मबन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे । कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म-सम्बन्ध में आयेंगे, बंधन में नहीं । सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे । ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अनेक आत्माओं के सामने द्रष्टान्त अर्थात् इजैम्पल बनती हैं, उन्हें देखकर अनेक आत्मायें स्वतः कर्मयोगी बन जाती हैं ।

७. 'कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है' — इस भावना से सदा न्यारे और प्यारे बनो । अगर 'मैं करने वाली हूँ' तो न्यारे और प्यारे नहीं । 'हर सेकण्ड करावनहार निमित्त बनाय करा रहा है' — इस स्मृति में रहना ही न्यारे-प्यारे बनने का सहज साधन है । इससे सफलता भी ज्यादा और सेवा भी सहज होती है, मेहनत नहीं लगती । चाहे कर्म का हिसाब चुक्त्तू भी का रहे हैं लेकिन कर्म के हिसाब को भी साक्षी अर्थात् न्यारे होकर देखते हुए सभी के साथ मैंज में रहते हैं । कर्मभोग, कर्मयोग की शक्ति से सेवा का साधन बन जाता है ।

८. जैसे ब्रह्मा बाप ने आसुरी सम्प्रदाय के बीच में रहते हुए न्यारा और प्यारा बनकर दिखाया । ऐसे फालो फादर करो । ब्रह्मा बाप जितनी ज़िम्मेदारी स्थूल में भी किसी की नहीं है । आप सोचेंगे — क्या करें, ऐसे गन्दे वायुमण्डल में रहते हैं, वायुब्रेशन खराब होते हैं । लेकिन सबके बीच में रहते न्यारा प्यारा रहना ही विशेष आत्मा बनना है । कभी यह नहीं सोचो कि यह तो ऐसे काल

है, यह सुनते ही नहीं हैं । न सुनने वाले को भी सुनने वाला बनाना आपका काम है । बुजुर्ग बन छोटों की कमजोरियों को समाने वाले बनो । जैसे ब्रह्मा बाप ने सभी की कमजोरियों को समाकर श्रेष्ठ बना दिया । ऐसे फालो फादर करो ।

९. 'न्यारे और प्यारे' स्थिति का अनुभव करने के लिए किसी भी स्थान पर रहते स्वयं को मधुबन निवासी समझकर चलो । साकार रीति से असली घर मधुबन है । जहाँ सेवा के निमित्त हो वह सेवास्थान है । उसे घर समझेंगे तो फंस जायेंगे । सेवाकेन्द्र समझेंगे तो न्यारे रहेंगे । जिन आत्माओं के प्रति निमित्त बनते हो उनकी सेवा के सम्बन्ध से निमित्त हो, बल्-कनेक्शन के सम्बन्ध से नहीं, सेवा का कनेक्शन है । इस स्मृति से सहज नष्टोमोहा बन जायेंगे । यह विशेषता ही न्यारा और प्यारा बना देगी ।

१०. जो अलौकिक जीवन वाले हैं वह लौकिक आत्माओं से न्यारे होंगे । जो सदा न्यारे रहते वही बाप के प्यार का अनुभव करते हैं । यदि बाप के प्यार का अनुभव नहीं होता, तो जरूर कहीं न्यारेपन में कमी है, कहीं लगाव है — चाहे अपनी देह से, चाहे सम्बन्ध से, चाहे किसी वस्तु से । स्थूल वस्तु भी योग तोड़ने के निमित्त बन जाती है । कोई छोटी चीज़ भी बड़ा नुकसान कर सकती है । इसलिए सदा न्यारे बनो अर्थात् अलौकिक जीवन वाले बनो । सम्बन्ध के आधार पर पाट बजाने वाले नहीं लेकिन सेवा का पाट समझकर ही तो न्यारे रहेंगे ।

११. जैसे साकार ब्रह्मा बाप को देखा—वे जितना ही अति कर्म में आते, विस्तार में आते, रमणिकता में आते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते; उतना ही सभी अभी सम्बन्ध-सम्पर्क में, अभी-अभी न्यारे । जैसे सम्बन्ध व कर्म में सदा सहज, वैसे ही न्यारा होना भी सहज । तो ऐसी प्रैक्टिस चाहिए । अभी अभी अति, अभी-अभी अन्त हो जाए — यही है लास्ट स्टेज का समाप्त । अभी-अभी अति सम्बन्ध में आओ और अभी-अभी जितना सम्पर्क सदा न्यारा । जैसे लाइट-हाउस में समा जायें ।

१२. जैसे बाप आधार लेकर बोल रहे हैं, वैसे ही हम भी देह का आधार लेकर बोल रहे हैं । इस न्यारेपन की अवस्था प्रमाण ही प्यारा बनना है ।

जितना इस न्यारेपन की प्रैक्टिस में आगे होंगे उतना ही विश्व को प्यारे लगने में आगे होंगे । सर्व स्नेही बनने के लिए पहले न्यारा बनना है । सर्विस करते हुए भी अपने को और दूसरों को महसूसता ऐसी आनी चाहिए कि यह न्यारा और अति प्यारा है । जितना जो स्वयं न्यारे होंगे, उतना औरों को बाप का प्यारा बना सकेंगे । यह साक्षी अर्थात् न्यारेपन की राखी सदैव बंधी हुई हो तो सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी ।

१३. न्यारा और प्यारा बनने के लिए अपने अलौकिक और पारलौकिक नशे वा निशाने को सदैव स्मृति में रखो । अलौकिक नशे और निशाने से न्यारा बनेंगे । पारलौकिक नशे और निशाने से विश्व का प्यारा बनेंगे । देह से न्यारा बनने के साथ आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं, उन्हीं से भी न्यारा बनो । कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी जरूर होती है । न्यारे न बन सकने का कारण है स्वार्थ । स्वार्थ अर्थात् इस रथ वा देह का अभिमान, देह की स्मृति वा जो देह का लगाव लगा हुआ है, उसे समाप्त करो अर्थात् न्यारे बनो ।

१४. सेवा कितनी भी वृद्धि को प्राप्त हो, लेकिन सेवा करते न्यारे बन, प्यारे बनना है । सिर्फ प्यारे नहीं बनो, न्यारे बनकर प्यारे बनो । सेवा से प्यार रखना अच्छी बात है, लेकिन प्यार लगाव के रूप में बदल नहीं जाये । सेवा के निमित्त बनते हो, यह तो बहुत अच्छा । पुण्य आत्मा का टाइटिल मिल जाता है । लेकिन अभी और भी न्यारेपन-प्यारेपन की विधि से वृद्धि को प्राप्त करते रहना । कमल-पुष्प का सिम्बल सदा बुद्धि में रखकर अमल करो और बाप समान बन्धनमुक्त, कर्मातीत स्थिति का विशेष अभ्यास करते हुए दुनिया को न्यारे और प्यारेपन का अनुभव कराओ ।

१५. जैसे जब कोई चीज़ बनाते हो और वह बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है । ऐसे ही आप जितना अन्तिम सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे, उतना सर्व से किनारा होता जायेगा अर्थात् सबसे न्यारे होते जायेंगे । तो चेक करो — सब बन्धनों से, सब तरफ से वृत्ति द्वारा किनारा होता जाता है या अभी तक लगाव है ? जो अन्तिम फ़रिश्ते जीवन की मंज़िल के नज़दीक आते जायेंगे, वह सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे होंगे । उनके सर्व रिश्ते एक के साथ होंगे ।

१६. जो बाप के साथ रहने वाले बाप समान न्यारे और प्यारे हैं, उनकी विशेषता यही होगी—उन्हें जो देखेगा उसे बाप याद आयेगा, उन्हीं से बाप के चरित्र, बाप की दृष्टि, बाप के कर्म सब अनुभव होंगे । वह स्वयं नहीं दिखाई देंगे लेकिन उन द्वारा बाप के कर्म वा दृष्टि अनुभव होगी । उनमें कोई फंसेंगे नहीं, ऐसे नहीं कहेंगे कि फलानी बहुत अच्छी है । लेकिन “बाप ने इन्हें अच्छा बनाया है, बाप की दृष्टि, बाप की पालना इन्हीं से मिलती है, बाप के महावाक्य इन्हीं से सुनते हैं” — ऐसा अनुभव करेंगे । इसको कहा जाता है प्यारा भी लेकिन न्यारा भी ।

कर्म और योग का निरन्तर सन्तुलन

१. ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल हैं। कोई कितना भी बिजी हो लेकिन ब्रह्मा बाप से ज्यादा बिजी और कोई हो नहीं सकता। फिर भी ब्रह्मा बाप ने कर्मयोगी बनकर दिखाया। सदा अपने को करनहार समझकर कर्म किया, करावनहार नहीं समझा। करावनहार बाप को समझने से कैसा भी कार्य करते सदा हल्के रहे। तो कर्मयोगी बनने के लिए आप भी अपनी बुद्धि की तार बापदादा को दे दो। चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है और हम निमित्त बनकर कर्म नहीं लेकिन डांस कर रहे हैं। इससे एवरहैपी रहेंगे, थकेंगे नहीं।

२. जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म कर रही हैं, ऐसे कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड हों। कर्म करते याद न भूले और याद में रहते कर्म न भूले। कई ऐसे कहते हैं कि कर्मक्षेत्र पर जाते हैं तो याद भूल जाती है। इससे सिद्ध है कि कर्म और याद अलग हो गई। लेकिन यह दोनों कम्बाइन्ड हैं। आपका टाइटिल ही है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहो तो हल्के रहेंगे। किसी भी कर्म का बोझ अनुभव नहीं करेंगे। किसी भी प्रकार का कीचड़ अर्थात् माया का वायब्रेशन टच नहीं कर सकेगा। कर्मयोगी अर्थात् कमल पुष्प के समान रहने वाले।

३. कर्मयोगी अर्थात् सदा बाप के साथ रहते हुए हर कार्य करने वाले। चाहे लौकिक कर्म कर रहे हों या अलौकिक — कोई भी कर्म करते आलमाइटी अर्थॉर्टी बाप को अपना साथी अर्थात् फ्रैन्ड बनाकर रखो। कर्मयोग के पार्ट में सदा साथीपन का अनुभव करो अर्थात् कम्बाइन्ड होकर रहो। कर्म करते हुए बार-बार चेक करो कि — “कर्म में लाइट अर्थात् हल्कापन है? कोई बोझ तो नहीं है?” अगर बोझ नहीं होगा तो अपनी तरफ खिंचाव नहीं करेगा, बल्कि कर्म ‘योग’ में परिवर्तन हो जायेगा।

४. अपनी निराकारी स्थिति में स्थित हो इस साकार शरीर का आधार लेकर कर्मक्षेत्र पर कर्मयोगी बनकर कर्म करना — यही है बाप समान स्टेज। कर्मों का आधार लेने का अर्थ है निरन्तर कर्म करना। तो जैसे कर्म के

बिना बाप के आचरण पर चलने वाले ही ब्रह्माचारी हैं।

बिना रह नहीं सकते, वैसे ही याद अर्थात् योग के बिना भी रह नहीं सकते। इसलिए कर्म के साथ योगी नाम भी है। जैसे कर्मों का नेचुरल अभ्यास कर्म है। हाथ को चलाने व पांव को हिलाने में मेहनत नहीं करनी पड़ती। ऐसे ही ब्राह्मण जीवन में बुद्धि का निजी कार्य याद है। तो कर्म और योग का सन्तुलन रख कर्मयोगी बनो।

५. कर्म-योगी बनने के लिए कर्म करते बुद्धि पर अटेन्शन का पहरा हो। क्योंकि माया ब्राह्मण बच्चों की ‘बुद्धि’ पर ही पहला वार करती है, पहले बुद्धि का कनेक्शन तोड़ देती है। इसके लिए बुद्धि को रूहानी ड्रिल द्वारा शक्तिशाली बनाओ। अभी-अभी परमधाम निवासी, अभी-अभी सूक्ष्म अव्यक्त फ्रिश्ता और अभी-अभी साकार कर्मों का आधार लेकर कर्मयोगी बन जाओ — यही है संकल्प-शक्ति पर कंट्रोल। जितना समय जो संकल्प चाहिए उतना ही समय वह चले, जहाँ बुद्धि लगाने चाहें वहाँ ही लगे। ऐसे अधिकारी ही कर्मयोगी बन सकते हैं।

६. कर्मयोगी अर्थात् कर्मों द्वारा कर्म भी होता रहे और मन्सा-शक्ति द्वारा वायुमण्डल में शक्तिशाली, स्नेह सम्पन्न, सर्व के सहयोग के वायब्रेशन्स भी फैलाता रहे। कर्म कर रहे हैं लेकिन एक ही समय पर कर्म और मन्सा दोनों सेवा का बैलेन्स हो। जैसे शुरू-शुरू में यह अभ्यास किया कि कर्म भले साधारण हो, लेकिन स्थिति ऐसी महान् हो जो साधारण काम करते हुए भी साक्षात्कारमूर्त दिखाई दें। जो साकार बाप से अनुभव किया — साधारण रूप गायब हो फ्रिश्ता रूप वा पूज्य रूप दिखते थे। ऐसे आपसे भी चलते-फिरते यह साक्षात्कार हों। लेकिन इसके लिए कर्मयोगी बनो।

७. हर कार्य करते हुए याद की यात्रा में रहना ही कर्मयोगी बनना है। कर्म में रहते न्यारा और प्यारा रहना — यही स्वयं को आगे बढ़ाना है। तो कर्म योग के बैलेन्स से सदा आगे बढ़ते चलो और बढ़ते चलो। यही जीवन अति प्रिय जीवन है। सेवा भी हो और खुशी भी हो। दोनों साथ-साथ ठीक हों। ब्राह्मणों के लिए सेवा नहीं तो चैन की नींद नहीं। सेवा ही चैन की निद्रा है। सेवा सिर्फ वाणी की नहीं, हर सेकण्ड सेवा है, हर संकल्प में सेवा है। कोई भी प्रकार की सेवा अर्थात् कर्म करो, लेकिन सेवा करते याद की यात्रा कभी

भी न भूले । तब कहेंगे कर्मयोगी ।

८. ब्राह्मण जीवन की नेचर है याद की यात्रा में रहना । ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बंधन बांधना । जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं, ऐसे इस ब्राह्मण जीवन की निशानी 'याद' है । इसलिए कर्म करते भी याद में रहना नेचुरल हो । ऐसे नहीं, कर्म करते याद भूल जाए । दोनों साथ-साथ हों, क्योंकि इतना टाइम ही नहीं है जो याद अलग करो, कर्म अलग करो । याद और कर्म दोनों साथ-साथ हों । इसमें ही अनुभवी बनो और सफलता का अनुभव करो । हर कर्म सेवार्थ करो ।

९. कोई भी कार्य शुरू करो तो चेक करो कि — मजे वा मैज से कर रहा हूँ? कैसा भी कोई काम हो लेकिन मजे से करो । चाहे कोई हार्ड वर्क हो, जॉब करने जाते हो, उसमें मेहनत का अनुभव होता है तो भी उसे छोड़ना नहीं है लेकिन हर कर्म में योग के बैलेन्स द्वारा उसे सहज अनुभव करना है । ऐसे नहीं सोचना कि — यह काम पूरा करेंगे, फिर योग करेंगे । कर्म के साथ-साथ योग हो । क्योंकि दिन-प्रतिदिन समस्यायें और सरकमस्टांसेस और भी ज्यादा टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट नहीं कर सकती । इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ ।

१०. कर्म में योग का बैलेन्स रखने के लिए हर कर्म में बाप का साथ, साथी रूप में अनुभव करो । साथ है, साथी है और ऐसा साथी है जो 'कर्म' को 'सहज कर्म' कराने वाला है । वह भूल कैसे सकता । साधारण रीति से भी अगर कोई कार्य में कोई सहयोग देता है तो उसके लिए बार-बार दिल से शुक्रिया स्वतः निकलता है; और बाप तो कम्बाइन्ड रूप से साथी बन मुश्किल को सहज करने वाला है, तो ऐसा साथी भूल कैसे सकता । जैसे बाप में दादा और दादा में बाप समाया हुआ है, ऐसे कर्म में योग और योग में कर्म समाया हुआ हो ।

११. कर्मयोगी जीवन अर्थात् डबल फोर्स से काम करने की जीवन । कर्मयोगी बनने वाले को कर्म में बाप का साथ होने के कारण एक्स्ट्रा मदद मिल जाती है । क्योंकि एक से दो हो गये, तो काम बंट गया ना । अगर एक

काम कोई एक करे और दूसरा साथी बन जाय तो वह काम सहज हो जायेगा । तो हाथ आपके हैं लेकिन मदद बाप की है । इसलिए काम भले कितना भी मुश्किल हो, लेकिन बाप की याद है तो मदद है ही । जिस कार्य में बाप की याद के साथ उमंग-उत्साह वा अथकपन होता है, वह काम सफल अवश्य होता है ।

१२. कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था का अनुभव करो । लवलीन होना अर्थात् स्नेह में समा जाना । 'बाप' और 'मैं' समान वा स्नेह में समाये हुए हैं । सिवाए बाप के और-कुछ है ही नहीं । तो कर्म करते भी ऐसे समा जाने का अनुभव करना ही लव का प्रैक्टिकल सबूत है । कर्म और योग, सेवा और योग का बैलेन्स रखना अर्थात् समानता का अनुभव करना ही बाप समान बनना है । 'कर्म करते हुए' और कर्म से न्यारा हो 'अलग बैठने में' स्थिति की समानता हो । जो इस समानता के बैलेन्स की कला में नम्बरवन जाता है, वही महान् बनता है ।

१३. सर्व की ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो । जिस समय कर्म और योग का बैलेन्स होता है तो ब्लैसिंग मिलती है । तो हर समय कर्म और योग के बैलेन्स को चेक करो । दुनिया वाले समझते हैं कि कर्म ही सब-कुछ है; लेकिन बापदादा कहते कि — "कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं ।" ऐसे कर्मयोगी के लिए कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे । चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो — लेकिन योग का अर्थ है मन-बुद्धि की एकाग्रता; और जहाँ एकाग्रता है वहाँ कार्य की सफलता बँधी हुई है ।

१४. जैसे साकार बाप ने कर्मयोगी का इज्जैम्पल बनकर दिखाया । कितनी भी जिम्मेवारी होते हुए सदा डबल लाइट रहे । अपने को सदा निमित्त समझकर चले । ऐसे आप भी अपनी सर्व जिम्मेवारियां बाप को दे दो । अपने को सदा निमित्त समझकर चलो । जिम्मेवार बापदादा है । इससे हर कर्म अति श्रेष्ठ होगा और श्रेष्ठ कर्म की प्रालब्ध भी स्वतः श्रेष्ठ होगी । बाप को कॉपी करो तो बाप समान बन जायेंगे । समान बनने वाले ही समीप रत्न बनते हैं ।

१५. कर्म तो सभी करते हैं, लेकिन आप कर्मयोगी आत्माओं के कर्म में

न्यारापन हो । कर्म किया और करने के बाद ऐसा अनुभव हो जैसे कि कुछ किया ही नहीं, कराने वाले ने करा लिया । ऐसी स्थिति का अनुभव करते रहो । कर्म करते तन का भी हल्कापन हो, मन की स्थिति में भी हल्कापन हो । जितना कार्य बढ़ता जाए, उतना हल्कापन भी बढ़ता जाए । कोई भी कर्म अपनी तरफ आकर्षित न करे । अनुभव हो कि कर्म कराने वाला मालिक बन करा रहा है और हम निमित्त बनकर कर रहे हैं । जो-कुछ करते वा सुनते हो उस पर आपके हल्केपन की स्थिति का प्रभाव पड़े, कार्य की हलचल का प्रभाव आप पर न पड़े, तब कहेंगे कर्मयोगी, कर्मातीत स्टेज के समीप आत्मायें ।

प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अर्थॉर्टी वाले

१. प्योरिटी की पर्सनैलिटी के आधार से ब्रह्मा बाप वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ गये । 'आदिदेव' वा 'फर्स्ट प्रिन्स' इसी पर्सनैलिटी से बने । तो फालो फादर करो । स्वयं को मन, वाणी और कर्म में सम्पूर्ण प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले बनाओ । क्योंकि ब्राह्मण जन्म के संस्कार ही पवित्र हैं । इसीलिए आजकल के ब्राह्मणों द्वारा ही किसी भी प्रकार का शुद्ध वा श्रेष्ठ कार्य कराते हैं । तो स्वप्न में भी कभी अपवित्रता के संकल्प न आयें, तब कहेंगे प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले । इस पर्सनैलिटी के कारण ही आज तक विश्व की आत्मायें नमस्कार कर रही हैं ।

२. पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है, अपनी निजी वस्तु है । पराई चीज़ अपवित्रता है न कि पवित्रता । बाप का वरदान पवित्रता है, और रावण का श्राप अपवित्रता है । आपका स्व-स्वरूप ही पवित्र है, स्वधर्म पवित्रता है अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है । स्व-देश पवित्र देश है । स्वराज्य पवित्र राज्य है । कर्म-इन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है — बस, यही स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे । "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ" — सदा इस स्वमान में स्थित हो जाओ तो प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा अर्थॉर्टी का अनुभव होगा ।

३. पवित्रता ब्राह्मण जीवन की महानता है । पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ शृंगार है । जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वाँस चलना आवश्यक है । श्वाँस नहीं तो जीवन नहीं । ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वाँस 'पवित्रता' है । २१ जन्मों की प्रालब्ध का आधार पवित्रता है । आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है । संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का आधार भी पवित्रता है । पवित्रता के इस महत्व को जान वरदान रूप में पवित्रता को धारण करो तो पवित्रता की पर्सनैलिटी और अर्थॉर्टी वाले बन जायेंगे । वरदाता बाप को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करो तो अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती ।

४. ब्राह्मण जीवन का जीयदान पवित्रता है, आदि-अनादि स्वरूप पवित्रता है । जब यह स्मृति आ जाती है, तो स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी

आना । आत्मा के निज़ी संस्कार पवित्र हैं, संगदोष के संस्कार अपवित्रता के हैं । पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है । पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है । पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंख की रोशनी है । पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है । पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है । इसी महत्व को स्मृति में रख पवित्रता की पर्सनैलिटी और अर्थों वाले बनो ।

५. कोई भी पर्सनैलिटी मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित करती है । वर्तमान समय आप ब्राह्मण आत्माओं की सबसे बड़ी पर्सनैलिटी प्योरिटी है । यह पर्सनैलिटी स्वयं ही सर्व के सिर आपके आगे झुकायेगी । जैसे अगरबत्ती की खुशबू खींचती है, वैसे आप द्वारा सबको प्योरिटी की खुशबू का अनुभव हो — जहाँ देखें वहाँ प्योरिटी ही प्योरिटी नज़र आये । वर्तमान समय इसका ही अनुभव करना चाहते हैं । तो स्वयं का ऐसा स्वरूप बनाओ । अभी तक जो इनर्जी और मनी लगानी पड़ती है, यह काम फिर प्योरिटी की पर्सनैलिटी करेगी । इसलिए ऐसी प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अर्थों वाले बनो ।

६. परम पूज्य बनने के लिए प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अर्थों वाले बनो । ब्रह्मा बाप समान पवित्र जीवन बनाने वाले को ही ब्रह्माचारी कहा जाता है । अगर पवित्रता अर्थात् स्वच्छता बार-बार खण्डित होती रहती है, तो परम पूज्य नहीं बन सकते । इसलिए अपने आपको चेक करो कि — किसी भी प्रकार के दाग से रजिस्टर को खराब तो नहीं किया है ? सदा ब्रह्माचारी अर्थात् संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल न बनाये । पहली हार वृत्ति की चंचलता, फिर दृष्टि और कृत्ति की चंचलता होती है । इसलिए पहले वृत्ति से सदा ब्रह्माचारी बनो । बाल-ब्रह्माचारी वर्तमान समय भी पूज्य अर्थात् श्रेष्ठ हैं और विश्व के आगे भी अन्त में पूज्य के रूप में प्रत्यक्ष होंगे ।

७. प्योरिटी की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता । पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिजी नहीं रखते हैं । अपवित्रता की बातों को वे सुनते हुए नहीं सुनते, देखते हुए भी नहीं देखते । जैसे रास्ते पर जाते हुए कहीं कुछ दिखाई देता है, परन्तु आपके

मतलब की बात नहीं है तो देखते हुए भी नहीं देखते, साइड सीन समझकर पार करते हो । ऐसे जो बातें सुनते हो, देखते हो — आपके काम की नहीं हैं तो सुनते हुए न सुनो, देखते हुए न देखो अर्थात् किसी की व्यर्थ बुराई को टच न करो । तब कहेंगे सच्चे वैष्णव वा प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले ।

८. पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है ब्रह्माचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना । ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाले, जिसे ही फालो फादर कहा जाता है । क्योंकि शिव बाप के समान 'स्थिति' में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में फालो ब्रह्मा बाप को करना है । पवित्रता का अर्थ है — सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पनी में ही रहना । संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा — वह अलग चीज़ है, वह भी आवश्यक है । लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी नहीं भूलना, तब पवित्रता की पर्सनैलिटी और अर्थों वाले बन सकेंगे । नहीं तो समय पर बाप भूल जायेगा और शरीरधारी की याद आने से धोखा खा लेंगे ।

९. जो बच्चे निरन्तर विधिपूर्वक आदि-अनादि विशेष गुण के रूप से पवित्रता को सहज अपनाते हैं, वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं । जो भी ज्ञानी, अज्ञानी आत्मायें सम्पर्क में आती हैं, सर्व के प्रति पवित्र दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क सम्बन्ध निभाना ही सम्पूर्ण पवित्रता है । स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित न हो वा किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, आवेशता के वश कर्म या बोल न निकले । क्रोध के अंश रूप में भी व्यवहार न हो । मन, वाणी और कर्म के साथ-साथ स्वप्न भी पवित्र हों । किसी भी प्रकार से पवित्रता खण्डित न हो, तब कहेंगे बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले ।

१०. प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाली आत्माओं का हर कर्म यथार्थ और युक्तियुक्त होता है । यथार्थ अर्थात् उनके हर संकल्प में अर्थ होगा, बिना अर्थ नहीं होगा । ऐसे नहीं कि ऐसे ही बोल दिया, निकल गया, कर लिया, हो गया । नहीं । पवित्रता की धारणा स्वतः ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है । ब्राह्मण जीवन की बनी हुई दिनचर्या प्रमाण उनका हर कर्म यथार्थ, विधिपूर्वक होता है । यदि कोई विधिपूर्वक नहीं चलते हैं, दिनचर्या

में नीचे-ऊपर होते हैं, तो यह भी अपवित्रता के अंश में गिनती होता है। क्योंकि आलस्य और अलबेलापन अथवा जो भी यथार्थ कर्म नहीं है, वह विकार है।

११. प्योरिटी की पर्सनैलिटी ही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। ब्राह्मण अर्थात् पावन आत्मा। कहा जाता है — पवित्रता सुख और शान्ति की जननी है। तो यदि मन्सा संकल्प में पवित्रता है, तो उसकी निशानी है मन्सा में सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप की अनुभूति होगी। इसलिए हर समय चेक करो कि — किसी भी प्रकार की उलझन सुख और शान्ति की प्राप्ति में विघ्न रूप तो नहीं बनती है? अगर 'क्यों, क्या' का क्वेश्चन भी है, तो संकल्प-शक्ति में एकाग्रता नहीं और जहाँ एकाग्रता नहीं वहाँ सुख-शान्ति की अनुभूति नहीं। इसलिए जो सुख की शैथ्या पर आराम से अर्थात् शान्ति-स्वरूप में विराजमान रहते हैं वही पवित्र हैं। ऐसी आत्मा के लिए यह विकार भी छत्रछाया बन सेवा के निमित्त बन जाते हैं।

१२. ब्राह्मणपन की श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होने के लिए वृत्ति, स्मृति वा संकल्प से भी अपवित्रता का त्याग चाहिए। स्मृति में कभी भी कोई पाप का संकल्प न आये। इसे ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र। इसके लिए क्रदम-क्रदम पर सावधान रहो। अपनी पावरफुल वृत्ति से अपवित्र वा कमजोरी के वायुमण्डल को मिटाने वाले बनो। यदि कमजोर या पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हो, तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप भूल जाता है। तो प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा अर्थों को धारण करने के लिए मुख से सदैव ज्ञान-रत्न निकालो। एक भी शब्द व्यर्थ नहीं निकलना चाहिए। यदि व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। रजिस्टर साफ़ स्वच्छ नहीं होता।

१३. आप सभी की फर्स्ट चैलेन्ज है प्योरिटी की। तो सम्पर्क और सम्बन्ध में आते संकल्प में भी इस फर्स्ट चैलेन्ज की कमजोरी न हो। आपका फर्स्ट वायदा है — "और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे, तुम्हीं से खाऊ, तुम्हीं से बैठूँ... मेरा तो एक दूसरा न कोई"। तो इस वायदे पर पूरा अटेन्शन रखना अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी को धारण करना। अब इसी फर्स्ट चैलेन्ज में इन्चार्ज

बनो। यही सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। सबसे पहला प्रभाव इसी बात का है। यही एक बात असम्भव को सम्भव करने वाली है। तो इसमें मजबूत बनो। कभी भी स्वयं के संस्कारों से मजबूर नहीं बनना। मजबूरियों को हटाना है और मजबूती की लहर फैलानी है।

१४. ब्रह्माकुमार-कुमारी का अर्थ ही है सदा प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले। यही पर्सनैलिटी विश्व को अपनी ओर आकर्षित करेगी। और यही प्योरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रायलटी देने से छुड़ायेगी। इसी रायलटी से भविष्य रॉयल फैमिली में आयेंगे। तो चेक करो — यह प्योरिटी की रॉयल्टी और पर्सनैलिटी जीवन में कहाँ तक अपनाई है? शरीर की पर्सनैलिटी आत्माओं को देह-भान में लाती है और प्योरिटी की पर्सनैलिटी देही-अभिमानि बनाए बाप के समीप लायेगी। तो अब प्योरिटी की पर्सनैलिटी द्वारा अर्थात् दृष्टि, वृत्ति और कृत्ति के परिवर्तन द्वारा सर्व को बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दर्पण बनो।

१५. ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार, अलौकिकता वा नवीनता पवित्रता है। ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज है कामजीत। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है, ऐसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी पवित्रता और मर्यादायें हैं। पवित्रता की पहली आधारमूर्त प्वाइंट है — स्मृति की पवित्रता। फिर है वृत्ति और दृष्टि की पवित्रता। जब स्मृति में पवित्रता आ जाती कि 'मैं पूज्य आत्मा हूँ, मैं सम्पूर्ण निर्विकारी सर्वगुण सम्पन्न आत्मा हूँ'। तो वह सर्व को इसी ही दृष्टि से देखते हैं और ऐसी पवित्र स्मृति, दृष्टि और वृत्ति वाले ही प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा अर्थों वाले हैं।

१६. पवित्रता की शक्ति ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन है। अगर यह फाउन्डेशन कमजोर है, तो प्राप्तियों की २१ मंजिल वाली बिल्डिंग टिक नहीं सकती। यदि फाउन्डेशन हिलता है, तो प्राप्ति का अनुभव सदा नहीं रह सकता। इसलिए पवित्रता के भिन्न-भिन्न रूपों को अच्छी तरह से जानकर स्वयं, स्वयं के प्रति कड़ी दृष्टि रखो। इसमें स्वयं को चलाओ नहीं, अलबेले नहीं बनो, यह छोटी-सी बात नहीं है। यदि परमात्म-प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आते हो, तो यह प्रभावित होना भी कामना अर्थात्

काम विकार का अंश है । यह महाशत्रु है । कुल-कलंकित की बात है । इसलिए इस विकर्म पर विकराल रूप धारण कर बाप समान प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी वाले बनो ।

शिक्षा देने के साथ साक्षी और क्षमा भाव

१. साकार में बापदादा बच्चों को शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा देते हुए भी सदा उपराम और साक्षी द्रष्टा रहते । ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और संकल्प तभी चलेंगे जब साक्षी वा द्रष्टापन की अवस्था होगी । यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के लक्षण थे । तो इन संस्कारों में समानता लानी है । इन गुणों से ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे । जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है, वही भविष्य में विश्व-महाराजन बनता है ।

२. कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो, पुरुषार्थहीन आत्मा हो — उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करो । जैसे बेहद का बाप शिक्षायें देते भी बच्चों की बुराई वा कमजोरियों को दिल में न समाए, क्षमा करते हैं । पूज्य देवता, भक्तों पर क्षमा करते हैं । तो आप भी मास्टर रचता वा विश्व-अधिकारी हो, पूज्य आत्मा हो । इसलिए किसी की भी बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख, क्षमा करो । फिर उस आत्मा के कल्याण प्रति उसके वास्तविक स्वरूप और गुण को सामने रखते हुए महिमा करो अर्थात् उसे अपनी महानता की स्मृति दिलाओ, जिससे समर्थी आ जाये ।

३. ब्राह्मण परिवार में कोई आत्मा कमजोर है तो उसे बार-बार कहना नहीं है कि तुम कमजोर हो । कोई चाहे कितना भी कमजोर हो, उसको इशारा वा शिक्षा भी देनी हो तो पहले समर्थ बनाकर फिर शिक्षा दो । पहले उनकी विशेषता की महिमा करो, फिर उसको आगे के लिए और भी श्रेष्ठ आत्मा बनने का साधन — कमजोरी पर अटेन्शन इस रीति से दिलाओ । पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ, फिर बीज डालो तो सहज ही बीज का फल निकलेगा । नहीं तो हिम्मतहीन कमजोर संस्कार वश आत्मा मेहनत और समय ज्यादा लेगी ।

४. साक्षी बनकर ड्रामा के हर दृश्य को वा हर एक आत्मा के पार्ट को देखो, तब किसी को भी क्षमा कर सकेंगे । यह साक्षीपन की स्थिति ड्रामा के अन्दर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी होती है । इस साक्षीपन की सीट पर स्थित

रहकर किसी भी आत्मा को विशेष सहयोग वा शिक्षा दे सकते हो । देना भी चाहिए । क्योंकि इससे बहुत मदद मिलती है । जैसे कोई गरीब को अचानक बिगर मेहनत प्राप्त हो जाती है, ऐसे जिस भी आत्मा के प्रति एक्स्ट्रा सहयोग दिया जाता है वह आत्मा महसूस करती है कि हमको विशेष मदद मिली है । साकार रूप में भी कई आत्माओं को एक्स्ट्रा सहयोग देने का सबूत दिखाया । तो ऐसे फालो फादर करो ।

५. कोई आत्मा आपकी स्थिति को हिलाने की भी कोशिश करे, लेकिन अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि-वृत्ति रखना ही उसे क्षमा करना है । कल्याण करने वाले के ऊपर कल्याण करना, अच्छे के साथ अच्छा चलना — यह तो सभी जानते हैं । लेकिन अकल्याण की वृत्ति वाले को अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन कर देना वा क्षमा कर देना — यही है विशेष आत्माओं की विशेषता । मास्टर क्षमा के सागर बन उस आत्मा को क्षमा कर दो, तो यह क्षमा ही उनके लिए शिक्षा हो जायेगी । क्योंकि आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं भी समझता । शिक्षा देने का समय अभी चला गया । अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो—यही शिक्षा देने की विधि है ।

६. यदि आप समझते हो कि यह अच्छा काम नहीं कर रहा है, रांग कर रहा है । तो यथार्थ कर्म न करने वाले को यथार्थ कर्म सिखाने वा शिक्षा देने की विधि है — कभी भी उसे सीधा नहीं कहो कि तुम रांग हो । यह कहने से वह कभी नहीं बदलेगा । जैसे आग बुझाने के लिए आग जलाई नहीं जाती, उस पर ठण्डा पानी डाला जाता है, ऐसे कभी भी किसी को पहले से रांग कहकर शिक्षा देना शुरू कर देंगे तो वह दिलशिकस्त हो जायेगा । पहले उसे अच्छा-अच्छा कहकर थमाओ, पहले पानी डालो फिर उसे सुनाओ कि आग क्यों लगी । पहले यह नहीं कहो कि तुम ऐसे हो, तुमने यह किया..... पहले उसे हिम्मत दिलाओ अर्थात् क्षमा करो, फिर शिक्षा दो ।

७. जैसे बापदादा कभी किसी को डायरेक्ट शिक्षा नहीं देते हैं । मुरली में सुना देते — राइट क्या है, रांग क्या है । अगर कोई सीधा आकर पूछेगा कि क्या मैं रांग हूँ ? तो कहेंगे—नहीं, तुम तो बहुत राइट हो । क्योंकि उसमें उस

समय हिम्मत नहीं होती है । जैसे पेशेन्ट आखिरी श्वास पर भी होता है, तो भी डॉक्टर उसे डायरेक्ट कभी भी नहीं कहेगा कि तुम नहीं बच सकोगे । किसी की दिल कमजोर हो और आप उसे ऐसी बात कह दो तो वह हार्टफेल हो जायेगा । इसलिए शिक्षा देने के पहले उसकी धरनी को देखो, क्षमा करो, फिर शिक्षा दो । रांग को रांग बात समझानी है लेकिन थोड़ा धैर्य से । इशारा दो लेकिन टाइम देखकर ।

८. मालिक बनकर शिक्षा देने के साथ-साथ बालकपन की विशेषता कभी नहीं भूलो । शिक्षा देने के पहले स्वयं में रहम भाव धारण करो, तो आपके दिल के रहम का भाव उसे लगेगा । आप दाता के बच्चे हो; तो पहले उसे हिम्मत दो, उमंग दिलाओ, खुशी दिलाओ । फिर उसे कुछ भी बात मनाना चाहो, कोई भी शिक्षा देना चाहो तो वह बात मना सकते हो । वास्तव में पालना की यही विधि है । यदि क्षमा भाव धारण नहीं करते तो प्रजा आपको विश्व महाराजन कैसे मानेगी ।

९. कोई भी आत्मा आपके सम्पर्क में आती है, तो लक्ष्य रखो कि उससे मुझे दुआयें प्राप्त करनी हैं । दुआयें लेने का साधन है—हाँ जी करना । इसलिए किसी को भी किसी बात में 'ना-ना' करके हिम्मतहीन नहीं बनाओ । अगर कोई रांग भी है, तो उसे सीधा रांग कहकर शिक्षा नहीं दो । पहले उसे दिलासा दो, हिम्मत दिलाओ । पहले उसको 'हाँ' करके पीछे समझाओ तो वह समझ जायेगा । पहले रिगार्ड दो । रांग भी हो, तो भी उसे पहले अच्छा कहो जिससे उसमें हिम्मत आये । जैसे कोई गिरा हुआ होता तो उसे सहारा देकर पहले खड़ा करेंगे, फिर गिरने का कारण बतायेंगे । इसे ही कहते हैं क्षमा भाव अथवा उदार भाव । इससे ही उस आत्मा से सन्तुष्टता की दुआयें मिलेंगी ।

१०. यदि कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन, परिवार की आत्मायें बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ अल्पकाल का मान-शान वा अल्पकाल की इच्छा रखती हैं, तो उन्हें मान देकर स्वयं निर्मान बनो । उस समय उन्हें शिक्षा देने से टकराव पैदा होगा । जैसे अन्जान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को भी खिलौना समझता है; तो उसे कुछ देकर छुड़ाना होता है, हठ से नुकसान हो जाता है । ऐसे उन्हें शिक्षा देकर

जबरदस्ती उन बातों से हटाना अर्थात् कसमकसा में लाकर उनके पुरुषार्थ की जिन्दगी खत्म करना है । इसलिए ऐसे समय पर युक्तियुक्त चलन से परोपकारी बन क्षमा भाव से सम्मान देकर उन्हें समझदार बनाओ, जिससे वह स्वयं महसूस करें कि यह बात नुकसानकारक है ।

११. किसी भी आत्मा को शिक्षा देने के पहले शुभ चिंतन के खजाने से सम्पन्न बनो । सदा वृत्ति और दृष्टि शुभ हो । गिरी हुई आत्मा को ऊंचा उठाने की दृष्टि हो । किसी के प्रति घृणा दृष्टि न हो । किसी की कमजोरी को जानते हुए भी उस आत्मा की कमजोरी भुलाकर उसे विशेषता की स्मृति दिलाओ, जिससे वह समर्थ बन जाये । बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे, लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बनो । दिलशिकस्त आत्मा को दिलखुश मिठाई द्वारा शक्तिशाली बना दो । यही है शिक्षा देने का यथार्थ स्वरूप ।

१२. बापदादा किसी भी बच्चे को शिक्षा देते हैं तो पहले स्वमान देकर फिर शिक्षा देते हैं । आजकल जो भी आते हैं वह मान चाहते हैं । क्योंकि ठुकराये हुए को स्वमान वा रिगार्ड चाहिए । इसलिए सबको पहले रिगार्ड दो, फिर शिक्षा दो । जैसे आपरेशन करते हैं तो पहले इन्जेक्शन आदि से सुध-बुध भुलाते हैं, तो पहले उसे रिगार्ड देकर उस नशे में उसको ठहराओ । फिर कितना भी आपरेशन करेंगे तो आपरेशन सक्सेस होगा । यह भी एक तरीका है । जब यह संस्कार भर जायेंगे तब विश्व से आपको रिगार्ड मिलेगा ।

१३. सारे दिन में जिन भी आत्माओं के सम्पर्क में आते हो, सबके प्रति दया दृष्टि वा कृपा दृष्टि रखो । कोई कैसे भी संस्कार वाला हो लेकिन आपकी दया वा कृपा की दृष्टि पत्थर को भी पानी कर सकती है । अपोजीशन वाले, पोजीशन में टिक सकते हैं । कितना भी विरोधी हो, इस विधि से गले मिलने वाला हो जायेगा । लेकिन क्षमाशील बनो, सिर्फ शिक्षा देने वाले नहीं । जो कमजोर आत्मा है, किसी न किसी बात के वशीभूत है उसके प्रति दया भाव की आवश्यकता है । शिक्षा भले दो लेकिन दया दृष्टि, रहम और शुभ कल्याण की भावना से क्षमाशील बन युक्तियुक्त शब्दों द्वारा शिक्षा दो और फिर साक्षी हो जाओ ।

१४. वर्तमान समय पुरुषार्थियों में दो कमियां दिखाई देती हैं — (१) अभिमान, (२) अन्जानपन । अभिमान के कारण किसी भी शिक्षा वा इशारे को अपनी उन्नति का साधन समझकर समा नहीं सकते हैं, सूक्ष्म में वृत्ति वा दृष्टि में हलचल मचती है । सोचते हैं — इसने ऐसे क्यों कहा... यह भी मेरा अपमान है । दूसरी ओर अपने को बचाने के लिए अन्जान बन जाते हैं । इसलिए उन्हें शिक्षा देनी है तो डायरेक्ट शिक्षा देने के बजाय अपने शिक्षा-स्वरूप से शिक्षा दो । पहले क्षमा भाव धारण करो । जैसे साकार रूप में क्रदम-क्रदम पर हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल करके दिखाया, जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हो । तो ऐसे फालो फादर करो ।

१५. जैसे बापदादा बच्चों को समान बनाने के लिए शिक्षायें देते हैं । यह शिक्षायें ही स्नेह है । तो बाप समान स्नेह सम्पन्न बनकर फिर किसी को शिक्षा दो । वाणी से शिक्षा देने से हिम्मत आती है लेकिन अल्पकाल के लिए । इसलिए वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति अर्थात् अपनी शुभ भावना से आत्माओं में बल भरो । किसको वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कामन बात है, लेकिन अभी सब अनुभव चाहते हैं । इसलिए अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराओ । जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमा करके कई कार्य सफल करते हैं । ऐसे संकल्प-शक्ति इकट्ठी की हुई होगी तो बल भर सकेंगे ।

अथक और निद्राजीत

१. जैसे साकार रूप में ब्रह्मा बाप ने अथक और एकरस स्थिति का इग्जाम्पल बनकर दिखाया। वैसे बच्चों को भी औरों के प्रति इग्जाम्पल बनना है। जैसे स्थूल कार्य में अथक वा हार्ड-वर्कर बनते हो, ऐसे मन की स्थिति में भी ऐसे हार्ड बनो जो मन कोई भी परिस्थिति में पिघल न जाये। इसके लिए तीन बातें सदा ध्यान पर रखो—(१) अटूट, (२) अटल और (३) अथक। जब यह तीनों ही बातें जीवन में होंगी तो बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी और एक-दूसरे के मन के भाव को सहज और स्पष्ट जान लेंगे। इसमें अलबेलेपन वा आलस्य के संकल्प मिक्स न हों। इस निद्रा से निद्राजीत बनो।

२. वर्तमान समय मैजारिटी में विशेष दो कमजोरियां दिखाई देती हैं, जो अथक वा निद्राजीत बनने नहीं देती। एक अलबेलापन और दूसरा आलस्य। सम्पूर्ण विजयी बनने में अलबेलापन अथवा रॉयल रूप का आलस्य बाधक है। जो अलबेलेपन और आलस्य के वश होते हैं, वे स्वयं को निर्दोषी और दूसरों को दोषी बनाते रहते हैं, जिस कारण अलर्ट बनने के बजाय इज़ी और लेजी बन जाते हैं। वह विश्व-कल्याणकारी वा सर्व शक्तियों के महादानी नहीं बन सकते। इसलिए अभी इन दो बातों को अंश रूप से भी मिटाकर अथक सेवाधारी वा निद्राजीत बनो।

३. जैसे कल्प पहले की यादगार में निद्राजीत बनने का विशेष गुण गाया हुआ है, ऐसे अब निद्राजीत वा अथक बनो। जैसे निद्रा में जाने से पहले निद्रा की निशानियां दिखाई देती हैं। उस नींद की निशानी है 'उबासी' और अज्ञान नींद की निशानी है 'उदासी'। आलस्य और अलबेलापन आने से नींद का नशा चढ़ जाता है। कहावत है—'जिन सोया तिन खोया'। यदि किसी भी अलबेलेपन के संकल्प से अपनी प्रालब्ध को व प्रत्यक्षफल की प्राप्ति को खोते हो तो अवश्य अनेक प्रकार की निद्रा में सोते हो। इसलिए इसकी अच्छी तरह से चेकिंग करो और स्वयं को चेंज कर बाप समान अथक और निद्राजीत बनो।

४. जो बेहद सेवाओं के निमित्त बनते हैं उनमें स्थूल वा सूक्ष्म आलस्य

का नाममात्र भी न हो। पुरुषार्थ का भी आलस्य होता है। जब पुरुषार्थ में दिलशिकस्त होते हैं तो आलस्य आ जाता है। क्या करें, इतना ही हो सकता है, ज्यादा नहीं हो सकता है, हिम्मत नहीं, चल तो रहे हैं, कर तो रहे हैं—यह पुरुषार्थ की थकावट भी आलस्य वा निद्रा की निशानी है। आलस्य वाले जल्दी थकते हैं, उमंग वाले अथक होते हैं। तो न स्वयं पुरुषार्थ में थको, न औरों को पुरुषार्थ में थकने दो। ऐसे बाप समान अथक और निद्राजीत बनो।

५. जैसे साकार बाप को सदा अथक देखा, ऐसे फालो फादर करो। पहले स्व के ऊपर मेहनत करो, फिर सेवा में मेहनत करो। अभी जो संकल्प आते हैं—कर लेंगे, हो जायेगा..... यह है आराम के संकल्पों के डनलप का तकिया। अब इसे छोड़ो। "करना ही है"—यह स्लोगन मस्तक में लिख दो तो परिवर्तन हो जायेगा। जैसे भोजन करना, आराम करना निजी कार्य है। अगर २-४ घण्टे आराम कम करते हो तो चिंतन चलता है कि नींद कम की। जैसे नींद को इतना आवश्यक समझते हो। ऐसे स्वचिंतन और स्व की चेकिंग को भी आवश्यक समझो तो अलबेलेपन की निद्रा से निद्राजीत बन जायेंगे।

६. जैसे लोगों को कहते हो कि सोचते-सोचते समय न बीत जाए। इसी प्रकार अपनी उन्नति के प्लैन सोचने के साथ-साथ प्रैक्टिकल में करने के लिए दृढ़ संकल्प करो। रोज़ एक विशेषता को सामने रखते हुए अपने प्लैन को प्रैक्टिकल में लाओ। अपनी उन्नति के लिए रात का समय तो सभी के पास है। जैसे विशेष सर्विस के प्लैन प्रैक्टिकल में लाते हो, तो उन दिनों में निद्राजीत बनते हो। ऐसे अपनी उन्नति के प्रति निद्रा का त्याग करो। कोई भी लक्ष्य प्रैक्टिकल लाने में यदि कोई परिस्थिति सामने आये तो संकल्प की दृढ़ता में अन्तर नहीं आना चाहिए। जितनी दृढ़ता होगी, तो दृढ़ता अलबेलापन समाप्त कर सम्पूर्णता को समीप लायेगी।

७. आलस्य भी विशेष विकार है। वर्तमान समय माया का वार थकावट वा आलस्य के रूप में होता है। आलस्य को समाप्त करने के लिए सदा उल्लास में रहो। कमाई करने का जब किसको उल्लास होता है तो फिर आलस्य खत्म हो जाता है। जब कोई भी कार्य प्रति अपना उल्लास नहीं होता है तो फिर आलस्य वा निद्रा आती है। इसलिए कभी भी उल्लास को कम

नहीं करना है । आलस्य भी कई प्रकार का होता है । अपने पुरुषार्थ में, आगे बढ़ने में आलस्य बहुत विघ्न रूप बन जाता है । यह जो कहने में आता है — अच्छा, सोचेंगे, यह कार्य करेंगे, कर ही लेंगे..... यह आलस्य वा थकावट की निशानी है । अब इस आलस्य को समाप्त कर अथक वा निद्राजीत बनो ।

८. यदि पुरुषार्थ में कोई विघ्न नहीं है, लेकिन लगन भी श्रेष्ठ नहीं है तो इसको भी आलस्य कहेंगे । कई ऐसा अनुभव करते हैं — विघ्न भी नहीं है, ठीक भी चल रहे हैं लेकिन लगन अर्थात् उल्लास वा विशेष कोई उमंग भी नहीं है । तो यह निशानी भी आलस्य की है । इस आलस्य को कभी भी आने नहीं देना । यह आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा, फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा, कमजोर वा निर्बल बना देगा । फिर कमियों की प्रवेशता शुरू हो जायेगी । इसलिए अथक वा निद्राजीत बन निर्बलता को समाप्त करो ।

९. थकावट वा आलस्य के वश जो सुस्ती अथवा उदासी आती है, वह साकार सम्बन्ध से, बुद्धि के सम्बन्ध से वा सहयोग लेने के सम्बन्ध से दूर कर देती है । 'ज्ञानी तू आत्मा' बच्चों में माया इसी छठे विकार, 'सुस्ती' के रूप से प्रवेश होती है । सुस्ती का रॉयल रूप है — करूँगा, सोचूँगा, देखूँगा..... इस रॉयल रूप में ही माया पीछे हटाती है । अब माया के इस सूक्ष्म रूप के चेकर बनो । कई सोचते हैं कि — फिक्स सीट ही कम हैं, हम तो इतना आगे जा नहीं सकते, इतना ही ठीक है । यह भी सुस्ती का ही रूप है । इसलिए अब इस रॉयल रूप की माया को चेक करके अथक और निद्राजीत बन हाईजम्प दो । प्रतिज्ञा द्वारा परिपक्वता लाओ ।

१०. किसी भी प्रकार के अज्ञान को नींद कहते हैं । जागने की निशानी है — जागना अर्थात् पाना । सर्व प्राप्ति करने वाले सदा जागती-ज्योत होंगे । जागती-ज्योत बनने के लिए मुख्य धारणा चाहिए अथकपन की । जब थकावट होती है तब नींद आती है । साकार बाप में अथकपन की विशेषता सदा अनुभव की । ऐसे फालो फादर करने वाले सदा जागती-ज्योत बनते हैं । तो चेक करो कि चलते-चलते कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं देती है ? अनेक प्रकार की निद्रा से निद्राजीत बनो ।

११. सुस्ती का मीठा रूप आलस्य है । पुरुषार्थी जीवन में आलस्य और अलबेलापन आना ही निद्रा है । बुद्धि में ज्ञान ज्यादा आ जाता है तो उससे भी अलबेलापन हो जाता है । जो अपने को कम समझदार समझते हैं वह फिर भी तीव्र पुरुषार्थ करते हैं, लेकिन जो स्वयं को ज्यादा समझदार समझते हैं वह ज्यादा अलबेले हो जाते हैं । उनमें पुरुषार्थ की तड़पन नहीं रहती, अपने आपसे तृप्त हो जाते हैं, सोचते हैं — ज्ञान तो समझ लिया, सर्विस तो कर ही रहे हैं, चल ही रहे हैं । इस रूप से तृप्त आत्मा नहीं बनना है । पुरुषार्थ में तड़प होनी चाहिए । अभी ढीला और मीठा पुरुषार्थ छोड़ अथक और निद्राजीत बन शक्तिरूप में स्थित हो शक्तिशाली पुरुषार्थ करो । ।

१२. संगमयुगी ब्राह्मणों के संस्कार त्याग के हैं । अब इन संस्कारों को इमर्ज करो । आराम-पसन्दी के संस्कार ब्राह्मणपन के संस्कार नहीं । जैसे लौकिक पढ़ाई में जिसे चिंता होती है, उनकी नींद फिट जाती है, वही पास होते हैं । जो आराम पसन्द होते वह पास नहीं हो सकते । यहाँ भी पुरुषार्थ की चिंता लग जानी चाहिए । शुभ चिंतन की, सम्पूर्ण बनने की, कमजोरी को दूर करने की चिंता हो । जो संकल्प करते हो उसे रोज़ रिवाइज करो । हमेशा ख्याल रहे कि छोटा-सा दाग भी मेरी वैल्यू कम कर देगा । इसलिए एक भी दाग न रहे । यह चिंतन चिंता के रूप में हो तो पुरुषार्थ में अथक वा निद्राजीत बन जायेंगे, अलबेलापन समाप्त हो जायेगा ।

१३. लगन की अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए दृढ़ संकल्प की तीली चाहिए । दृढ़ संकल्प करो कि — 'मर जायेंगे, मिट जायेंगे लेकिन बाप समान बनकर ही दिखायेंगे' । ऐसे नहीं — बनना तो चाहिए, बन ही जायेंगे, पुरुषार्थ कर तो रहे हैं । यह सोचना एक प्रकार से बुझी हुई तीली है । यह संकल्प रूपी बीज दृढ़ता रूपी सार सम्पन्न नहीं है । इस कारण जो फल की आशा रखते हो व भविष्य सोचते हो वह पूर्ण नहीं हो पाता है और चलते-चलते मेहनत ज्यादा, प्राप्ति कम देखते हो तो दिलशिकस्त हो जाते हो । फिर थकावट का अनुभव होता है । थकावट आने से किसी न किसी स्वभाव-संस्कार के दास बन उदास हो जाते हो । इसलिए अब दृढ़ संकल्प से अथक और निद्राजीत बन 'पास विद् ऑनर' बनो ।

१४. सदा अथक बनने के लिए बापदादा द्वारा मिली हुई एक गोल्डन वर्शन्स की गिफ्ट को सदा साथ रखो, वह गिफ्ट है कि हर दिन 'स्व उत्साह में रहना है और सर्व को उत्साह दिलाना है'। संकल्प करो कि न कभी उत्साह कम करेंगे और न उत्साह कम होने देंगे। जैसे स्थूल व्रत रखते हो, उसमें भी भूख-प्यास लगती है तो भी व्रत नहीं छोड़ते, चाहे बेहोश भी क्यों न हो जाएं। तो यह भी व्रत लो—कोई भी समस्या आ जाए, कोई उत्साह को मिटाने वाला आ जाए लेकिन न उत्साह छोड़ेंगे न औरों का कम करायेंगे, बढ़ेंगे और बढ़ायेंगे। इसी संकल्प से सदा उत्सव होते रहेंगे, मेले वा सेमीनार होते रहेंगे, कभी थकावट फील नहीं होगी।

१५. जब भी कोई बात में थकावट का अनुभव हो तो कर्म और कर्मेन्द्रियों से डिटैच हो जाओ। अशरीरी बनना अर्थात् सो जाना। याद ही बापदादा की गोदी है। तो जब भी थक जाओ तो अशरीरी बन, अशरीरी बाप की याद में खो जाओ अर्थात् सो जाओ। सदा रूहानी गीत गाते और खुशी में नाचते रहो तो अथक बन जायेंगे। विशेष अमृतवेले के वरदानी समय में सुस्ती वा निद्रा का वार नहीं होना चाहिए। इसके लिए याद में बैठने की भिन्न-भिन्न विधि अपनाओ। रोज़ वैरायटी अनुभव करो। कभी परमधाम में चले जाओ, कभी स्वर्ग में चले जाओ, कभी मधुवन में तो कभी किसी सेवा-स्थान का चक्र लगाओ। वैराइटी होने से रमणिकता में आ जायेंगे। सुस्ती वा थकावट भाग जायेगी।

सदा उदारचित, आधारमूर्त और उद्धारमूर्त

१. जैसे साकार ब्रह्मा बाप विशेष उदारचित के गुण से अथवा उद्धारमूर्त की स्मृति से सदा सफलतामूर्त बने, ऐसे फालो फादर करो। सर्विस में सम्पूर्ण सफलता के लिए विशेष उदारचित का गुण धारण करो। जो जितना उदारचित होता है उतना सर्व का उद्धार करने के निमित्त बन सकता है। उदारचित बनने से सर्व का सहयोग लेने के पात्र बन जाते हैं। तो सदैव समझना चाहिए कि हम सर्व आत्माओं के उद्धार करने के निमित्त हैं। इसलिए मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सब बातों में उदारचित बनना है। जितना जो उदारचित, उद्धारमूर्त बनते हैं, उतना वह आकर्षणमूर्त भी होते हैं।

२. साकार रूप की दो मुख्य विशेषताओं को फालो कर समानता में आना है। (१) अपने को आधारमूर्त समझकर चलो। जैसे बापदादा सर्व के आधारमूर्त हैं, ऐसे स्वयं को सारे विश्व के आधारमूर्त समझने से जो भी कर्म करेंगे वह ज़िम्मेवारी से करेंगे, अलबेलापन नहीं रहेगा। जो कर्म आप करेंगे वही सब करेंगे। (२) उद्धारमूर्त समझकर चलो। जितना औरों का उद्धार उतना अपना भी उद्धार करेंगे। औरों का उद्धार तब कर सकेंगे जब सदा इस स्मृति में रहेंगे कि मैं हूँ ही उद्धारमूर्त आत्मा।

३. अपनी सर्व शक्तियों के आधार से विश्व का उद्धार करने के लिए बाप के गुण और शक्तियों को स्वयं में धारण कर चुम्बक-स्वरूप बनो। स्वयं को विश्व का आधार और उद्धारमूर्त समझकर हर क्रदम उठाओ। मैं विश्व-कल्याणकारी आत्मा सर्व का आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हूँ — यह ज़िम्मेवारी का ताज धारण करो। ताजधारी बनने से ही तख्त-नशीन बन सकेंगे। दिलतख्त-नशीन बनने के लिए बाप की दिल का जो श्रेष्ठ संकल्प है, उस संकल्प को पूरा करो। विश्व-कल्याणकारी बनो। विश्व के प्रति सर्व शक्तियों के दाता बनो।

४. उदारचित, उद्धारमूर्त बनना ही ब्रह्मा बाप को फालो करना है। जितना जो उदारचित बनता है, उतना वह अनेकों के लिए उदाहरण-स्वरूप बनता है। लेकिन उदारचित, आधारमूर्त वा उद्धारमूर्त बनने के लिए अधिकारी बनना

पड़े । अधिकारी का अर्थ ही है कि अधिकार सदैव याद रहे, कभी किसी के भी अधीन न हो । जैसे बापदादा उदारचित्त के साथ-साथ उदाहरण रूप बने, वैसे आप भी अनेकों के लिए उदाहरण रूप बनो तो सहज ही अनेकों का उद्धार कर सकेंगे ।

५. सदा इस स्मृति में रहो कि हम श्रेष्ठ आत्माओं की चढ़ती वा उड़ती कला के आधार से ही सारे विश्व का उद्धार होना है और सर्व आत्माओं की जन्म-जन्मान्तर की मुक्ति वा जीवन्मुक्ति की आशाएँ पूरी होती हैं । ऐसा अटेन्शन वा स्मृति रख हर कर्म करना है । इसी स्मृति-स्वरूप से समर्थ-स्वरूप हो जायेंगे । इस अटेन्शन से किसी भी प्रकार का टेन्शन, अटेन्शन में परिवर्तित हो जायेगा । अभी तो बार-बार अटेन्शन दिलाना पड़ता है कि याद करो । लेकिन जब आधार और उद्धारमूर्त की स्मृति के शक्तिशाली स्वरूप में स्थित होंगे तो अनेकों के टेन्शन को समाप्त करने वाले, अटेन्शन खिंचवाने वाले सत्य तीर्थ बन जायेंगे ।

६. जो विशेष ब्रह्मा बाप समान उदारचित्त, आधारमूर्त, उद्धारमूर्त आत्मायें हैं उनके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक भरपूर होगा । उनका हर संकल्प, हर सेकण्ड दूसरों के प्रति होगा । वे कोई भी तड़पती हुई आत्मा को सेकण्ड में जीय-दान वा मन की शान्ति दे सकेंगे । अपनी महादानी, उदारचित्त की स्टेज पर स्थित हो उन्हें उनकी भावना का फल दे देंगे । कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहेगी । उनके अन्दर यही संकल्प होगा कि इस आत्मा का भी कल्याण हो । उनका देना ही लेना होता है । तन-मन-धन सब विश्व-कल्याण प्रति होता है ।

७. सदैव अपने को विश्व-परिवर्तन के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त समझकर चलने से हर कर्म स्वतः ऊंचा वा श्रेष्ठ होगा । सर्व आत्माओं के प्रति सदैव कल्याण की भावना वृत्ति-दृष्टि में रहेगी । तो आपका हर कर्म ऐसा हो जो यादगार बनने योग्य हो । जैसे साकार में अनुभव किया — कैसे हर कर्म यादगार बनाया । ऐसे ही आप सभी का हर कर्म यादगार बने, उसके लिए यही दो बातें याद रखो कि हम आधार और उद्धारमूर्त हैं । इसी शान में रहो तो माया की आकर्षण से बचे रहेंगे ।

८. जो आधारमूर्त होते हैं उनके ऊपर विश्व के उद्धार को ज़िम्मेवारी होती

है । अभी आपके एक-एक क़दम के पीछे अनेकों के क़दम उठाने की ज़िम्मेवारी है । जैसे पहले साकार रूप फालो फादर के रूप में सामने था, ऐसे अभी आप निमित्त आत्मायें हो । इसलिए सदैव ध्यान रहे कि — जैसे, जिस रूप से और जहाँ हम क़दम उठावेंगे, वैसे सर्व आत्मायें हमारे पीछे फालो करेंगी । यह ज़िम्मेवारी है । जितना सर्व आत्माओं के उद्धार के निमित्त बनेंगे उतना उन सर्व की आशीर्वाद हल्केपन का अनुभव करायेगी और सभी की मदद भी मिलती रहेगी, इससे बड़ी ज़िम्मेवारी भी हल्की हो जायेगी ।

९. स्वयं को बाप समान आधारमूर्त और उद्धारमूर्त समझकर उदारचित्त स्थिति से सदैव दान करते रहो । मन्सा द्वारा सर्व शक्तियों का दान करो, वाणी द्वारा ज्ञान दान करो और कर्म द्वारा सर्व गुणों का दान करो । ऐसे उदारचित्त बन दान करने से मन्सा संकल्पों के ऊपर विजयी बन जायेंगे और संकल्प को जहाँ चाहें वहाँ टिका सकेंगे । ज्ञान-रत्नों का दान करने से एक-एक वचन इतना वैल्यूएबल हो जायेगा जो एक-एक वचन सुनने के लिए अनेक आत्मायें प्यासी होंगी, जिसको जो बोलेंगे उसे वह लग जायेगा । और कर्म द्वारा गुणों का दान करने से चलन वा चेहरे से फरिश्तेपन की झलक दिखाई देगी ।

१०. हर एक को यही एक दृढ़ संकल्प धारण करना है कि हम ही विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त अर्थात् विश्व-कल्याणकारी हैं । इसी एक संकल्प से अपने को वा विश्व को बदल सकते हो । सदा अपने इस श्रेष्ठ मर्तबे और श्रेष्ठ कर्तव्य को सामने रखते हुए हर संकल्प वा कर्म करो तो कोई भी संकल्प वा कर्म व्यर्थ नहीं होगा । जो अपने आपको भूलता है, वही अनेक भूलों के निमित्त बन जाता है । इसलिए अपने मर्तबे को सदैव सामने रखो अर्थात् स्वयं को आधारमूर्त और उद्धारमूर्त समझकर चलो ।

११. सदैव यही स्मृति रखकर चलो कि हमारे हर संकल्प के पीछे विश्व-कल्याण का सम्बन्ध है । हम आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हैं । इसलिए जितना-जितना स्वयं को समर्थ बनायेंगे, उतना ही सृष्टि के परिवर्तन का समय समीप ला सकेंगे । क्योंकि सारी सृष्टि के परिवर्तन का आधार विशेष आप आत्माओं के ऊपर है । इसलिए आधारमूर्त आत्माओं को स्वयं पर इतना अटेन्शन देना है । जैसे दूसरों को कहते हो कि समय के साथ स्वयं को परिवर्तन

में लाओ, ऐसे सदैव अपने को भी यह स्मृति दिलाओ कि समय के साथ-साथ स्वयं को भी परिवर्तन में लाना है । अपने को परिवर्तन में लाने से सृष्टि का परिवर्तन हो जायेगा ।

१२. अभी इस कल्प-वृक्ष का हर एक मनुष्यात्मा रूपी पत्ता पुराना तो हो ही गया है लेकिन उसमें बीमारियां भी लगी हुई हैं । चारों ही सत्तायें (धर्म सत्ता, राज्य सत्ता, विज्ञान की सत्ता और भक्ति की सत्ता) शक्तिहीन और खोखली हो गई हैं । यह वृक्ष जड़जड़ीभूत हो गया है, अब नया वृक्षारोपण आप आधारमूर्तियों द्वारा ही होना है । ब्राह्मण माना नये वृक्ष की जड़ें अर्थात् फाउन्डेशन । तो इसी स्मृति में रह योग-अग्नि को ऐसा प्रज्वलित करो जो पुराना वृक्ष भस्म हो जाए । ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को अब साकार रूप दो । बाप के स्नेही बन इस विशाल कार्य में सहयोगी बनो ।

१३. हम विश्व-परिवर्तन की आधारमूर्त आत्मायें हैं — इसी स्मृति से विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिन-रात बिजी रहो । स्वयं को सर्व के उद्धारमूर्त समझकर संगठित रूप में रहम की भावना, विश्व-कल्याण की भावना, सर्व आत्माओं को दुःखों से छुड़ाने की शुभ कामना अब दिल में उत्पन्न हो । संगठित रूप में इस एक संकल्प को अपनाओ अर्थात् दृढ़ संकल्प की इकट्टी अंगुली दो तो यह कलियुगी पर्वत परिवर्तन हो गोल्डन वर्ल्ड बन जायेगा । अब समय का इंतज़ार नहीं करो, समय को आधार नहीं बनाओ लेकिन यह इन्तज़ाम करो ।

१४. विश्व की सर्व आत्माओं का अटेन्शन अब आप निमित्त बनी हुई आधारमूर्त, उद्धारमूर्त आत्माओं की ओर है । क्योंकि विश्व-परिवर्तन की घड़ी आप हो । तो अपने से पूछो कि यही शुभ संकल्प सदा रहता है कि — “हम विश्व नव-निर्माण करने वाले विश्व के आधारमूर्त हैं ? हम ही इस पुराने विश्व को परिवर्तन करने वाले हैं ? तो हमने विश्व परिवर्तन के पहले स्वयं का परिवर्तन किया है ?” इस पुरानी दुनिया के समय को समाप्त करने के निमित्त स्वयं को समझते हुए अब स्वयं को ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनाओ ।

१५. सर्व आत्माओं के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हम पूर्वज आत्मायें हैं, अब इसी श्रेष्ठ स्वमान में सदा रहना है । क्योंकि हर कर्म का आधार, कुल

की मर्यादाओं का आधार, रीति-रस्म का आधार पूर्वज होते हैं । तो ब्राह्मण सो देवता बनने वाली आत्मायें आदि देव की आदि रचना अर्थात् पूर्वज हैं । वर्तमान समय आप जो संकल्प वा कर्म करते हो, उसे ही स्थूल वा सूक्ष्म में सब फालो करते हैं । इसलिए इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी समझते हुए हर संकल्प व कर्म करो । स्वयं को पूर्वज वा आधारमूर्त, उद्धारमूर्त की पोजीशन पर स्थित कर सर्व आत्माओं को अब शक्तियों का जल दो ।

सदा दानी, महादानी और वरदानी

१. जैसे ब्रह्मा बाप ने महादानी बन अपने समय का, सुख के साधनों का, अपने गुणों का और अपनी प्राप्त हुई सर्व शक्तियों का अन्य आत्माओं की उन्नति अर्थ दान किया। इसलिए उनके संकल्प वा बोल स्वतः ही वरदान रूप बन गये। ऐसे फालो फादर करो। आपके जो भी संकल्प वा बोल हों वह सर्व आत्माओं के प्रति वरदान रूप हों। महादानी अर्थात् त्याग और तपस्या-मूर्त। इसीलिए त्याग, तपस्या और महादान का प्रत्यक्षफल हर संकल्प वा बोल वरदान रूप हो जाता है। ऐसी महादानी, वरदानी आत्मायें ही बाप समान गाई जाती हैं।

२. सर्व आत्माओं को बाप का खजाना देने वाले दाता अर्थात् दानी बनो। अपनी सर्व शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़पती हुई आत्माओं को जीयदान दो। वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप सम्बन्ध में लाओ। तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य २१ जन्मों के लिए राज्यपद का अधिकारी बनायेंगे। इसलिए जब भी कोई आत्मा को देखते हो तो यही वृत्ति रहनी चाहिए कि इन सभी आत्माओं के प्रति बाप ने हमें वरदानी और महादानी निमित्त बनाया है। इस वृत्ति से देखने से कोई भी आत्मा को वरदान वा महादान देने से वंचित नहीं छोड़ेंगे।

३. महादानी, वरदानी मूर्त बनने के लिए सदा बाप के समान और समीप रहने वाले बनो। अगर कभी बाप समान और कभी बाप के समान नहीं लेकिन स्वयं के पुरुषार्थी हैं, तो वरदानी नहीं बन सकते। क्योंकि बाप पुरुषार्थ नहीं करता लेकिन सदा सम्पन्न स्वरूप में है। अगर बहुत पुरुषार्थ करते, तो पुरुषार्थी छोटे बच्चे हैं, बाप समान नहीं। समान अर्थात् सम्पन्न। ऐसे सदा समान रहने वाले सदा दानी और वरदानी बनते हैं। महादानी और वरदानी बनने के लिए विशेष दो धारणायें याद रखो — (१) मधुरता, (२) नम्रता।

४. जो महादानी, वरदानी हैं वह सदा मालामाल हैं। आपके आगे आजकल के नम्बरवन धनवान भी भिखारी हैं। क्योंकि जितना धन है, उतना दुःख है। तो जो दुःखी है, वह सुख के भिखारी हैं। अभी ऐसा समय आयेगा

— जो विश्व के नामीग्रामी धनवान हैं, जिन्हें अभी सोचने वा सुनने की फुर्सत नहीं है वह सब आपके आगे क्यूं में होंगे, एक सेकण्ड के सुख के लिए तरसेंगे, तड़पेंगे। ऐसे समय पर आप सभी को अपनी महादानी की स्टेज पर स्थित होकर दान देना होगा। तो सदा इसी नशे में रहो कि हम विश्व में सबसे अधिक मालामाल हैं। हमें 'अमर भव' का वरदान मिला हुआ है।

५. महादानी उसे कहा जाता है जो स्वयं के प्रति नहीं बल्कि हर वस्तु, हर समय अन्य को दान-पुण्य करता रहे अर्थात् अविनाशी दान चलता रहे। सदा सेवा की स्टेज पर रहने से स्वयं पर फुल अटेन्शन स्वतः रहेगा और जो भी कमजोरी महसूस होती है वह समाप्त हो जायेगी। क्योंकि अनेक आत्माओं की दिल से आशीर्वाद प्राप्त होती हैं। महादानी आत्मायें स्वयं प्रति याद की यात्रा में जो समय देती हैं वह भी स्वयं के साथ-साथ सर्व के कल्याण व सर्व की सेवा प्रति होता है। स्वयं अनुभव करने का समय तो काफी मिला लेकिन अभी महादानी और वरदानी बनने का समय है।

६. जैसे भक्ति-मार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं। तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहती। क्योंकि देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही दूसरों की इच्छायें पूर्ण करना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न बनाना है। अन्य को देना अर्थात् स्वयं में भी वह कमी भरना। अन्य को बनाना ही बनना है। तो जिस सब्जेक्ट में जिस विशेषता वा गुण में कमी महसूस होती हो, उसी विशेषता वा गुण का दान करो अर्थात् अन्य आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ, तो सेवा का प्रत्यक्षफल मेवा के रूप में अनुभव करेंगे।

७. जब देखते हो कोई आत्मा हिम्मतहीन, निर्बल है लेकिन इच्छुक है, चाहना रखती है कि हम कुछ प्राप्ति करें। तो ऐसी आत्माओं के लिए ज्ञान-दाता बनने के साथ-साथ विशेष रूप से उस आत्मा को बल देने की वा विशेष उसके प्रति शुभ भावना वा शुभचिंतक बनने की आवश्यकता है — यही है वरदाता की स्टेज। एक्स्ट्रा बल उनको अपनी तरफ से वरदान के रूप में देना है। ऐसी आत्माओं प्रति विशेष रहमदिल बन अपनी शक्ति की मदद दे उनको ऊंचा उठाना — यही है वरदान का रूप।

८. बाप समान वरदाता-मूर्त बनने के लिए—(१) जो भी संकल्प उठता है उसे चेक करो कि यह जो संकल्प उठा उसमें बाप के प्रति बलिहार जाने का रहस्य भरा हुआ है ? जब हर संकल्प वरदाता बाप पर कुर्बान हो, तब दूसरों को वरदान दे सकेंगे । (२) वरदानीमूर्त बनने के लिए सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा चाहिए । तो रोज़ अपना बैंक-बैलेन्स देखो कि इतना स्टॉक जमा है जो दूसरों को दे सकें ? यदि खज़ाना जमा होगा तो सूरत से ईश्वरीय नशा वा नारायणी नशा दिखाई देगा ।

९. जैसे भक्ति में सिर्फ कोई ईश्वर के अर्थ दान करते हैं तो उन्हें भी विनाशी राज्य पद की प्राप्ति हो जाती है । ऐसे सोचो— जो हर संकल्प और सेकण्ड ईश्वरीय सेवा में लगाते हैं उन्हें कितनी श्रेष्ठ प्राप्ति होगी ! ऐसा महादानी, सर्व त्यागी सहज ही बन जाता है । ऐसे सर्व त्यागी वर्तमान और भविष्य में सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली बनते हैं । ऐसी भाग्यशाली आत्मा को देखते हुए अनुभव करते हुए अन्य आत्मायें भी उनके भाग्य के गुण गाती हैं और वे अनेक आत्माओं को अपने श्रेष्ठ भाग्य के आधार से भाग्यशाली बनाने के निमित्त बनते हैं ।

१०. भक्ति-मार्ग में जो महादानी, कल्याणकारी वृत्ति वाले होते हैं वह कोई भी दान अपने प्रति नहीं करते, सर्व आत्माओं प्रति ही संकल्प करेंगे । तो यह रीति-रस्म आप श्रेष्ठ अथवा कल्याणकारी आत्माओं से शुरू हुई है, जो भक्ति में रस्म चली आती है । जरूर प्रैक्टिकल में हुई है तब यादगार रूप में रस्म चल रही है । तो दूसरों के अर्थ महादानी बनने वा दूसरों के प्रति समय और संकल्प लगाने से, सर्विसएबल बनने से सदा सक्सेसफुल स्वतः बन जायेंगे । क्योंकि अनेक आत्माओं को सुखी वा शान्त बनाने का रिटर्न प्रत्यक्षफल के रूप में स्वतः ही प्राप्त हो जाता है । स्वयं की उन्नति के लिए अलग समय नहीं देना पड़ता ।

११. आपके आदि, अनादि, अविनाशी संस्कार दातापन के हैं । संगम पर आप मास्टर दाता हो । आधा कल्प देवता रूप से देने वाले हो, द्वापर से आपके जड़ चित्र, देने वाले 'देवता' ही कहलाते हैं । तो सारे कल्प के संस्कार दातापन के हैं । इसलिए हे दातापन के संस्कार वाली सम्पन्न आत्मायें ! सदा

देते चलो । लेने की भावना नहीं रखो । देते जाओ, देते हुए गिनती नहीं करो कि मैंने इतना दिया, इसने कुछ नहीं दिया । यह गिनती करना दातापन के संस्कार नहीं । आपके भण्डारे भरपूर हैं, तो गिनती क्यों करते हो । शाहनशाह बनो, दाता के बच्चे दाता बनो । कोई आपको दे, न दे, आप देते जाओ । सौदेबाजी नहीं करो ।

१२. दुनिया में सबसे श्रेष्ठ दान नेत्र-दान कहा जाता है । सबसे बड़े से बड़ा जीयदान कहो या वरदान कहो या महादान कहो, वास्तव में यही है । तो अपनी लाइट और माइट के द्वारा डिवाइन इन्साइट अर्थात् तीसरे नेत्र का दान दो, जिससे कि वह मुक्ति और जीवन्मुक्ति के ठिकाने को देख भी सकें । यह है श्रेष्ठ आत्माओं का कर्तव्य । सिर्फ अपने प्रति ही लाइट और माइट को रखा तो लाइट-हाउस नहीं कहलायेंगे । अगर अपने में लाइट और माइट है तो अपने साथियों को और विश्व की सर्व आत्माओं को महादान दो और वरदान दो ।

१३. भक्ति-मार्ग में दान की हुई वस्तु कभी अपने प्रति नहीं लगाते हैं । आपने भी तन, मन, धन, सम्पत्ति, समय सर्वस्व अर्पण कर दिया । तो अर्पण करने के बाद स्वयं की कमजोरी प्रति व स्वयं के पुरुषार्थ प्रति वस्तु लगाना— यह अमानत में ख्यानत है । अब तो अपना सब-कुछ विश्व-कल्याण में लगाना है, तब महादानी और वरदानी कहा जायेगा । अभी आप वरदानी, महादानी आत्माओं का हर श्वास, हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर कर्म, सर्व शक्तियां, सर्व ईश्वरीय संस्कार, श्रेष्ठ स्वभाव व सर्व प्राप्त हुए खज़ाने विश्व की ही सेवा के प्रति हों ।

१४. आजकल की विशेष सेवा है वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाने की । वायुमण्डल पावरफुल होने से सब सेफ़ हो जायेंगे । वरदानी का अर्थ ही है वृत्ति से सेवा करने वाले । महादानी हैं-वाणी से सेवा करने वाले । तो वर्तमान समय वरदानी स्टेज की जरूरत है । वृत्ति से जो चाहो वह कर सकते हो । वरदानी बच्चे स्वयं के जमा किये हुए खज़ानों को वरदान द्वारा अर्थात् स्वयं की शक्ति, स्वयं के गुणों, स्वयं के खज़ानों द्वारा निर्बल आत्माओं को हिम्मत, उल्लास की शक्ति और खुशी का खज़ाना अपने सहयोग की शक्ति से देकर

कमजोर को शक्तिशाली बना देते हैं ।

१५. जैसे अपना साकार स्वरूप सदा और स्वतः याद रहता है, ऐसे ही अपना निजी व वरदानी-स्वरूप सदा स्मृति में रहना चाहिए । वरदानी माना ही देने वाला दाता । तो जब वरदानी और महादानी स्वरूप सदा स्मृति में रहेगा, तो जो भी आत्मा सामने आयेगी, उसे कुछ न कुछ दाता बनकर के देंगे जरूर । कोई को भी खाली नहीं भेजेंगे । जैसे साकार बाप के पास कोई भी आता था तो खाली हाथ नहीं भेजते थे । स्थूल रूप में भी कोई न कोई यादगार जरूर देते थे । ऐसे फालो फादर करो । लक्ष्य रखो कि वह कम से कम थोड़ा बहुत तो लेकर जाये । तब तो आपके भविष्य राज्य में आयेंगे ।

१६. वरदाता बाप द्वारा सर्व वरदानों में मुख्य दो वरदान सभी बच्चों को प्राप्त होते हैं — (१) योगी भव और (२) पवित्र भव । सप्ताह कोर्स का रहस्य इन दो वरदानों में समाया हुआ है । जो इन दो वरदानों को स्वरूप में लाते हैं वह स्वयं भी वरदानी-मूर्त बन औरों को देने वाले दाता बन जाते हैं । तो अपना यह निजी स्वरूप वा वरदानी स्वरूप सदा ही स्मृति में रखो । इससे अपवित्रता वा विस्मृति का नामोनिशान नहीं रहेगा । यही है वरदानों का कोर्स करना । जब यह कोर्स प्रैक्टिकल में करेंगे तब फर्स्टक्लास में जाने के अधिकारी बनेंगे ।

सदा आशावादी

(होपलेस में भी होप पैदा करने वाले)

१. ब्रह्मा बाप ने कमजोर वा दिलशिकस्त, होपलेस आत्माओं में भी सदा उम्मीदें रखीं । 'सदा हिम्मत बच्चे मदद बाप' की विधि सुनाते हुए तीव्र पुरुषार्थी बनाया । क्योंकि बाप की मदद और दाता की देन, वरदाता के वरदान तो सभी बच्चों प्रति सागर के समान हैं । लेकिन सागर से लेने वाले बच्चे कोई तो सागर समान भरपूर बन औरों को भी बनाते हैं और कोई मदद की विधि को न जान मदद लेने के बजाय, अपनी मेहनत से कभी तीव्रगति, कभी दिलशिकस्त के खेल में नीचे-ऊपर होते रहते हैं । अपने ही अलबेलेपन के कारण मदद की विधि को समय पर भूल जाते हैं । ऐसी आत्माओं में भी उम्मीदें रखो और उन्हें मदद देकर आगे बढ़ाओ ।

२. कोई भी कमजोर आत्मा है तो उसकी कमजोरी को समाकर सहयोग देते रहो । तिरस्कार नहीं करो लेकिन तरस की भावना रखो । जैसे दुःखी आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनते हो, वैसे कमजोर वा दिलशिकस्त आत्माओं के ऊपर भी रहमदिल बनो । जब ऐसे रहमदिल बनेंगे तब अनेक होते हुए भी एक दिखाई देंगे । जैसे लौकिक में जो समझदार, स्नेही परिवार होते हैं वह एक दूसरे की कमजोरी की बात समाकर, सहयोगी बनकर बाहर अपना नाम बाला करते हैं । अगर परिवार में कोई गरीब होता है तो उसको मदद देकर भरपूर कर देते हैं । ऐसे यह भी परिवार है । अगर कोई संस्कार के वश है तो सहयोग देकर, हिम्मत बढ़ाकर उसे उल्लास में लाते हुए अपना साथी बनाओ ।

३. जैसे बापदादा किसी भी बच्चे की कमजोरी दिल पर नहीं रखते, लेकिन दिलाराम बनकर दिल को आराम देते हैं । तो आप बच्चे भी फालो फादर करो । किसी की कमजोरी दिल पर धारण नहीं करो, लेकिन हर एक की दिल को दिलाराम समान आराम दो । आशावादी बनो । हिम्मतहीन की लाठी बनो । मुख से कभी भी किसी की कमजोरी वर्णन नहीं होनी चाहिए । साथी

हो, चाहे प्रजा हो — हर आत्मा के मुख से दुआयें निकलें । आपके लिए आशीर्वाद निकले कि यह सदा स्नेही और सहयोगी आत्मा है ।

४. आजकल के जमाने में धरनी को परिवर्तन करना कोई मुश्किल बात नहीं है । कैसी भी धरनी में आजकल साइंस फल पैदा कर देती है, नाउम्मीदवार को भी उम्मीदवार बना देती है । तो आप मास्टर सर्वशक्तिमान् बच्चे भी अब ऐसी सेवा करो । असम्भव को सम्भव करना वा ना-उम्मीदवार को उम्मीदवार बनाना — यह चैलेन्ज आप ब्राह्मणों का स्वधर्म अर्थात् धारणा है । ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है — उम्मीदवार बन बाप की सर्व उम्मीदे पूरी करना । क्योंकि बापदादा हर बच्चे के एक क्रदम के पीछे लाखों क्रदम स्वयं सहयोगी बनकर हिम्मत और उल्लास बढ़ाते हैं । तो फालो फादर करो अर्थात् सदा सर्व में उम्मीदें रख हिम्मत उल्लास बढ़ाओ ।

५. सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षाएँ व विघ्न अति के रूप में आयेंगे । इसलिए आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था, अब क्यों है ! फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी, न चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न होंगे । यही तो पेपर है । पेपर को देखकर घबराना वा दिलशिकस्त नहीं होना है । रास्ते में कोई भी रुकावट आये तो योग-अग्नि को तेज करके रास्ता क्लीयर कर दो । निराश होने के बजाय मिली हुई हिम्मत और उल्लास की प्वाइंटस बुद्धि में दौड़ाओ तो रास्ता क्लीयर हो जायेगा । पुरुषार्थ की गति में अंगद नहीं बनो, विजयी बनने के लिए अंगद बनो ।

६. बच्चों का जन्म होता ही है बाप की उम्मीदें पूरी करने के लिए । इसलिए आशावादी बन बाप की जो भी उम्मीदें हैं, वह पूरी करो । जबकि बापदादा एक क्रदम के पीछे लाखों क्रदम स्वयं भी सहयोगी बनकर हिम्मत और उल्लास बढ़ाते हैं, फिर मुश्किल का अनुभव क्यों ? जबकि आप दुनिया की सर्व मुश्किलातों को मिटाने वाले हो, मुश्किल बात सहज अनुभव कराने वाले हो, तो आप कोई भी बात में मुश्किल का अनुभव कैसे कर सकते । इसलिए कभी भी यह संकल्प न आये कि — ऐसे क्यों, यह कैसे ? 'कैसे' के बजाय, 'ऐसे' शब्द आये । सब प्रश्न समाप्त हो जाएं ।

७. जैसे साकार रूप में हर संकल्प और हर कर्तव्य में कभी कोई मुश्किल बात का अनुभव या वर्णन नहीं किया । स्थापना के समय सारी दुनिया एक तरफ और एक आत्मा दूसरे तरफ थी, फिर भी मुश्किल का अनुभव कर कभी निराश नहीं हुए । ऐसे फालो फादर करो । "सर्व आत्माओं की मुश्किल बातों को सहज बनाने वा सूली से कांटा बनाने वाले बाप के कर्तव्य में हम मददगार हैं, हम भी सर्व की मुश्किलातों को सहज करने वाले हैं ।" — यदि यही स्मृति रहे तो कभी कोई विघ्न व कठिनाई आने पर दिलशिकस्त नहीं होंगे । क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिमान् के आगे मुश्किल बात हो नहीं सकती ।

८. बापदादा की हर एक बच्चे में यही उम्मीद वा आश है कि बच्चे मजबूर बनने के बजाय सदा मजबूत बनें । कभी ऐसे शब्द मुख से तो क्या मन में संकल्प रूप में भी न आये — कि क्या करें, मजबूर हैं । चाहे कोई व्यक्ति ने वा वायुमण्डल ने मजबूर किया, लेकिन मजबूर नहीं होना है, मजबूत बनना है । ईश्वरीय रूप से भी माया अपना साथी बनाने की कोशिश करे तो भी अपने वायदों को याद रखना । आपका वायदा है कि — एक के हैं, एक के रहेंगे, एक की ही मत पर चलेंगे । यह सदैव पक्का रखना । माया के ईश्वरीय रूप को भी परखकर मजबूत रहना, कभी मजबूर नहीं होना, तब बाप की सर्व उम्मीदों को पूरा कर सकेंगे ।

९. कोई भले कितने भी कड़े संस्कार वाला हो — उनको भी अपनी शुभचिंतक स्थिति के आधार से ट्रांसफर कर समीप लाना है । जब कोई होपलेस केस को ठीक करेंगे तब तो नाम बाला होगा । ठीक को ठीक करना वा ठीक से ठीक होकर चलना — यह कोई बड़ी बात नहीं है । बड़ी बात है अपनी श्रेष्ठ स्मृति वा वृत्ति से होपलेस में भी होप पैदा कर देना । जैसे होम्योपैथिक दवाई की छोटी-छोटी गोलियां कितने बड़े रोग को खत्म कर सकती हैं । तो क्या आप मास्टर सर्वशक्तिमान् अपनी वृत्ति और दृष्टि से किसके कड़े संस्कार के रोग को खत्म नहीं कर सकते हो ?

१०. कैसी भी समस्याएँ आयें, कैसी भी बातें न बनने वाली बन जाएं — तो भी स्थिति अचल, अडोल, एकरस रहे । कभी भी जीवन से निराश नहीं होना । यह संकल्प न आये कि — हमको तो पता ही नहीं था, ऐसा भी होता

है क्या? यह नई बात हुई, इसलिए फेल हो गया — यह नहीं कहना। माया नये-नये रूप से परीक्षा लेने के लिए आयेगी। आप उसे दूर से ही पहचान कर खत्म कर दो। जो भी देखते वा सुनते हो उसमें अकल्याण का रूप होते हुए भी मास्टर नॉलेजफुल वा त्रिकालदर्शी बन अपने कल्याण की बात निकाल लो। भले रूप अकल्याण का, हार का वा ग्लानि का हो लेकिन उसमें भी हिम्मत-उल्लास की युक्ति निकालो। कभी निराश होकर किनारा नहीं करो।

११. कभी भी कोई भी पेपर को देखकर जरा भी घबराओ नहीं — क्या होगा? जो होगा अच्छा होगा क्योंकि पेपर कोई सारे जीवन का नहीं होता, पेपर एक या दो घण्टे का होता है। अगर पेपर देने के समय बापदादा सदा साथ है, एक बल एक भरोसा है, तो ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है, स्वप्न की जो बातें होती हैं वह उठने के बाद समाप्त हो जाती हैं। तो भले पेपर का रूप बड़ा दिखाई दे लेकिन है कुछ नहीं। निराश होने के बजाय इसी निश्चय में रहो कि हमारे मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ है, हमारी हार हो ही नहीं सकती। माया-प्रूफ की ड्रेस पहनकर रहो।

१२. जैसे स्विच ऑन करने से सेकण्ड में अंधकार भाग जाता है। ऐसे ही जब कोई होपलेस बनाने वाली बात अंधकार के रूप में, दुःख-अशान्ति, उलझन, उदासी या टेन्शन के रूप में सामने आये, तो सिर्फ एक 'बाबा' शब्द याद करो। यह ऐसा जादू मंत्र है जो एक सेकण्ड में कैसी भी बात सहज पार कर लेंगे। सिर्फ इस मन्त्र को विधिपूर्वक कार्य में लगाओ। ब्रह्मा बाप सदा इसी मन्त्र में स्थित रहने के कारण आशावादी रहे। तो फालो फादर करो। बाबा कहो और खुशी का खज़ाना प्राप्त करो। यह सहज साधन सदा यूज़ करो।

१३. कैसा भी दुःख की लहर उत्पन्न करने वाला, नीरस वातावरण हो, ऐसे वातावरण को भी सदा खुशी की झलक से परिवर्तन कर दो। जैसे सूर्य अंधकार को परिवर्तन कर देता है। अंधकार के बीच रोशनी करना, अशान्ति के अन्दर शान्ति लाना, निराश आत्माओं में आशा के दीप जगाना, नीरस

वातावरण में खुशी की झलक लाना — यही है बाप समान कर्तव्य। अब इसी सेवा की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान समय दुःखी-अशान्त आत्मायें, शक्तिहीन आत्मायें जिन्दा होते हुए भी नाउम्मीदी की चिता पर बैठी हुई हैं। ऐसी आत्माओं को मरजीवा बनाओ। नये जीवन का दान दो। इसके लिए स्वयं को सदा सम्पन्नमूर्त अनुभव करो।

१४. जैसे सागर में जिन्हें नहाने का तरीका आता है वे उसमें नहाने का सुख लेते हैं, लहर आती है और जम्प करके पार कर लेते हैं, डूब नहीं जाते। तो संसार सागर में अनेक प्रकार की लहरें आयेंगी, लेकिन लहरों में लहाराणा है, डूबना नहीं है। लहर को ऐसे क्रास करो जैसे खेल कर रहे हैं। सागर के बच्चे डूब नहीं सकते। किसी भी प्रकार के दुःख की लहर आ जाये लेकिन बाप द्वारा जो मन्मनाभव का महामन्त्र मिला है, इस मन्त्र से उस लहर को समाप्त कर सुख के सागर बाप समान बन जाओ। जरा भी दुःख का अनुभव न हो। भले तन बीमार हो जाए, धन नीचे-ऊपर हो जाए, कुछ भी हो जाए लेकिन दुःख वा निराशा की लहर अन्दर नहीं आनी चाहिए।

१५. ब्राह्मण जीवन बाप से मिलन मनाने की, चढ़ती कला की, सर्व खज़ानों वा अनुभवों से सम्पन्न हीरे तुल्य जीवन है। सारे कल्प में ऐसे सम्पत्तिवान-भाग्यवान दिन, भाग्यविधाता के संग के दिन फिर आने वाले नहीं हैं। इसलिए सदा हिम्मत और उल्लास वाली समर्थ आत्मा बनो। दिलशिकस्त होने के बजाय सदा दिलखुश बनो और सबको दिलखुश बनाओ। इसमें कभी भी व्यर्थ संकल्पों के तूफान पैदा कर होपलेस वा अधीर नहीं बनो। यदि छोटे-छोटे तूफानों में, भाव-स्वभाव की बातों में जीवन रो निराश हो जाते हो तो महाविनाश के महान् तूफान में कैसे उतर सकेंगे। इसलिए अब कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकण्ड लाभ उठाओ।

स्थापक की स्मृति के साथ-साथ पालनहार

१. जैसे ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को अलौकिक जन्म देने के साथ-साथ ऐसी पालना दी है जो आप सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलता है — “मेरा बाबा”। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मा के प्रति भी हर एक की यही भावना हो, महसूसता हो जिससे वे समझें कि यह मेरे शुभचिन्तक सेवा के साथी हैं। यह है बेहद की पालना। हर एक से मेरेपन की भासना आये। इसको कहा जाता है बाप समान। जो भी सम्पर्क में आये उसे पहले रिलेशन की अनुभूति कराओ, फिर कनेक्शन सहज हो जायेगा। हमारे हमको मिल गये — ऐसी लहर चारों ओर फैल जाये।

२. मास्टर रचयिता बनना तो सबको आता है। नामधारी जो महान् आत्मायें हैं वे भी रचना तो बहुत रच लेते हैं, प्रेम भी देते हैं लेकिन पालना नहीं दे सकते। इसलिए फालोअर्स बन जाते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण जिनके निमित्त बनते हो उनकी ऐसी पालना कर बड़ा करो जो वे प्रेम और पालना द्वारा अविनाशी वरसों के अधिकारी बन जायें। जगतमाता बन ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे सदा अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न, हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें। अब ऐसी पालना की आवश्यकता है। परिवार का अर्थ ही है प्रेम और पालना की अनुभूति कराना।

३. सर्व की पालना करने के लिए अपना जगत-माता वा ज्ञान-गंगा वा महादानी, वरदानी रूप सामने लाओ। वरदानी रूप में जगत-पिता का भी रूप आ जाता है। अपने इस स्वरूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को अगर आप दृष्टि देंगे तो दृष्टि और वृत्ति से भी उनको वरदान की प्राप्ति करा सकते हो अर्थात् पालना कर सकते हो। लेकिन इस रूप की सदा स्मृति रहे। ब्राह्मण कथा वा ज्ञान सुना कर स्थापना तो बहुत जल्दी कर लेते हैं, लेकिन पालना के लिए विशेष अटेन्शन चाहिए। कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रखकर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा को उपकारी बना सकते हो।

४. जैसे माँ कभी बच्चे की कमजोरियों को वा कमियों को नहीं देखती

है। उसको उसे ठीक करने का ही रहता है। माँ में दो विशेष शक्तियाँ सहन करने की और समाने की होती हैं। वैसे ही हर आत्मा की पालना करने के समय भी यह दोनों शक्तियाँ यूज़ करो तो सफलता जरूर होगी। लेकिन अपने को जगत-माता वा जगत-पिता के रूप में स्थित रह करेंगे तो। अगर भाई-बहन का रूप देखेंगे तो उसमें संकल्प आ सकता है। लेकिन स्वयं को माँ-बाप के समान समझो। माँ-बाप बच्चे का कितना सहन करते हैं, अन्दर समाते हैं, तब उसकी पालना कर उसको योग्य बना सकते हैं।

५. यह ब्राह्मण जीवन परमात्म-आशीर्वाद की पालना से वृद्धि को प्राप्त होने वाली जीवन है। भोलानाथ बाप खुले दिल से सर्व आशीर्वाद की झोलियां भरकर बच्चों को देते हैं। लेकिन यह सर्व आशीर्वादि लेने का आधार याद और सेवा का बैलेन्स है। इन दोनों बातों का बैलेन्स सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्व ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लैसिंग लेने का पात्र बनाता है। इस संगमयुग पर ब्राह्मण जीवन में परमात्म-आशीर्वादि और ब्राह्मणों की आशीर्वादि प्राप्त करना ही सर्व प्राप्तियों का आधार है। जिन्हें दिल से सर्व की आशीर्वादि मिलती हैं वही महान् वा शक्तिशाली बन जाते हैं।

६. रोज़ अमृतवेले बापदादा स्नेह और शक्ति की विशेष पालना से सभी बच्चों से मिलन मनाते हैं। किसी बच्चे ने दिल से एक बार ‘मेरा बाबा’ कहा तो बापदादा ऐसे बच्चे को एक बार के रिटर्न में पद्मगुणा उसी रूहानी प्यार से देखते हैं कि यह मेरा बच्चा विशेष आत्मा है। यही रूहानी मेरेपन की स्मृति ऐसे बच्चों के लिए समर्थी भरने की आशीर्वाद बन जाती है। बापदादा को मुख से आशीर्वाद देने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि शब्द, वाणी सेकण्ड नम्बर है लेकिन स्नेह का संकल्प शक्तिशाली भी है और नम्बरवन प्राप्ति कराने वाला भी है। यही रूहानी पालना की विधि है। तो अपने रूहानी भाई-बहनों की इस विधि से पालना करो।

७. जैसे लौकिक में माँ-बाप अपने सिक्कीलधे स्नेही बच्चे की गुप्त ही गुप्त बहुत शक्तिशाली चीज़ों से पालना करते हैं, जिसको आप लोग खातिरी कहते हो। तो बापदादा वतन में सभी बच्चों की विशेष खातिरी करते हैं। जैसे मधुबन में आते हो तो विशेष खातिरी होती है, ऐसे बापदादा भी वतन

पल रहे हो । कोई भी चिंता वा फ़िक्र नहीं है । न कल का फ़िक्र है, न काल का फ़िक्र है । ऐसे जो भी आत्मायें आपके सम्पर्क में आती हैं या जिनके भी आप निमित्त बनते हो, उन्हें सच्चे रूहानी प्यार की पालना का अनुभव कराओ । हर आत्मा प्रति सदा स्नेह की दृष्टि, स्नेह की वृत्ति, स्नेहमयी कृति द्वारा स्नेही सृष्टि बनाओ । मास्टर स्नेह-स्वरूप बन रूहानी स्नेह सबको देते चलो । यही सच्ची पालना है ।

११. जैसे बापदादा के स्नेह की दुआयें हर ब्राह्मण आत्मा की पालना करते हुए उन्हें आगे बढ़ा रही हैं । जहाँ दुआयें होती हैं वहाँ हर बात में प्रगति बहुत सहज और तीव्र होती है । यदि कभी मेहनत वा मुशिकल का अनुभव होता है, तो जरूर संकल्प, बोल, कर्म वा सेवा में श्रीमत की लकीर से बाहर निकल जाते हो । इसलिए सदा श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो । अपनी जीवन को सदा सन्तुष्ट और खुशनुमः बनाओ तो आपका हर क़दम सेवा के निमित्त बन जायेगा । वाणी द्वारा तो सेवा करते हो लेकिन जो भी सम्पर्क में आये वह आपकी चलन और चेहरा देखकर दिल से 'वाह-वाह' के गीत गाये । ऐसे दुआयें लेते वा सर्व को दुआयें देते चलो, यही है रूहानी पालना करना ।

१२. सर्व ब्राह्मण आत्माओं को परमात्म-पालना सदा मिलती रहती है । पालना की जाती है शक्तिशाली बनाने के लिए । माता की पालना का प्रत्यक्ष रूप बच्चा शक्तिशाली बन जाता है । तो ब्रह्मा मां की पालना द्वारा आप बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान् बने हो । वे तो सिर्फ़ कहते हैं — परमात्मा पालनहार है, जन्मदाता है, लेकिन उन्हें जन्म-दाता का परिचय ही नहीं है । और आप बच्चे नशे से कहते हो कि — "हमारा जन्मदाता परमात्मा है । हमें ब्रह्मा मां की पालना मिल रही है । हम बाप की श्रेष्ठ मत पर योग्य आत्मा बन गये ।" तो अब प्राप्त हुई शक्तियों को अर्थात् पालना को कार्य में लगाओ । ऐसी रूहानी पालना सर्व आत्माओं को देकर उन्हें शक्तिशाली बनाओ ।

१३. जैसे किसी में नये दैवी संस्कारों की रचना के लिए ज्ञानमूर्त बनते हो, ऐसे पालना के लिए रहमदिल और स्नेह की मूर्त बनो, उनके पुराने संस्कारों का नाश करने के लिए शक्ति-स्वरूप बनो वा रूहाब को धारण करो । लेकिन

में हर बच्चे को फरिश्ते आकारी रूप में आह्वान कर सम्मुख बुलाते हैं और आकारी रूप में अपने संकल्प द्वारा सूक्ष्म सर्व शक्तियों का विशेष बल भरने की खातिरी करते हैं । यह है मात-पिता के स्नेह की पालना के रूप में विशेष खातिरी । ब्रह्मा माँ की बच्चों में रूहानी ममता है । तो बच्चों को सूक्ष्म स्नेह के आह्वान से वतन में इमर्ज कर विशेष शक्तियों की खुराक खिलाते हैं । तो ऐसी रूहानी पालना द्वारा स्वयं भी शक्तिशाली बनो और दूसरों को भी बनाओ ।

८. जैसे आप बच्चों ने साकार वा आकार रूप में विशेष पालना ली है, अब वैसी ही पालना सभी की करनी है । प्यार और शान्ति — इन दो बातों द्वारा सबकी पालना करो । वर्तमान समय सबको प्यार और शान्ति — इन दो चीज़ों की आवश्यकता है । सिर्फ प्यार से दृष्टि दो और दो शब्द बोलो तो स्वतः समीप आ जायेंगे । टॉपिक पर भाषण भले नहीं करो लेकिन सबसे टॉप की चीज़ है — प्यार और शान्ति की अनुभूति कराना । तो जो भी आपके सम्पर्क में आये वह अनुभव करे कि ऐसा प्यार तो हमको कभी नहीं मिला, कभी देखा ही नहीं । जिन बच्चों की रग-रग में बाप की पालना समाई हुई है उनके द्वारा वह पालना स्वतः दिखाई देगी ।

९. जैसे धूप अथवा बरसात से बचने के लिए छत्रछाया के नीचे चले जाते हैं । ऐसे बापदादा तो सदा बच्चों के लिए छत्रछाया रूप में हैं ही, लेकिन आप भी सभी के लिए मास्टर छत्रछाया का स्वरूप हो । जिन्हें अलौकिक जन्म देने के निमित्त बने हो, उन्हें ऐसी पालना दो जो वे आपकी छत्रछाया के नीचे सेपनी का अनुभव करें । आपके पास आते ही उन्हें हर प्राब्लम का हल मिल जाए । सेवा समझकर निमित्त बन उमंग-उत्साह बढ़ाने का विधिपूर्वक सहारा दो, जिससे उनका झुकाव आपकी ओर न हो, बाबा की ओर हो । सहारे-दाता बनकर नहीं, निमित्त समझकर सहारा दो । यही पालना की विधि है ।

१०. जैसे आप बच्चों के परिवर्तन का विशेष आधार मात-पिता का परिवार का सच्चा रूहानी प्यार है । ज्ञान पीछे समझते हो लेकिन पालना आकर्षण सच्चा निःस्वार्थ पारिवारिक प्यार है । यही अलौकिक पालना की विधि वा फाउन्डेशन है । आप ब्राह्मण सदा परमात्म-प्यार की पालना में ही

यदि रूहाब ज्यादा है और रहम कम है तो पालना में इतना मददगार नहीं बन सकते । इसलिए रचना के लिए नॉलेजफुल बनो, पालना के लिए रहमदिल बनो और पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए शक्तिस्वरूप बनो । जब तीनों गुणों की समानता होगी तब कहेंगे बाप समान । ऐसे बच्चों के सम्मुख कभी कोई भी परेशान-दुःखी आत्मा, चिंता में डूबी हुई आत्मा आते ही महसूस करेगी कि हम सेफ्टी वा शान्ति के स्थान पर पहुंच गये हैं । तो अब यह पालना का कर्तव्य बढ़ाओ ।

१४. जैसे साकार द्वारा अनुभवीमूर्त बनाने की सेवा होती रहती है, ऐसे अभी आप लोगों के समीप जो आत्मायें आती हैं उन्हें भी अनुभवीमूर्त बनाओ । चेक करो जिन आत्माओं के प्रति निमित्त बने हुए हैं वह आत्मायें स्वमान की स्थिति के अनुभवी हैं ? अगर नहीं, तो उन्हें बनाओ । निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं को सदा यह ध्यान रखना है कि मेरे सम्पर्क में जो आत्मायें समीप आती हैं, समय देती हैं, सहयोगी बनती हैं — ऐसी आत्माओं को अब मात-पिता द्वारा तो पालना नहीं मिल सकती, इसलिए मुझ निमित्त बनी हुई अनुभवी मूर्ति द्वारा यह पालना मिले । स्वयं में जो अनुभवों की रसना भरी हुई है उसी रसना से औरों की भी पालना करो ।

१५. जैसे कोई साहूकार होता है तो अपने नज़दीक सम्बन्धियों को मदद देकर ऊंचा उठा लेता है, ऐसे वर्तमान समय जो भी कमजोर आत्मायें आपके सम्पर्क वा सम्बन्ध में हैं उन्हीं को विशेष सकाश दो, उनकी पालना करो । जैसे साकार बाप को भी देखा — कोई भी कमजोरी की लहर देखते थे तो दिन-रात सकाश देने की विशेष सर्विस करते थे वा प्लैन्स चलते थे, निर्बल आत्माओं को बल भरने का विशेष अटेंशन रहता था, जिससे अनेक आत्माओं को अनुभव भी होता था । तो अभी सकाश देने की सर्विस करो । 'लाइट-हाउस माइट-हाउस' बनकर चारों ओर लाइट-माइट का प्रभाव फैलाओ, जिससे कमजोरी की लहर खत्म हो जाए । अभी इसी पालना की आवश्यकता है ।

सदा देह में रहते हुए विदेही वा अशरीरी स्थिति का अभ्यास

१. सर्व का स्नेही बनने के लिए देह में रहते विदेही बनने का अभ्यास करो । जैसे बाप विदेही होने के कारण सर्व के स्नेही हैं, ऐसे देह में रहते विदेही रहो । विदेही बनने के अभ्यास से सब कमजोरियां प्रायः लोप हो जायेंगी । जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है, इसी रीति शरीर के भान में आना और शरीर के भान से निकलना सहज हो । अभी-अभी शरीर रूपी वस्त्र को धारण किया, अभी-अभी उतारा । यही मुख्य पुरुषार्थ करो तो मुख्य रत्नों में आ जायेंगे ।

२. एक सेकण्ड में निराकार और एक सेकण्ड में साकार — अब ऐसी ड्रिल सीखनी है । अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी साकारी — जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार होगा । जो आवाज़ में आते भी आवाज़ से परे रहने का अभ्यास करते हैं वही आवाज़ में आते भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकते हैं और दूसरों को भी उस अवस्था में ला सकते हैं । यही है विदेही स्थिति का अभ्यास, जिससे कर्मातीत स्थिति की समीपता का अनुभव होता है ।

३. इस आकृति (देह) के अन्दर जो आकर्षण रूप आत्मा है उसको देखने का अभ्यास करो । स्वयं की वा दूसरों की आकृति को देखते हुए भी न देखो । जितना-जितना व्यक्त-भान से अर्थात् देह की स्मृति से परे विदेही रहने का अभ्यास करेंगे उतना वाह्यात अर्थात् व्यर्थ संकल्प वा कर्म से छूटते जायेंगे । यह देह-भान वा व्यक्त भाव जो चुम्बक की तरह खींचता है, इसकी आकर्षण से बचने के लिए संयम को बीच में रखो । स्वयं, संयम और सर्वशक्तिवान् बाप की स्मृति सहज ही विदेही अर्थात् अशरीरी बना देगी और देह की आकर्षण समाप्त हो जायेगी ।

४. कोई भी चित्र (शरीर) को देखते हो तो चित्र के अन्दर जो चैतन्य है उसे देखो और उस चित्र के जो चरित्र हैं उन चरित्रों को देखो । चेतन और चरित्र

को देखेंगे तो चरित्र तरफ ध्यान जाने से चित्र अर्थात् देह के भान से दूर हो जायेंगे। सिर्फ एक बाप के ही चरित्र नहीं हैं, लेकिन जो बाप के साथ मददगार हैं उनकी भी हर एक चलन चरित्र है। तो चरित्र और चैतन्य वा विचित्र को देखने से देह की आकर्षण, जो ना चाहते हुए भी खींच लेती है, वो दूर हो जायेगी और सहज ही विदेही अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होगा।

५. जैसे बापदादा हर एक के मस्तक के बीच चमकती हुई मणि को देखते हैं, ऐसे ही आप भी सभी के मस्तक की मणि को ही देखते रहो तो सहज ही विदेही स्थिति में स्थित हो जायेंगे। मन को यह ड्रिल कराओ कि जब जैसी स्थिति चाहें बना लें। एक सेकण्ड में आवाज़ में, एक सेकण्ड में आवाज़ से परे। एक सेकण्ड में सर्विस के संकल्प आयें और एक सेकण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में अथवा अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाएं। वर्तमान समय इसी ड्रिल की विशेष आवश्यकता है। इसी ड्रिल के अभ्यास से सर्व परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे। जब बुद्धि बहुत बिजी हो उस समय यह ड्रिल करने का अभ्यास करो।

६. देह में रहते सम्पूर्णता का अनुभव करने के लिए याद रखो कि मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है। बिन्दु की याद से एकरस स्थिति सहज बन जायेगी। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। यही सम्पूर्णता को प्राप्त करने का सहज मार्ग है। जो यह अलौकिक ड्रिल जानते हैं और रोज़ करते हैं वही सदा तन्दुरुस्त अर्थात् माया की व्याधि से मुक्त रहते हैं। जैसे स्थूल शरीर के हाथ-पांव डायरेक्शन प्रमाण चलाते हो, ऐसे एक सेकण्ड में साकारी से निराकारी वा देह से विदेही बनने की प्रैक्टिस करो।

७. जैसे कोई शरीर के वस्त्र सहज ही उतार देते हो, वैसे ही यह शरीर रूपी वस्त्र उतारने के लिए बार-बार अशरीरी बनने का अभ्यास करो। यदि देह का चोला सहज नहीं उतरता है तो इसका कारण है — कोई न कोई संस्कारों के कारण यह देह रूपी वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग वा टाइट है। जब सभी संस्कारों से न्यारे हो जायेंगे तो फिर न्यारी अर्थात् विदेही अवस्था भी सहज हो जायेगी। सभी बातों में इज़्ज़ी रहो। इज़्ज़ी रहने से सब कार्य इज़्ज़ी होते जायेंगे

और अशरीरी अवस्था का अनुभव भी इज़्ज़ी हो जायेगा।

८. किसी कर्तव्य वा कार्य से न्यारा होना तो सहज है, लेकिन देह से न्यारे अर्थात् विदेही होने का भी विशेष अभ्यास चाहिए। जितना देह से न्यारे आत्मिक-स्वरूप में स्थित होंगे, उतना दुनिया को प्यारे लगेंगे। तो सिर्फ दुनिया की बातों से ही न्यारा नहीं बनना है, पहले तो अपने शरीर से न्यारा बनना है। बहुत समय से न्यारे रहने वाले अन्त में एक सेकण्ड में न्यारे हो जायेंगे। जैसे साकार बाप को प्रैक्टिकल में देखा — एक सेकण्ड के बुलावे पर एवररेडी बनकर दिखाया। एलान निकला और एवररेडी। ऐसे फालो फादर करो। यदि बहुत समय से अशरीरी वा विदेही बनने का अभ्यास नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा।

९. वैसे तो एक सेकण्ड में अशरीरी होना बहुत सहज है, लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के बहुत झंझट सामने हों, कैसी भी परिस्थितियां वा विघ्न सामने हों — उस समय भी सोचा और अशरीरी हुए, एक सेकण्ड भी न लगे। सोचना और करना साथ-साथ चले। सोचने के बाद पुरुषार्थ न करना पड़े। यह भी बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। जब बहुत समय से अशरीरी रहने का अभ्यास होगा तब अन्त में एक सेकण्ड में बैठे-बैठे अशरीरी हो जायेंगे। वह मृत्यु भी सर्विस करेगी।

१०. जितना-जितना देह में रहते विदेही वा अशरीरी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास होता जायेगा, उतना नयनों के इशारे से किसके मन के भाव को जान जायेंगे, कोई से बोलने वा सुनने की आवश्यकता नहीं होगी। जैसे बापदादा के पास आते हो तो बिना सुनाये हुए भी आप सभी के मन के संकल्प, मन के भावों को जान लेते हैं। तो यही अन्तिम कोर्स अब पढ़ना है। जैसे इस दुनिया में मुख द्वारा वर्णन करने से एक-दो के भाव को जान लेते हैं। ऐसे मन के भावों को जानने के लिए बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। किसी भी प्रकार का विघ्न बुद्धि को सताता न हो। अशरीरी स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास हो।

११. जैसे शरीर को छोड़ना और शरीर को लेना यह — अनुभव सभी को है, वैसे ही जब चाहे तब शरीर का भान बिल्कुल छोड़कर अशरीरी बन जाना

और जब चाहे तब शरीर का आधार लेकर कर्म करना — यह भी अनुभव हो । इसी अनुभव को अब बढ़ाना है । ऐसे अनुभव हो जैसे यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली मैं आत्मा अलग हूँ । सिर्फ सर्विस के निमित्त शरीर का आधार लिया हुआ है, लेकिन सर्विस समाप्त होते ही स्वयं को एकदम हल्का कर दो । जैसे ड्यूटी से वापस आने पर घर की ड्रेस पहन लेते हो, ऐसे सर्विस प्रति इस शरीर रूपी वस्त्र का आधार लो और सर्विस समाप्त हो तो इस वस्त्र के बोझ से हल्के अर्थात् न्यारे हो जाओ ।

१२. जैसे साकार रूप में बाप के लिए समझते हो कि यह लोन लेकर आये हैं, दूसरे शरीर में प्रवेश होकर यह कर्म कर रहे हैं । ऐसे यह अनुभव बाप के समान करना है । अनुभव हो जैसे सचमुच यह शरीर लोन लिया हुआ है, कर्तव्य के लिए मेहमान हैं । मेहमान समझने से चलन वा बोल से उपराम स्थिति का अनुभव होगा । तो शरीर में होते इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है । देह और देही बिल्कुल अलग-अलग महसूस हो । यही याद के यात्रा की सम्पूर्ण स्टेज वा योग की प्रैक्टिकल सिद्धि है । इसी स्टेज को कर्मातीत अवस्था वा देह के बंधन से मुक्त अशरीरी अवस्था कहते हैं । कर्म करने वाला अलग, कर्म अलग है — यह अनुभव बढ़ाते जाओ ।

१३. जैसे स्थूल शरीर द्वारा कहीं भी आना वा जाना सहज अनुभव होता है, वैसे ही इस शरीर की स्मृति से बुद्धि द्वारा परे जाना और आना भी सहज अनुभव हो । जब चाहें शरीर का आधार लें और जब चाहें शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाएं । यही अभ्यास वा अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है । इसके लिए पुराने स्वभाव और लगाव को चेक करके समाप्त करो । यदि संकल्प रूप में, सम्पर्क वा सम्बन्ध के रूप में, अपनी कोई विशेषता में भी लगाव होगा तो अशरीरी बनने नहीं देगा ।

१४. जैसे विदेही बाप देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं । ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मिक-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बनकर के कर्म कराओ । यह देह करनहार है और आप देही करावनहार हो । इसी स्थिति को विदेही

स्थिति कहते हैं । यह फालो फादर करना है । सदा फालो फादर करने के लिए अपनी बुद्धि को दो स्थितियों में स्थित रखो — बाप को फालो करने के लिए 'सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव' और दादा अर्थात् ब्रह्मा बाप को फालो करने के लिए अव्यक्त 'स्थिति भव, फरिश्ता भव', आकारी स्थिति भव । इससे नीचे व्यक्त भाव, देहभान में नहीं आओ ।

१५. जैसे साकार बाप को देखा कि बात करते-करते भी सेकण्ड में अशरीरी हो जाते थे । अभी-अभी यहाँ हैं, अभी-अभी नहीं हैं । अभी-अभी स्थूल डायरेक्शन दे रहे हैं और अभी-अभी अशरीरी स्थिति का अनुभव करा रहे हैं । यह है समेटने की शक्ति का प्रत्यक्ष स्वरूप । इसमें कोई भी कार्य मिस नहीं होता । आप बात सुना रहे हो तो बात मिस नहीं करेंगे लेकिन गति इतनी तीव्र है जो दोनों ही काम एक मिनट में कर सकते हैं — सार भी कैच कर लेंगे और विदेही स्थिति का अनुभव भी कर लेंगे । लेकिन इसके लिए सिर्फ विस्तार को समेटने अथवा उपराम रहने की आवश्यकता है ।

सदा एवररेडी, आलराउन्डर

१. जैसे ब्रह्मा बाप सदा एवररेडी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न रहे — ऐसे फालो फादर करो । वर्तमान समय एवररेडी ग्रुप की आवश्यकता है । एवररेडी रहने वालों की निशानी — एक तो विजय माला है और दूसरा वे साक्षी एवं साथीपन के कवचधारी होंगे । सर्व शक्तियाँ ऐसे एवररेडी का हर समय ऑर्डर मानने वाली सिपाही व साथी रहेंगी । ऑर्डर किया और हर शक्ति 'जी हज़ूर' करेगी । अभी-अभी ऑर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रूहानी वा दिव्य बनाओ जिसमें देह-अभिमान का जरा भी अंशमात्र न हो, तो ऐसा बनने में एक सेकण्ड के बजाय दो सेकण्ड भी न लगे, तब कहेंगे एवररेडी ।

२. सदा आलराउन्डर और एवररेडी रहने वाले ही सच्चे रूहानी सेवाधारी हैं । आलराउन्डर अर्थात् स्वयं में किसी भी शक्ति की कमी न हो । सदा सम्पन्न हों । सर्व कर्तव्य, सर्वगुण और सर्व सम्बन्धों में सम्पन्न बनना — यह है आलराउन्डर का कर्तव्य । जैसे आलमाइटी अर्थात् सर्वशक्तिमान् कहा जाता, ऐसे आलराउन्डर अर्थात् जिसमें सर्व विशेषतायें हो । सब में श्रेष्ठ और सम्पन्न हों । जब सर्व कमियां निकल जायेंगी तो फिर हर बात से सभी को कमाल देखने में आयेगी । इसलिए अब अपनी मन्सा-वाचा-कर्मणा को कमाल योग्य बनाओ अर्थात् आलराउन्डर और एवररेडी बनो ।

३. एवररेडी अर्थात् कैसी भी परिस्थिति वा परीक्षा में श्रीमत प्रमाण जिस स्थिति में स्थित होना चाहें, ऑर्डर पर एवररेडी हों । संकल्प भी श्रीमत प्रमाण चलें । श्रीमत मिले — एक सेकण्ड में साक्षी अवस्था में स्थित हो जाओ, तो उस साक्षी अवस्था में स्थित होने में समय न लगे । ऑर्डर हुआ और स्थित हुए । एक सेकण्ड में स्थित होने वाले पुरुषार्थी को ही तीव्र पुरुषार्थी वा एवररेडी कहा जाता है । हर कर्मेन्द्रिय को जब चाहें, जैसे चाहें, जहाँ चाहें वहाँ लगा लें और जब न लगाना हो तो कंट्रोल कर लें । अपनी बुद्धि को जहाँ चाहे जितना समय चाहें, उतना समय उस स्थिति में स्थित कर लें, तब कहेंगे एवररेडी ।

४. संगठन रूप से एकरस स्थिति बनाने में एवररेडी बनो । ऑर्डर हो कि एक सेकण्ड में सभी एकरस स्थिति में स्थित हो जाओ । वह एक सेकण्ड सदाकाल का सेकण्ड होता है । ऐसे नहीं कि एक सेकण्ड स्थित हो फिर नीचे आ जाओ । तो संगठन रूप में एकरस स्थिति का प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार कराओ, तब बापदादा की प्रत्यक्षता समीप आयेगी । तो हर एक ब्राह्मण पर स्वयं के साथ-साथ सारे संगठन को एकरस स्थिति में स्थित कराने में सहयोगी बनने की रेसपान्सिबिलिटी है । इसी विशेषता में जब एवररेडी बनो तब प्रत्यक्षता होगी ।

५. कोई भी तैयारी समय के पहले की जाती है, न कि उस समय । एवररेडी अर्थात् सर्व शस्त्रधारी । कोई भी शक्ति की कमी वा कमजोरी होगी तो माया उसी कमजोरी की विधि द्वारा वार करेगी । इसलिए इसमें अलबेले नहीं बनना । ऐसे नहीं — और सब तो ठीक है, सिर्फ एक बात में कमजोरी है । लेकिन एक कमजोरी माया के वार का रास्ता बन जायेगी । क्योंकि जहाँ कमजोरी है वहाँ माया व्याप्त है । इसलिए सर्वशक्तिमान् शिक्षक के श्रेष्ठ शिक्षाधारी बनो, समय रूपी शिक्षक के शिक्षाधारी नहीं । सर्वशक्तिमान् शिक्षक की शिक्षा से एवररेडी नहीं बनेंगे तो समय पर धोखा खा लेंगे ।

६. ब्रह्मा बाप का बच्चों से विशेष प्यार है, इसलिए ब्रह्मा बाप सदा बच्चों को अपने समान एवररेडी बंधनमुक्त देखने चाहते हैं । अन्त में बंधनमुक्त का ही नज़ारा देखा ना । कितने में एवररेडी हो गये ? किसी का भी बंधन बांध नहीं सका, कोई भी याद नहीं आया । तो एवररेडी का पार्ट, कर्मातीत स्टेज का पार्ट देखा ना । किनारा करना देख लिया ना । तो सम्पूर्ण बनना अर्थात् किनारा छोड़ना और एक अविनाशी बाप को सहारा बना लेना । किसी भी व्यक्ति, वैभव या वस्तु को सहारा नहीं बनाओ । इसी को कहा जाता है एवररेडी, कर्मातीत ।

७. एवररेडी बच्चे सदा अन्तिम समय का आह्वान करते स्वयं को तैयार रखते हैं, माया को चैलेंज करते हैं । एवररेडी अर्थात् सदा अन्तिम समय के लिए अपने को सर्वगुण सम्पन्न बनाने वाला । सम्पन्न स्टेज ऐसी हो जो सिर्फ एक क़दम उठाने की देरी हो । ऐसा एवररेडी, बाप समान बनने के लिए तीन

प्राप्तियां सदा अपने साथ रखें — (१) लाइट, (२) माइट और (३) डिवाइन इन्साइट । तीनों चीज़ें अगर साथ हैं, यथार्थ रीति प्राप्त की है और उसी आधार पर चलते हैं तो कभी भी कोई रांग कर्म वा असत्य कर्म नहीं कर सकते, सदा राइट तरफ ही जायेंगे, रांग हो ही नहीं सकता ।

८. अपने को सदैव ऐसा एवरेडी रखना है जो कभी भी अन्त का समय आ जाए । तो इंतज़ार को खत्म करके इंतज़ाम रखना । सिर्फ सर्विस में एवरेडी नहीं लेकिन पुरुषार्थ में भी एवरेडी, संस्कारों को समीप करने में भी एवरेडी बनना है । इसके लिए संकल्पों को एक सेकण्ड में बंद करना है । जैसे मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है, ऐसे आपका यह संकल्पों-रूपी बिस्तरा तैयार रहना चाहिए । तब कहेंगे एवरेडी । अपनी कमजोरियों को प्रायः लोप करने के लिए एवरेडी रहो ।

९. सेकण्ड के इशारे प्रमाण एकरस स्थिति में स्थित होने के लिए एवरेडी बनो । जैसे आवाज़ द्वारा रमणिकता का, सुख का अनुभव करते हो ऐसे ही आवाज़ से परे अविनाशी सुख स्वरूप रमणिक अवस्था का भी अनुभव हो । शान्त के साथ-साथ अति शान्त और अति रमणिक स्थिति का अनुभव हो । स्मृति का स्वच ऑन किया और ऐसी स्थिति पर स्थित हुए — ऐसी रूहानी लिफ्ट की गिफ्ट प्राप्त करना अर्थात् बाप समान एवरेडी बनना । समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी-स्वरूप बनो, तब विश्व-कल्याणकारी बन सकेंगे ।

१०. अब सर्व आत्माओं के गति-सद्गति करने की सीजन आने वाली है । उसके लिए एवरेडी बनो । तड़पती हुई आत्माओं को क्यू में खड़ा करने का कष्ट नहीं देना है । आते जायें और लेते जायें । तड़पती हुई आत्मायें एक सेकण्ड भी रुक नहीं सकेंगी । इसलिए पुरुषार्थी के बजाय अब दातापन की स्थिति में रहो । हर संकल्प और सेकण्ड में दाता बनकर चलो । देने में बिजी होंगे तो माया भी बिजी देख, वार करने की बजाय नमस्कार करेगी । उस समय किसी भी प्रकार के साधन नहीं मिलेंगे । इसके लिए प्रैक्टिस करो — वातावरण में अति हलचल हो लेकिन स्वयं की स्मृति और वृत्ति अचल हो । जरा भी हलचल न हो ।

११. कोई भी परिस्थिति रूपी पेपर, प्राकृतिक आपदा द्वारा आया हुआ पेपर वा कोई भी शारीरिक कर्मभोग रूपी पेपर आये, तो सभी प्रकार के पेपर्स में फुलपास वा अच्छी मार्क्स से पास होने की पहले से तैयारी करनी है । ऐसा एवरेडी रहना है जो किसी भी प्रकार के पेपर में एवरहैपी रह सको । एवरेडी की निशानी है ही एवरहैपी । जैसे समय किसी के लिए भी रुकता नहीं, चलता ही रहता है, वैसे अपने आपसे पूछो कि स्वयं भी कोई माया की रुकावट में रुकते तो नहीं हैं ? कोई भी माया के स्थूल वा सूक्ष्म विघ्न आयें वा माया का वार हो तो एक सेकण्ड में अपनी श्रेष्ठ शान में स्थित हो जाओ । फिर कोई भी परेशानी आ नहीं सकती ।

१२. जैसे युद्ध प्रारम्भ होता है तो अचानक ऑर्डर निकालते हैं — अभी-अभी घर छोड़ बाहर चले जाओ । तो निकलना पड़ता है । ऐसे बापदादा भी अचानक डायरेक्शन दें कि इस शरीर रूपी घर और इस देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीट होम में चले जाओ; तो जा सकते हो ? ऐसे एवरेडी बने हो या युद्ध करने में ही समय बिता देंगे ? अगर अशरीरी बनने में अथवा युद्ध करने में समय लग गया तो अन्तिम पेपर में कैसे पास हो सकेंगे । इसलिए सदा उपराम, एवरेडी रहो ।

१३. मुक्ति-जीवन्मुक्ति का गेट खोलने की जवाबदारी बाप के साथ-साथ आप एवरेडी ग्रुप की है । यह विनाश सर्व आत्माओं की सर्व कामनायें पूर्ण करने का निमित्त साधन है । यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा । इसलिए अब ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि सर्व आत्माओं का कल्याण हो । सर्व दुःखी, अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें — यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए । इस संकल्प से और इस स्मृति से विनाश ज्वाला भड़केगी और सर्व का कल्याण होगा । इसलिए बेहद की उपराम वृत्ति वा वैराग्य वृत्ति को धारण करने में एवरेडी बनो ।

१४. जैसे कोई कार्य अथवा दुकान आदि समेटनी शुरू करते हैं तो “सेल” लिख देते हैं, जिससे वह सामान जल्दी-जल्दी समाप्त हो जाता है । तो आप

भी जल्दी-जल्दी सबको सन्देश देते जाओ। कार्य समेटना अर्थात् स्वयं के लगाव को समेट लेना। अगर स्वयं को सर्व तरफ से समेट कर एवररेडी बनाया तो आपके एवररेडी बनने से विनाश भी रेडी हो जायेगा। अब ज्वाला रूप बन अपने एवररेडी बनने के पावरफुल संकल्प से विनाश ज्वाला को तेज करो। जैसे दुःखी आत्माओं के मन से यह आवाज़ शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो, तब समाप्ति होगी।

१५. जो सोचो उसे उसी समय करो — इसको कहा जाता है एवररेडी। मन्सा से भी एवररेडी, संस्कार-परिवर्तन में भी एवररेडी। रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। संस्कार मिटाने वा मिलाने में टाइम न लगे। जैसे वह रास करते हो, ऐसे बाप के संस्कार से संस्कार मिलाने की रास, आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने की रास करने में होशियार बनो। यही संकल्प करो कि अब संस्कारों की रास मिलाने की रास करनी है। फिर कोई भी परिस्थिति में विघ्न रूप बनने के बजाय विघ्न-विनाशक बन जायेंगे।

१६. बाप समान एवररेडी रहने वाली आत्मायें हिसाब-किताब रूपी वृक्ष को लगन की अग्नि में समाप्त कर बीजरूप स्थिति में स्थित होंगी। जो ऐसे एवररेडी होंगे उन्हें यह अलौकिक अनुभूति होगी कि मुझ आत्मा का यह शरीर वस्त्र है, मैं वस्त्र धारण करने वाली आत्मा हूँ। जब चाहें देहभान रूपी वस्त्र को धारण करें और जब चाहें न्यारे हो जाएं। वे स्वयं को साक्षात् ज्योति बिन्दु आत्मा अनुभव करेंगे। एवररेडी आत्मायें साकारी दुनिया और साकारी शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा अनुभव करेंगी कि मैं आत्मा सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में बाप के साथ रहती हूँ। अभी-अभी यहाँ और अभी-अभी वहाँ। साकारी वतन से निकल मूलवतन के कमरे में चली जायेंगी।

सत्यता की अथॉर्टी के साथ बोल में मधुरता

१. जैसे ब्रह्मा बाप को सत्यता की अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार रूप देखा। उनकी अथॉर्टी के बोल कभी भी अंहकार की भासना नहीं देते। अथॉर्टी के बोल में स्नेह समाया हुआ है, निर्माणता वा निरहंकारीपन है। इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं, तो ऐसे फालो फादर करो। क्योंकि साकारी दुनिया में साकार इग्जैम्पल वा सैम्पल ब्रह्मा बाप है। तो जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत वा हर चलन से चलता-फिरता अथॉर्टी स्वरूप देखा—ऐसे फालो फादर करने वालों में भी स्नेह और अथॉर्टी, निर्माणता और महानता दोनों साथ-साथ दिखाई दें। वर्तमान समय इन दोनों बातों के बैलेन्स को अन्दरलाइन करो।

२. परमात्म-प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है। एक स्वयं के स्थिति की सत्यता और दूसरा सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता है अर्थात् सच्चाई-सफ़ाई की कमी है, तो कर्त्तव्य की सिद्धि वा प्रत्यक्षता नहीं हो सकती। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीजिनल स्टेज नहीं है, यह संगदोष की स्टेज है। तो सत्यता नेचुरल संस्कार रूप में हो और सत्यता में मधुरता समाई हुई हो।

३. जैसे झूठी अथॉर्टी वाले असत्य बात को भी सिद्ध कर बताते हैं न सिर्फ सिद्ध करते हैं लेकिन मनवाते हैं, सत्वचन महाराज कहलवाते हैं। जब वह झूठी अथॉर्टी वाले इतना प्रभाव डाल सकते हैं, तो आप सत्यता की अथॉर्टी वाले एक-एक प्वाइंट सुनाकर सत्य बाप के तरफ सबका अटेन्शन खिचवाओ। लेकिन सत्यता के साथ-साथ स्वरूप में मधुरता वा नम्रता भी हो। निर्भय भी रहो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों। दोनों बातों का बैलेन्स हो। तो जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है। वह शब्द कड़े नहीं लगते, मीठे लगते हैं। यही है बाप की प्रत्यक्षता का साधन।

४. आप बच्चे अब सत्यता की अथॉर्टी से नये ज्ञान वा ज्ञान-दाता बाप

को प्रत्यक्ष करो, जिससे हर एक समझे कि इस सत्य ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हो रही है। 'भगवानुवाच' क्या विशेष है जो सिवाय भगवान् के कोई सुना नहीं सकता — वह स्पष्ट करो। परन्तु स्पष्ट करते समय उन्हें यह न लगे कि इन्हें अपना बहुत नशा वा अभिमान है। नम्रता और रहम की भावना अभिमान की महसूसता नहीं कराती। भले शब्द कितने भी सख्त हों लेकिन अभिमान न लगे—इसके लिए अर्थों के साथ-साथ नम्रता वा रहमभाव को धारण करो।

५. सत्यता की शक्ति वा अर्थों द्वारा असत्यता रूपी अंधकार को समाप्त करो। अज्ञान सदा असत्य होता है, ज्ञान सत्य है। सत्यता की शक्ति वाला सदा निर्भय और निश्चित होगा। सत्यता के आगे असत्य टिक नहीं सकता। सत्यता की शक्ति वाले कभी डूब नहीं सकते। सत्य की नईया डगमग का खेल कर सकती है लेकिन डूब नहीं सकती। अगर अभी तक भी किसी प्रकार का भय है, तो सत्य के साथ असत्य रहा हुआ है जो हलचल में ला रहा है। तो चेक करो — संकल्प, दृष्टि, वृत्ति, बोल और सम्बन्ध-सम्पर्क में सत्यता की शक्ति से अचल हैं?

६. सत्यता अर्थात् जो सोचे, जो करे — वही ही वर्णन करे, बनावटी रूप न हो। मन्सा-वाचा-कर्मणा — तीनों रूप में सत्यता हो। अन्दर में कोई भी विकर्म का किचरा न हो। कोई भी भाव-स्वभाव वा पुराने संस्कारों का भी किचरा न हो। जो ऐसी सफ़ाई वाला होगा, वही सच्चा होगा और जो सच्चा होता है वह सबका प्रिय होता है। उसमें भी वह सबसे पहले तो प्रभुप्रिय होगा। सच्चे पर साहेब राज़ी होता है। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। उनकी नज़र, वाणी वा कर्म में ऐसी परिपक्वता होगी जो कभी भी न खुद ही डगमग होगा, ना ही दूसरों को करेगा।

७. आत्मा का स्वरूप सत् है, सत् अर्थात् अविनाशी और सत्य। बाप को भी कहते हैं 'सत्यम-शिवम्-सुन्दरम्'। सत्य ही शिव है वा गॉड इज़ टूथ कहा जाता है। तो सत्यता की अर्थों वाली आत्मायें बोल में, कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट वा बनावट वाली नहीं होंगी। उनकी वृत्ति, दृष्टि, बोल और चलन सब सत्य होगी। उनके अन्दर बाहर समान भाव होगा। ऐसे

सत्यता की अर्थों वाले चित्त से, नैन वा चैन से सदा हर्षित होंगे। कहा जाता है — सच तो बिठो नच। सच्ची आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। कभी खुशी कम, कभी ज्यादा नहीं होगी। दिन-प्रतिदिन हर समय खुशी और बढ़ती रहेगी। उनका एक-एक बोल मधुरता के साथ अर्थों का भी अनुभव करायेगा।

८. सत्यता की अर्थों वाला सदा सभ्य होगा। जिसमें सभ्यता नहीं उसमें सत्यता नहीं। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। ऐसे नहीं — अन्दर है, बाहर देखने में नहीं आती। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, ऐसे सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान् है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वतः ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करना चाहता है, तो वह जिद्द का रूप हो जाता है। इसलिए सत्यता की अर्थों के साथ-साथ बोलने, देखने, चलने वा हर कर्म में सत्यता की सभ्यता वाले बने।

९. कभी भी कोई कार्य में अर्थों से बोलते हैं तो कहते हैं — मैं सच्चा हूँ, इसलिए अर्थों से बोलता हूँ। सत्यता की शक्ति वाला कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमजोर नहीं होगा। वह सदा खुशी में नाचता रहेगा, शक्तिशाली होगा, उसमें सामना करने की शक्ति होगी। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। तो सत्यता की शक्ति महान् शक्ति है। सत्यता कभी हिलती नहीं, अचल होती है। सत्यता की शक्ति से ही सतयुग बनता है। तो सत्यता की अर्थों वाली शक्तिशाली आत्माओं में अभिमान नहीं हो सकता। उनमें मधुरता का विशेष गुण अवश्य होगा।

१०. सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय होगा, उसे किसी का भी भय नहीं हो सकता। तो आप सब सत्यता की अर्थों वाली आत्मायें हो। आपको सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियां सब प्राप्त हैं। तो इतनी अर्थों का नशा

हो । लेकिन जितनी बड़ी अथाँटी, उतना वाणी में स्नेह और नम्रता हो । जैसे वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथाँटी आ जाती है तो वृक्ष झुकता है अर्थात् निर्मान बनकर सेवा करता है । ऐसे सत्यता की अथाँटी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथाँटी वाले होंगे उतने निर्मान और सबके स्नेही होंगे ।

११. वास्तव में रियल्टी अर्थात् सत्यता ही रॉयल्टी है । यदि अपने असली सत्य स्वरूप (आत्मिक-स्वरूप) की सदा स्मृति है । तो स्थूल सूरत से अलौकिक रॉयल्टी नज़र आयेगी । जो भी देखेंगे, उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते अथवा स्वर्ग के देवता हैं । दूसरी रीयल स्मृति है — 'एक बाप दूसरा न कोई' । इस स्मृति से हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे, हर बोल से अथाँटी और प्राप्ति की अनुभूति होगी, हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा । सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने कारण पारस का कार्य करेगा । तो ऐसी रियल्टी अर्थात् सत्यता की अथाँटी वाले बनो ।

१२. रियल्टी की रॉयल्टी अर्थात् सत्यता की अथाँटी वाली आत्मायें अपनी हर कर्मेन्द्रियों से कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले, देने वाले दाता होंगे । वे किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प द्वारा भी झुकेंगे नहीं अर्थात् प्रभावित नहीं होंगे । जैसे स्थूल में कहते हैं कि इनका पेट भरा हुआ है, ऐसे उनकी बुद्धि हर खज़ाने से भरपूर होगी । इसलिए कोई भी व्यक्ति वा वैभव के तरफ जो अल्पज्ञ और अल्पकाल के हैं, वहाँ बुद्धि नहीं जायेगी अर्थात् अप्राप्त कोई वस्तु नहीं होगी, जिसे लेने के लिए कहीं नज़र जाये । उनके नयनों में सदा बिन्दु रूप बाप ही समाया होगा । यही है रॉयल्टी अर्थात् रियल्टी । तो इस रियल्टी के आधार पर अथाँटी वाले बनो ।

१३. बापदादा के दिलतख्त-नशीन बनने का मुख्य साधन है दिल की सच्चाई । दुनिया वाले कहते हैं 'गॉड इज़ टूथ' । वे सत्य को ही भगवान् मानते हैं । बापदादा सुनाते भी सत्य नारायण की कथा हैं और स्थापना भी सतयुग की करते हैं । तो बाप जो सत् बाप, सत् टीचर, सद्गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, ऐसे सत्य बाप को सच्चाई ही प्रिय है । जहाँ सच्चाई अर्थात् सत्यता है वहाँ स्वच्छता व सफ़ाई अवश्य ही होती है । गायन भी है — सच्चे दिल

पर साहब राज़ी । तो जब हर संकल्प वा बोल में, सम्बन्ध वा सम्पर्क में सच्चाई और सफ़ाई होगी, तब दिलतख्त-नशीन बनेंगे । हर संकल्प और वचन सत्य और सफल होने वाला होगा । उसमें सत्यता की अथाँटी समाई हुई होगी ।

१४. दिलाराम बाप को सच्ची दिल वाले बच्चे ही पसन्द हैं । दुनिया का दिमाग़ भले न भी हो लेकिन सच्ची दिल हो । नम्बर भी सेवा के आधार से नहीं लेकिन सच्ची, साफ़ दिल के आधार से बनते हैं । सच्चे दिल से सेवा की वा सिर्फ़ दिमाग के आधार से की ? क्योंकि दिमाग़ वाले नाम कमाते हैं और दिल वाले दुआयें कमाते हैं । सेवा सिर्फ़ वाणी की नहीं है लेकिन हर सेकण्ड हर संकल्प में सेवा है । बीमार हों, तो भी मन्सा-सेवा, वायुमण्डल बनाने की सेवा, वायब्रेशन फैलाने की सेवा कर सकते हो । कोई भी प्रकार की सेवा करो लेकिन उसमें दिल की सच्चाई समाई हुई हो ।

१५. अब सत्यता के शक्ति की भासना दिलाने वाले भाषण करो, तब सभी धर्म वाले मिलकर एक ही आवाज़ में बोलेंगे कि बरोबर एक बाप है, एक ही ज्ञान है, एक ही लक्ष्य है, एक ही घर है । अभी यह आवाज़ निकलना चाहिए । अब ऐसा दृश्य बेहद की स्टेज पर आये तब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा । आपके पास अनुभव की अथाँटी, नॉलेज की अथाँटी, सत्यता की अथाँटी है । अब अथाँटी और स्नेह दोनों को साथ-साथ कार्य में लगाओ । अथाँटी के आधार से प्रत्यक्ष करो कि यही नया ज्ञान नई दुनिया लायेगा । अब तक जो भी सम्पर्क में आये हैं उन्हें समर्पण बुद्धि बनाओ, जिससे वह मानें कि जो बाप ने कहा है वही सत्य है । अब सत्यता और निर्भयता के आधार पर नवीनता को प्रत्यक्ष करो ।

सदा निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति का अभ्यास

१. ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर अभ्यास करो कि — निराकारी स्थिति में स्थित हो, साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ — यह स्मृति वा अभ्यास नेचुरल वा नेचर बन जाये तो निरन्तर निरहंकारी वा निर्विकारी स्थिति में स्थित हो जायेंगे। जैसे कोई कहाँ से आता है, तो उसको यह स्मृति सदा रहती है कि मैं यहाँ से आया हूँ, ऐसे यह स्मृति सदैव रहे कि मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रहा हूँ। बीच-बीच में हर कर्म करते हुए इस स्थिति का अभ्यास करते रहो। तो निराकार हो, साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी जरूर बन जायेंगे।

२. बाप समान सर्व गुणों के मास्टर सागर का अनुभव करने के लिए अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी वा निर्विकल्प चाहिए। अगर इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। प्राप्त हुए ज्ञान और शक्तियों को समय प्रमाण कार्य में लगाते जाओ। बहुत अच्छी बातें हैं, बहुत अच्छी चीज है — सिर्फ यह समझकर, बुद्धि की तिजोरी में रखकर सिर्फ सुनने और रखने का आनन्द नहीं लो लेकिन बार-बार स्वयं के प्रति और सर्व आत्माओं के प्रति कार्य में लगाते जाओ।

३. मन्सा, वाचा और कर्मणा, तीनों को ठीक करने के लिए सिर्फ तीन अक्षर याद रखने हैं — मन्सा के लिए निराकारी, वाचा के लिए निरहंकारी और कर्मणा के लिए निर्विकारी। यह तीन बातें अगर याद रखीं तो मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों ही बहुत अच्छे रहेंगे। जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे, उतना ही निरहंकारी और निर्विकारी भी रहेंगे। यही है मुख्य पुरुषार्थ। क्योंकि आगे चलकर मैं-पन वा अहंकार के रूप में बहुत विघ्न आयेंगे। मैं-पन आना — इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान और

स्नेह दो, रिगार्ड लो, समस्या-स्वरूप नहीं समाधान-स्वरूप बनो।

११७

सर्विस का अभिमान। इसे समाप्त करने के लिए सदा याद रहे कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्रचित, निरसंकल्प अवस्था में रह सकेंगे।

४. सदैव अपने को निराकारी देश के निवासी समझकर निराकारी स्थिति में स्थित रहो। साकार में रहते हुए अपने को निराकारी समझकर चलो। यही है सोल कान्सेस वा आत्म-अभिमानी स्थिति का अभ्यास। दूसरा है मन्सा में भी निर्विकारीपन की स्टेज। जब तक पूरी रीति आत्म-अभिमानी नहीं बनेंगे तब तक निर्विकारी भी नहीं बन सकते। तो निर्विकारीपन और निराकारीपन का निशाना सदा स्मृति में रहे — यही है कर्मातीत वा फरिश्ता स्थिति। फरिश्ता तब बनेंगे जब कोई भी इमप्योरिटी और ५ तत्वों की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी। इसलिए जरा भी मन्सा संकल्प भी इम्योर अर्थात् अपवित्रता का न हो।

५. साक्षात्कारमूर्त बन वारिस वा प्रजा तैयार करने के लिए निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ करो। जरा भी विकारों का अंश न हो। तेरा-मेरा, मान-शान — यह भी विकार हैं। अब संकल्प से भी विकारों के अंश को समाप्त करो, तब यह तीनों स्टेज बन सकेंगी। फिर अपने प्रभाव से जो भी वारिस वा प्रजा निकलनी होगी वह फटाफट निकलेगी। इसके लिए मन्सा-वाचा-कर्मणा में यह तीनों स्टेज प्रत्यक्ष दिखाई दें। शरीर में होते निराकारी आत्मिक रूप दिखाई दे। जैसे साकार में देखा — बुजुर्ग थे लेकिन फिर भी शरीर के बजाय रूह ही दिखाई देते थे। व्यक्त गायब हो अव्यक्त दिखाई देते थे। साकार में निराकार स्थिति होने कारण निराकार वा आकार दिखाई देते थे। तो यही अवस्था प्रैक्टिकल बनाओ। बार-बार देही-अभिमानी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो।

६. जैसे अपना साकार स्वरूप सदा और स्वतः याद रहता है, उसका अभ्यास नहीं करते हो बल्कि और ही उसको भुलाने का अभ्यास करते हो। ऐसे ही अपना निजी निराकारी स्वरूप वा वरदानि स्वरूप भी सदा स्मृति में रहे। अपवित्रता वा विस्मृति का नामोनिशान भी न रहे। अपवित्र संस्कार मेरे नहीं, यह शूद्रों के संस्कार हैं — ऐसा अनुभव हो। शूद्रपन के संस्कारों को मेरा

समझने से माया के वश हो जाते हो। तो इस छोटी-सी भूल को चेक कर निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी बनो। 'पवित्र भव और योगी भव' के पहले पाठ को प्रैक्टिकल में लाओ, तब ही बाप समान बन सकेंगे।

७. निराकारी स्थिति नेचुरल और नेचर तब बनेगी जब निरहंकारी बनेंगे। अहंकार वा अभिमान अनेक प्रकार का है। कई बच्चे मोटे रूप से देह के आकार में लगाव वा अभिमान नहीं रखते, परन्तु अपने विशेष संस्कार हैं, बुद्धि विशेष है, गुण विशेष हैं, कोई कलायें विशेष हैं, कोई शक्ति विशेष है — उसका अभिमान अर्थात् अहंकार वा नशा, रोब यह भी सूक्ष्म देह-अभिमान है। यह अभिमान आकारी फरिश्ता वा निराकारी स्थिति का अनुभव नहीं करा सकता। तो चेक करो कि किसी भी प्रकार का अभिमान वा अहंकार अंश रूप में भी रहा हुआ तो नहीं है? यदि अंश मात्र भी है तो समय पर धोखा दे देगा। इसलिए लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ, तब बाप समान बनेंगे।

८. आपकी ओरीजिनल अनादि स्टेज निराकारी है। निराकार आत्मा ने इस शरीर में प्रवेश किया है। अहंकार आने का दरवाजा एक शब्द है — 'मैं'। तो जब यह 'मैं' शब्द आता है तो ओरीजिनल स्वरूप सामने लाओ — मैं कौन? 'मैं' शब्द ही उड़ाने वाला भी है तो 'मैं' शब्द ही नीचे ले आने वाला है। 'मैं' कहने से ओरीजिनल निराकार स्वरूप याद आ जाए। तो निराकारी वा निरहंकारी बनने की सहज विधि है कि जब भी मैं शब्द यूज करो तो फौरन अपना निराकारी ओरीजिनल स्वरूप सामने आये। यह निरहंकारी बनने का सहज साधन अपनाकर देखो तो देहभान का मैं-पन समाप्त हो जायेगा। मैं निराकारी आत्मा हूँ — यह स्मृति ही देहभान से परे ले जायेगी।

९. निर्मानता सहज ही निरहंकारी बना देती है। निर्मानता का बीज महानता का फल स्वतः प्राप्त कराता है। निरहंकारी बनने की विशेष निशानी है निर्मानता। वृत्ति, दृष्टि, वाणी और सम्बन्ध-सम्पर्क — चारों में निर्मानता हो। अगर तीन में है, एक में नहीं, तो भी अहंकार आने की मार्जिन है। इसलिए निर्मानता का गुण धारण कर निरहंकारी और निराकारी बनो, तब अपनी शुद्ध वृत्ति द्वारा रूहानी वायब्रेशन फैलाने की सेवा कर सकेंगे। किसी के प्रति भी

अगर व्यर्थ वायब्रेशन धारण किया हुआ है तो रूहानी वायब्रेशन नहीं फैला सकते। तो मन और बुद्धि को व्यर्थ से बिल्कुल फ्री करो।

१०. जैसे साकार में रहना नेचुरल हो गया है, ऐसे ही मैं निराकारी श्रेष्ठ आत्मा हूँ और आकारी फरिश्ता हूँ — यह दोनों ही स्मृतियाँ नेचुरल हों। बाप और दादा निराकारी और आकारी हैं, और आपका दोनों से प्यार है तो समान बनना पड़े। इसके लिए अभ्यास करो कि अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। साकार में आते भी जब चाहें आकारी और निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ। यह तब होगा जब सारा दिन मन और बुद्धि को उसी आकारी और निराकारी स्थिति में स्थित करने का अभ्यास करेंगे। इसी अभ्यास से निरहंकारी वा निर्विकारी बन जायेंगे।

११. निराकारी स्थिति में स्थित होने के लिए पहले अपनी देह की स्मृति से न्यारा बनो। जितना देह की स्मृति से न्यारे होंगे उतना बाप के और सर्व के प्यारे होंगे। क्योंकि न्यारा अर्थात् आत्म-अभिमानि। आत्मा रूप में किसको भी देखेंगे तो रूहानी प्यार पैदा होगा और देह भान से देखेंगे तो व्यक्त भाव होने के कारण अनेक भाव उत्पन्न होंगे — कभी अच्छा होगा, कभी बुरा होगा। लेकिन आत्मिक-भाव में, आत्मिक दृष्टि-वृत्ति में रहने से प्यारे बनेंगे और यह रूहानी प्यार अहंकार को समाप्त कर देगा। फिर कोई भी पुराना स्वभाव संस्कार भी अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा अर्थात् निर्विकारी स्थिति का भी अनुभव होगा। सिर्फ इसके लिए चलते-फिरते बीच-बीच में यह अभ्यास पक्का करो कि मैं हूँ ही आत्मा-अशरीरी।

१२. निराकारी और निर्विकारी स्थिति में स्थित होने से ही निर्वाण स्थिति का अनुभव होता है। यही निर्विकल्प स्थिति भी है। साकार में रहते निराकार स्थिति स्मृति में रहे — इसको कहते हैं निराकार सो साकार द्वारा वाणी वा कर्म में आना। असली स्वरूप निराकार है, साकार आधार है। यह आधार लेते भी निराकार स्वरूप को भूलो नहीं। जब एक बार परिचय मिल गया, स्मृति आ गई कि मैं निराकार आत्मा हूँ, तो नॉलेज की शक्ति से स्वरूप को जान लिया। जैसे शरीर का भान भुलाते भी भूलता नहीं, ऐसे यह आत्मिक-स्वरूप भूल कैसे सकता। चलते-फिरते कार्य करते सिर्फ चेक करो — निराकार सो

साकार आधार से यह कार्य कर रहा हूँ? तो स्वतः ही निराकारी, निर्विकारी वा निर्विघ्न स्थिति बन जायेगी । मेहनत से छूट जायेंगे ।

१३. अब अपने निराकारी घर जाना है । तो जहाँ जाना होता है वहाँ का वेष बनाना होता है और वैसा ही पुरुषार्थ करना होता है । तो जब यह स्मृति रहेगी कि निराकारी दुनिया में जाना है । तो इस स्मृति से स्वतः सर्व सम्बन्ध, सर्व प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे । साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी वा बाप समान बन जायेंगे । (सर्व को ज्वाला रूप दिखाई देंगे ।) इसलिए आपकी लास्ट स्टेज है — सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत, निराकारी वा निर्विकारी स्टेज । अब ऐसी स्टेज संगठन रूप में बनाओ तब विनाश के नज़ारे और साथ-साथ नई दुनिया के नज़ारे स्पष्ट दिखाई देंगे ।

१४. वरदाता बाप द्वारा सर्व बच्चों को 'अशरीरी भव, निराकारी भव, निरहंकारी और निर्विकारी भव' का वरदान प्राप्त हो चुका है । अब इस वरदान को साकार रूप में भ्लाओ अर्थात् स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त और साक्षात्कारमूर्त बनाओ । जो भी सामने आये उसे मस्तक द्वारा मस्तकमणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें । अब इस विधि से ईश्वरीय सेवा को सम्पन्न करो अर्थात् स्वयं को बाप समान बनाओ । अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रखो । अपवित्रता वा विस्मृति का नाम-निशान न रहे ।

१५. आप बच्चों को निराकार स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान है — 'निराकारी कर्मातीत भव' और साकार स्वरूप का विशेष वरदान है — 'साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव' । तो अब इन वरदानों को सदा स्मृति में रख सफलतामूर्त बनो । 'बालक सो मालिक हूँ' — इस स्मृति से निरहंकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव करो । बालक अर्थात् बच्चा बनना माना सदा के लिए माया से बचना । तो माया से बचे रहो अर्थात् 'हम बच्चे हैं' — इस स्मृति में रहो । साकार द्वारा लास्ट में यही महावाक्य उच्चारण हुए कि 'निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी भव' । यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वतः आ जायेंगी ।